सितारों से आगे

यह आज से पचास वर्ष आगे की कहानी है, जब ऐटम बमों और राकेटों की लड़ाई से संसार की आधी से अधिक जनसंख्या समाप्त हो चुकी थी। पृथ्वी की धुरी बदल गई थी। पृथ्वी का धरातल नीचा हो गया था और समुद्र का धरातल ऊपर हो गया था ; जिससे समुद्र का जल पृथ्वी पर चढ़ आया था और पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग समुद्र में डूब गया था। इन दिनों इंसानी आबादी पहाड़ी स्थानों में रहने लगी थी। अब वर्ष में केवल दो ऋतुएं होती थीं—ग्रीष्म-ऋतु और शरद्-ऋतु। ग्रीष्म-ऋतु नौ मास की होती थी और शरद्-ऋतु तीन मास की। और गर्मी भी इतनी तेज़ होती थी, और इस ज़ोर की लू चलती थी कि स्कूल वर्ष में नौ माह बन्द रहते थे और केवल तीन माह के लिए खुलते थे। इसलिए हर स्कूल के लिए परीक्षा हर चार वर्ष बाद होती थी। लड़के चालीस वर्ष की अवस्था में मैट्रिक करते थे और छप्पन वर्ष की आयु में बी०ए० की डिग्री पाते थे। पृथ्वी आज ही की तरह सूर्य के चारों ओर घूमती थी, परन्तु अब एक दिन के बजाय तीन दिन में चक्कर लगाती थी। दिन आज से तिगुने लम्बे और रातें भी तिगुनी लम्बी हो गई थीं। अत्यधिक गर्मी के कारण मनुष्य और पशु दिन को सोते थे और रात को जागते थे। केवल उल्लू और चमगादड़, दो ऐसे जानवर थे जो अब दिन को काम करते थे

और रात को सोते थे। सख्त गर्मी से सारे संसार के लोगों का रंग काला हो गया था और सफेद मनुष्य और सफेद हाथी कहीं ढूंढ़ने से नहीं मिलता था। हां, यह जरूर है कि पुरानी पुस्तकों में कहीं-कहीं सफेद मनुष्य का वर्णन था, जिससे मालूम होता था कि इस रंग का मनुष्य भी एक समय में इस संसार में पाया जाता था।

उन दिनों पाकिस्तान की राजधानी एबटाबाद हो गई थी और भारत की अलमोड़ा और रेडियो सीलोन की आवाज़ कहीं सुनाई न देती थी, क्योंकि सीलोन का पूरा द्वीप पानी में डूब चुका था। लंका के लोग देश छोड़कर केरल और कुर्ग की पहाड़ियों में आबाद हो गए थे और अब सिंहाली भाषा के बोलने का अधिकार मांगते थे।

यही दशा ब्रिटेन के द्वीप की हुई। केवल स्काटलैण्ड के कुछ ऊंचे पर्वतों में कुछ हज़ार अंग्रेज़ जीवित थे और बड़ी कठिनाई से भेड़ें चराकर अपना पेट पालते थे। जापान भी पानी में डूब गया था। केवल फ्यूजी पर्वत यामा के चारों ओर कुछ सौ जापानी पाए जाते थे। कश्मीर का विषय बड़ी खूबी से हल हो गया था। अब कश्मीर में हब्शी नारियल के वृक्षों की खेती करते थे और स्विटजरलैंड में अरब खजूरें उगाते थे और तेल के चश्मे, जिनके कारण अन्तिम ऐटमी युद्ध लड़ा गया था, समुद्र के नीचे थे। अब सारे संसार की जनसंख्या दो अरब से घटकर डेढ़ करोड़ हो गई थी और अब सारी दुनिया की एक भाषा थी—पहाड़ी! और सारे संसार के लोग एक राग गाते थे—पहाड़ी!! और इन सब लोगों की एक ही जाति थी—पहाड़ी!!!

भारत और पाकिस्तान का अधिकतर भाग अब न था। केवल उन्हीं स्थानों पर इंसानी आबादी थी जहां पहाड़ थे और पृथ्वी का धरातल समुद्र से ऊंचा था। इस प्रकार बम्बई जल में डूबी हुई थी और कराची का कहीं पता न चलता था। यह ज़रूर था कि जब कहीं-कहीं मछलियां पकड़ने वाले मछुए इन स्थानों पर जाल डालते तो मछलियों के बजाय ऐसी लम्बी और सुन्दर मोहरें उनके हाथ में आतीं, जिनसे पता चलता था कि कभी यहां मंत्री रहते थे। जहां पर अब लाहौर है वहां पर व्हेल मछली पाई जाती थी और कराची में अमरीकी शार्क मछली भी बहुतायत से मिलती थी। दिल्ली की लम्बी-चौड़ी झील में बड़े भयंकर हज़ार-पाये घूमते थे और लखनऊ की खाड़ी में मछलियां मीठे सुर में शेर पढ़ती हुई तैरती थीं। बेचारी बनारस और अलीगढ़ की यूनिवर्सिटियां अपनी खास सभ्यता तथा संस्कृति को गले से लगाए समुद्र के नीचे—मीलों नीचे डूबी हुई थीं। उर्दू उन्नति सभा के घर में एक मगरमच्छ रहता था और अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन समुद्री सांपों के रहने का स्थान था। और अब सबके ऊपर समुद्र हंसता था। यद्यपि संसार की जनसंख्या छंटते-छंटते डेढ़ करोड़ हो चुकी थी, पर लड़ाई अभी तक हो रही थी। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर ऐटमी किलेबन्दियां थीं, जहां से हज़ारों मील तक मार करने वाले राकेट बम फेंके जाते थे। दुनिया दो भागों में बंट चुकी थी। एक भाग वाले कहते थे, 'मैं लूंगा', दूसरा गिरोह कहता था, 'मैं नहीं दूंगा', तीसरे गिरोह में केवल एक मनुष्य था, उसका यह विश्वास था, 'मैं जीऊंगा'; परन्तु लोग उसकी बात नहीं सुनते थे

और अपनी लड़ाई लड़े जाते थे।

यह तीसरा मनुष्य एक वृद्ध प्रोफेसर था और अपने युग का प्रसिद्ध वैज्ञानिक था, परन्तु अपने विश्वास के कारण यूनिवर्सिटी से निकाल दिया गया था। अब वह हिमालय के पहाड़ों में कंचनचंगा की चोटी पर सबसे अलग खामोश जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके चार बच्चे थे। सबसे बड़े पुत्र की आयु सत्रह वर्ष की थी, उसका नाम उर्फी था। उससे छोटी चोदह वर्ष की लड़की थी जिसका नाम था नाज़। उससे छोटी बारह वर्ष की एक लड़की थी जो बहुत प्यारी और शैतान थी, उसका नाम था मोहिनी। सबसे छोटे लड़के की आयु आठ वर्ष की थी और उसका नाम था जुम्मी। परन्तु जुम्मी कोई साधारण लड़का न था। वह दूसरे बच्चों की तरह मांस और हड्डी का बना हुआ न था। वह तो लोहे का लड़का था और उसकी आयु इसलिए आठ वर्ष की थी कि उसे प्रोफेसर ने बड़े परिश्रम से लोहे के टुकड़े जोड़-जोड़कर आठ साल में बनाया था।

जुम्मी के हाथ, पांव, आंख, नाक, कान यहां तक कि बाल तक थे, परन्तु वे सबके सब लोहे के बने हुए थे। उसका दिल एक था, परन्तु दिमाग दो थे। अगर एक दिमाग काम न करे तो दूसरा चालू हो जाए। इस प्रकार इसके दो मेदे थे। एक मेदे में हमेशा भोजन भरा रहता था। क्योंकि जुम्मी सारे का सारा लोहे का बना हुआ था, इसलिए इसे भूख बहुत लगती थी। जुम्मी बिजली की सहायता से चलता था, परन्तु बिलकुल दूसरे बच्चों की तरह चलता था, हंसता था, खेलता था, गीत गाता था और स्कूल जाता था और स्कूल के बच्चों की तरह मास्टर

से मार भी खाता था, मगर इस मार का उसपर कोई असर न होता था, क्योंकि वह लोहे का बना हुआ था। इसलिए स्कूल के लड़के तो क्या, बड़े-बड़े आदमी उससे लड़ते हुए डरते थे, क्योंकि जुम्मी लोहे का बना हुआ था। जुम्मी बड़ा ढीठ था, क्योंकि उसपर सर्दी-गर्मी का कोई असर न होता था। प्रोफेसर ने जुम्मी के दिमाग में बिजली का एक छोटा-सा डाईनुमो फिट कर दिया था। यह डाईनुमो सौ साल तक चलेगा। इस कारण से जुम्मी की आयु कम से कम सौ साल की होगी।

सौ साल के बाद फिर नया डाईनुमो और जुम्मी फिर सौ साल के लिए तैयार! जुम्मी पर किसी रोग का भी असर नहीं हो सकता था। उसपर जुकाम, खांसी, मलेरिया, इंफ्लूऐंज़ा, हैज़ा किसी रोग का असर न हो सकता था, क्योंकि जुम्मी लोहे का लड़का था। जुम्मी की आंखों में टेलीविज़न की पुतलियां थीं और वह उनकी सहायता से कई सौ मील तक देख सकता था। उसके कानों में राडर था, जिससे वह कई हज़ार मील तक सुन सकता था। प्रोफेसर जुम्मी को बहुत चाहता था और यद्यपि जुम्मी की आयु केवल आठ वर्ष की थी, परन्तु उन आठ वर्षों में प्रोफेसर ने उसके दो दिमागों में विज्ञान, गणित, साहित्य, कवित्व, दर्शनशास्त्र, समाज और सभ्यता का इतना ज्ञान भर दिया था कि इतनी कम उम्र में ही वह बड़े से बड़े प्रोफेसर को पढ़ा सकता था और इतना बलवान था कि बड़े से बड़े पहलवान को गिरा सकता था। इतने अच्छे दिल का था कि हरएक से प्यार करता था। प्रोफेसर ने जुम्मी का हृदय इतना सुन्दर और इतना अच्छा

बनाया था कि उसमें अच्छे विचारों के सिवा और कोई विचार समाता ही न था। जुम्मी एक बहुत ही अच्छा लोहे का लड़का था। प्रोफेसर ने कंचनचंगा पहाड़ की चोटी पर अपने घर से दो मील दूर एक लेबोरेटरी बना रखी थी, जहां पर वह दिन-रात काम करता था। वर्षों से वह एक ऐसा जहाज़ बनाने में लगा हुआ था जो उड़कर चांद तक पहुंच सके, जिसमें वह अपने बच्चों-सहित उड़कर चांद तक पहुंच सके। यह जहाज़ अब करीब-करीब बन चुका था। इसपर दिन-रात काम होता था और अब प्राफेसर के लड़के-लड़कियां स्कूल से पढ़ाई समाप्त कर घर आते तो वे लोग भी लेबोरेटरी में पहुंच जाते और अपने पिता की सहायता करते। मोहिनी बहुत ऊधमी थी। वह अक्सर अपने पिता से पूछती—

"पापा, चांद में जाकर क्या करोगे?"

"हां पापा," नाज़ बोलती, "चांद में तो कुछ भी नहीं है।"

"हमारी साइंस की किताबों में लिखा है कि चांद में हवा और पानी भी नहीं है। दिन-रात रेत के बबूले उड़ते हैं और बड़े-बड़े ज्वालामुखी पहाड़ों के मुंह खामोश खड़े हैं। ऐसी भयानक जगह जाकर हम क्या करेंगे?"

प्रोफेसर समझाते हुए कहता, "बेटी, हमारी दूरबीनों से पृथ्वी के रहने वालों को चांद का केवल एक भाग नजर आता है। पृथ्वी और चांद के चक्कर लगाने का यह हिसाब है कि हमेशा वही भाग नज़र आता है जो उजड़ा हुआ और बंजर है। जहां न हवा है न पानी, न पेड़ हैं न जानवर; लेकिन चांद का वह भाग जो हमारी दूरबीन की आंखों से ओझल है, उसमें क्या

है—यह आज तक किसीको मालूम न हो सका। बेटी, मैं चांद की दूसरी तरफ देखना चाहता हूं।"

"वहां क्या होगा ?"

"अभी क्या बता सकता हूं !" प्रोफेसर ने उत्तर दिया, "हां ! जो चीजें वहां ढूंढ़ने जा रहा हूं, वे अगर मुझे मिल गईं तो फिर मुझसे बड़ा भाग्यवान मनुष्य कोई न होगा।"

"वह क्या चीज़ है पापा ?" मोहिनी प्रोफेसर की दाढ़ी से खेलते हुए पूछती।

प्रोफेसर कहता, "जब यह जहाज़ तैयार हो जाएगा तो फिर बताऊंगा।"

"यह जहाज़ कब तैयार होगा ?" मोहिनी ने फिर पूछा।

प्रोफेसर ने जुम्मी से पूछा, "तुम बताओ बेटे।"

जुम्मी ने एकदम उत्तर दिया, "अभी इसमें दस दिन का काम बाकी है। जब यह जहाज़ तैयार हो जाएगा तो इसकी लम्बाई साठ मीटर होगी, चौड़ाई छः मीटर, वज़न एक हज़ार टन। इसमें चार राकेट-पम्प होंगे जो पारे की भाप से चलेंगे।"

"शाबाश !" प्रोफेसर ने जुम्मी की पीठ ठोंकते हुए अपने सबसे बड़े लड़के उर्फी से कहा, "देखा तुमने ; मेरा सबसे छोटा बेटा तुम सबसे होशियार है।"

उर्फी ने झेंपकर कहा, "लोहे का दिमाग जो पाया है।"

मोहिनी ने जीभ निकालकर जुम्मी को चिढ़ाते हुए कहा, "जू ! जू ! जू ! बड़े आए लायक कहीं के।"

जुम्मी क्रोध में आकर मोहिनी के पीछे भागा तो प्रोफेसर ने रोककर कहा, "अपनी बहिन से लड़ेगा ?"

जुम्मी रुआंसा होकर बोला, "तो फिर यह मुझे छेड़ती क्यों है ? अगर मैं इन सबसे ज्यादा लायक हूं, तो इसमें मेरा क्या दोष है ?"

"अच्छा जाओ, जाओ !" प्रोफेसर ने सब बच्चों को लेबोरेटरी से बाहर निकालते हुए कहा, "जाओ ! मुझे काम करने दो।"

नवें दिन जहाज़ बिलकुल तैयार हो गया। बहुत सुन्दर तीर की तरह नोकीला और चमकता हुआ। रात को प्रोफेसर ने अपने बच्चों की सहायता से उसके इंजन चलाकर देखे। सब मशीनरी की जांच की। बच्चे हर तरह से सहायता कर रहे थे, क्योंकि वे भी आखिर एक वैज्ञानिक के बच्चे थे। प्रोफेसर ने इन्हें हर तरह से विज्ञान के भिन्न-भिन्न विभागों में योग्य बनाने का प्रयत्न किया था। उर्फी सबसे बड़ा लड़का था और हर बात में अपने पिता का हाथ बंटाता था, परन्तु जहां कोई कठिनाई आ पड़ती थी तो जुम्मी ही सबकी सहायता को आता था, क्योंकि उसका मस्तिष्क लोहे का था और बिजली की सहायता से चलता था और इतना तेज़ चलता था कि जो बात किसी दूसरे को दस घंटे बाद सूझती, उसे एक मिनट में सूझ जाती थी। रात को सब काम समाप्त कर, मशीनरी फिट करके खाने का सामान जहाज़ में रखकर कोई बारह बजे के लगभग घर लौटे। प्रोग्राम यह था कि सुबह सवेरे जहाज़ में बैठ लिया जाए, क्योंकि यह पहला जहाज़ था जो हमारी पृथ्वी से उड़कर चांद को जा रहा था। इसलिए बच्चे एक नई दुनिया को देखने की कल्पना में मग्न और प्रसन्न थे। प्रोफेसर भी बहुत प्रसन्न दिखाई देता था। वह इस संसार

का पहला मनुष्य था जो उड़कर चांद में जा रहा था, परन्तु रात को जब प्रोफेसर अपने बच्चों के साथ घर पहुंचा, तो क्या देखता है कि पुलिस उसके दरवाज़े पर खड़ी है। वे लोग उसे गिरफ्तार करने आए थे। क्योंकि सारी दुनिया में वही एक व्यक्ति था जो न 'मैं लूंगा' फिलसफे में विश्वास रखता था, न 'मैं नहीं दूंगा' वालों में से था।

"अच्छा तो तुम 'मैं जीऊंगा' वाली बातों में विश्वास रखते हो?" पुलिस वालों ने उससे पूछा।

"जी हां।"

"और आज तक तुमने किसी तरफ से भी लड़ाई में भाग नहीं लिया?"

"नहीं।"

"तुम बहुत भयानक आदमी मालूम होते हो। गवर्नमेंट तुम्हें गिरफ्तार करके माउंट एवरेस्ट जेल में भेज रही है, जहां तुम आजन्म नज़रबन्द रहोगे।"

"और मेरे छोटे-छोटे बच्चे?"

"गवर्नमेंट किसी तरह किसीके लिए उत्तरदायी नहीं है। हां! और सुना गया है कि तुम चांद में उड़कर जाने की कोशिश कर रहे हो। यह हरकत भी कानून के खिलाफ है। हमारी गवर्नमेंट के वैज्ञानिक सुबह आएंगे और तुम्हारी लेबोरेटरी को नष्ट कर देंगे। लो, यह हथकड़ी पहन लो।"

प्रोफेसर ने कहा, "अगर आप आज्ञा दें तो मैं दस मिनट में अपने बच्चों से विदा हो लूं।"

"ज़रूर, ज़रूर!" पुलिस इंस्पेक्टर बोला।

प्रोफेसर अपने बच्चों को जुम्मी-सहित एक अलग कमरे में ले गया और उनसे कहने लगा, "जिस बात का मुझे डर था, वही बात आखिर को होके रही। मेरा वर्षों का परिश्रम बेकार जा रहा है। वे लोग मुझे गिरफ्तार करके मेरे जहाज़ को नष्ट कर देंगे। इस पृथ्वी पर मनुष्य के जीवित रहने की अंतिम आशा भी मिट जाएगी।"

"वह कैसे पापा?" उर्फी ने बहुत गम्भीर होकर पूछा।

प्रोफेसर ने अपने बड़े बेटे के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "बेटा, मैं तुमसे उम्र में बहुत बड़ा हूं। मैंने वह समय देखा है जब मनुष्य इस संसार के हर कोने में बसा हुआ था। जहां आज समुद्र है, वहां शहर बसे थे। गांव फूलों की तरह खिले थे। वहां पर बाग थे और खेत और कारखाने। मगर इंसानों ने लड़-लड़कर अपने-आपको तबाह कर लिया है। अब इस पृथ्वी के केवल पहाड़ी भाग समुद्र की सतह से ऊपर हैं। अगर हमारी ऐटमी और राकेटी लड़ाइयां इसी तरह होती रहीं तो पृथ्वी की धुरी और बदलेगी। पृथ्वी का धरातल और नीचे होगा और अगले पांच वर्षों में माउंट एवरेस्ट की चोटी भी पानी में डूब जाएगी। फिर कोई मनुष्य जीवित न रहेगा।"

उर्फी ने कहा, "मगर हम तो बच्चे हैं पापा। हम क्या कर सकते हैं?"

प्रोफेसर बोला, "बच्चे बहुत कुछ कर सकते हैं। जब बड़ों के दिल में सौदा समा जाए तो बच्चे ही अपनी उदारता से और निरीह अक्ल से सही रास्ते पर ला सकते हैं।"

"वह कैसे?" नाज़ बोली।

प्रोफेसर ने कहा, "तुम्हें मालूम है, मैं चांद में क्यों जा रहा था ? अब तक वह भेद मैंने किसीको नहीं बताया है। आज मैं तुम्हें बता रहा हूं। मेरे बच्चो ! एक समय यह दुनिया ऐसी न थी, लोग इस तरह नहीं लड़ते-झगड़ते थे। अपने-अपने घरों में, गांवों में, कस्बों में बड़े आराम से और चैन से रहते थे। उस काल में हमारी दुनिया में एक चिड़िया रहती थी जो हर समय शान्ति और चैन के गीत गाती थी। केवल एक ही ऐसी चिड़िया थी हमारी दुनिया में। परन्तु वह हमारे झगड़ों से तंग आकर चांद की दुनिया में चली गई है और जब से वह गई है, ये लड़ाई-झगड़े बराबर हो रहे हैं और एक मिनट के लिए भी बंद नहीं हुए। जब तक यह चिड़िया इस दुनिया में वापस न आएगी, यह दुनिया इसी तरह तबाह होती रहेगी।"

"तो पापा, क्या तुम उसी चिड़िया को लाने के लिए चांद जा रहे थे ?" मोहिनी ने पूछा।

"हां बेटी।"

"उस चिड़िया की पहचान क्या है ?" नाज़ ने पूछा।

प्रोफेसर ने कहा, "वह एक सफेद रंग की कबूतरी है और उसके सिर पर कमल के फूलों का ताज है और···" प्रोफेसर अभी इतना ही कह पाया था कि अचानक पुलिस वालों ने अन्दर आकर कहा, "चलो, चलो ! बहुत समय हो गया। ऐसे तो तुम ज़िन्दगी-भर अपने बच्चों से विदा न होंगे।"

पुलिस वाले वृद्ध प्रोफेसर को गिरफ्तार करके ले गए। सब बच्चे रोने लगे। जुम्मी को भी रोना आ गया। वह इतना बलवान था कि अगर चाहता तो सब पुलिस वालों को मारकर

प्रोफेसर को छुड़ा सकता था। मगर प्रोफेसर ने उसे मना कर दिया था इसलिए जुम्मी चुपचाप अपने स्थान पर खड़ा रोता रहा और पुलिस वाले प्रोफेसर को बन्दी करके ले गए। जब पुलिस वाले चले गए तो उर्फी ने सोच-सोचके दूसरे बच्चों से कहा, "क्या राय है? हम लोग चांद में चलें और चलकर उस चिड़िया को ले आएं।"

"हम बच्चे चांद में जाएंगे? पापा के बगैर?..." मोहिनी ने डरकर पूछा, "न भैया! मैं तो न जाऊंगी।"

नाज़ बोली, "मैं तो चलूंगी तुम्हारे साथ।"

जुम्मी बोला, "मैं भी चलूंगा।"

मोहिनी बोली, "मगर हम लोग इतना बड़ा जहाज़ कैसे चलाएंगे?"

उर्फी बोला, "मैं जुम्मी की मदद से चला लूंगा। क्यों जुम्मी?"

"ठीक है।" जुम्मी बोला, "अभी चलो। सुबह को जहाज़ नष्ट करने वाले आ जाएंगे।"

चारों बच्चे रात के अंधेरे में छिपते-छिपते लेबोरेटरी के बाहर खड़े हुए और राकेट जहाज़ के पास पहुंचे। राकेट जहाज़ छः सौ फीट ऊंचे जीने से लगा, तीर की तरह आकाश की ओर मुंह किए खड़ा था। बिजली की लिफ्ट में कुछ ही मिनटों में वे लोग जहाज़ के अन्दर पहुंचे। उर्फी ने कप्तान का काम संभाल लिया। नाज़ टेलीविज़न और राडार की मशीनों पर बैठ गई। मोहिनी को रसोइये का काम सौंपा गया क्योंकि वह बहुत शैतान थी और उसे कुछ आता ही नहीं था। उर्फी ने हेडफोन लगाके पूछा—

"रीएक्टर रैडी ?"

"रैडी।" जुम्मी बोला।

"इलेक्ट्रोनिक्स रैडी ?"

नाज़ ने उत्तर दिया, "रैडी।"

शैतान मोहिनी अपने-आप ही बोल उठी, "सैंडविच भी रैडी।"

उर्फी ने उसे डांट दिया, फिर बोला, "इलेक्ट्रोनिक्स टु फ्लाई।"

"शिप मास्टर टु फ्लाई।"

"रैडी ? जुम्मी ! स्टार्ट फर्स्ट पम्प।"

जुम्मी ने हैंडल घुमाके पहला पम्प खोला। आग की लपटों और भाप के तूफान में राकेट जहाज़ ज़ीने से अलग होकर आकाश की ओर उड़ने लगा।

सैकंड पंप स्टार्ट।

थर्ड पंप स्टार्ट !!

फोर्थ पंप स्टार्ट !!!

चौथे पंप के खोलने तक राकेट जहाज़ पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से आज़ाद हो चुका था और ऊपर के खुले स्थान में उड़ रहा था। यहां से पृथ्वी एक छोटी-सी गेंद थी। आकाश का रंग काला था और दूर-दूर तक वातावरण में सितारे जलते हुए हंडोलों की तरह झूल रहे थे और बच्चों का जहाज़ चांद की ओर उड़ा जा रहा था।

बच्चों का जहाज़ तीस हज़ार मील प्रति घण्टे की तेज़ी से उड़ा जा रहा था। यहां पर पृथ्वी की आकर्षण शक्ति न थी,

परन्तु जहाज़ की जिस केबिन में बच्चे बैठे थे, वह एक गोले की तरह अपनी कीली पर खुद ही घूमती थी। इससे जहाज़ में नकली आकर्षण शक्ति पैदा हो गई थी और जहाज़ के अंदर बैठे हुए बच्चे यही महसूस कर रहे थे जैसे वे पृथ्वी पर अपने घर में बैठे हों। उनका वज़न भी वही था जो पृथ्वी पर होता है। इसलिए वे जहाज़ के अंदर चुंबक लोहे के जूतों की सहायता के बिना चल-फिर सकते थे। यद्यपि इससे पहले के जहाज़ों में यह बड़ी कठिनाई थी कि जैसे ही पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से स्वतन्त्र होते, तो जहाज़ चलाने वालों का वज़न एकदम कम हो जाता था और वे वातावरण में उड़ने लगते थे और जहाज़ के अंदर एक मशीन से दूसरी मशीन तक जाने के लिए उन्हें लोह चुंबक जूते पहनने पड़ते थे।

रास्ते में बच्चों ने बहुत-से ऐसे जहाज़ देखे जो चांद तक पहुंच न पाए थे कि बिगड़ गए और अब वातावरण में चक्कर लगा रहे थे।

पृथ्वी जो पहले एक गोल गेंद की तरह दिखाई दे रही थी, अब और भी छोटी दिखाई दे रही थी। अचानक जुम्मी ने चिल्लाके उर्फी से कहा, "जहाज़ की दिशा ३८ डिगरी पूर्व दिशा को कर दो।"

उर्फी ने पूछा, "क्यों ?"

"पूर्व से एक दुमदार सितारा आ रहा है। कहीं टक्कर न हो जाए।"

"मुझे तो कहीं दिखाई नहीं देता।" उर्फी बोला।

जुम्मी ने चिढ़कर कहा, "तुम्हें कैसे नज़र आएगा। राडार

बता रहा है, जल्दी करो।"

शैतान मोहिनी ताली बजाकर बोली, "नहीं भैया, रहने दो। मैं दुमदार सितारा देखूंगी। क्या इसकी दुम बहुत लम्बी होती है जुम्मी भैया ?"

"हां।"

"कुत्ते की दुम से भी लम्बी ?"

"लंगूर की दुम से भी लम्बी।"

मोहिनी ताली बजाते हुए बोली, "मैं दुमदार सितारे की दुम में पटाखे बांध दूंगी और फिर आग लगाकर तमाशा देखूंगी।"

"अरी पगली!" जुम्मी बोला, "दुमदार सितारे की दुम कई हज़ार मील लम्बी होती है। इस दुम में तुम्हारी पृथ्वी जैसे कई पटाखे बांधे जा सकते हैं। हमारा जहाज़ अगर उसकी दुम के कुछ पास से भी होकर निकला तो कुशल नहीं। जल्दी करो। जहाज़ की दिशा पूर्व को मोड़ दो।"

उर्फी ने कहा, "मगर दिशा मोड़ देने से चांद और दूर जा पड़ेगा।"

जुम्मी ने जल्दी से आकर खुद जहाज़ की दिशा तेज़ी से पलट दी, "इस समय दुमदार सितारे से अपनी जान बचाओ, चांद बाद में देखा जाएगा।"

बड़ी कठिनाई से उसने जहाज़ की दिशा मोड़ी ही थी कि काला आकाश इस तरह प्रकाशमान हो गया जैसे लाखों सितारे फुलझड़ियों की तरह फूटते चले गए हों। रंगबिरंगे चमकते हुए सितारे जहाज़ के दायें-बायें बरसते चले गए। अनार और फुलझड़ियां, हवाइयां और लाल, पीली, नीली, नारंगी आदि चर्खियां

आकाश में चक्कर लगा रही थीं।

जुम्मी जहाज़ को पलटते हुए पूर्व की ओर ले जा रहा था। इन हवाई चक्रियों से बहुत दूर।

"यह तुमने क्या किया ?" नाज़ ज़रा नाराज़ होकर बोली, "ऐसा अच्छा लग रहा था आसमान, बिलकुल दीवाली की तरह! हाय अल्लाह ! कैसी सुन्दर चक्रियां थीं !"

जुम्मी ने कहा, "और अगर इनमें से एक चक्री भी हमारे जहाज़ को छू लेती तो हम खुद वहीं ज़िन्दगी-भर चक्कर लगाते रहते वातावरण में और चांद तक कभी न पहुंच सकते।"

उर्फी ने कहा, "बड़ी कठिनाई से दुमदार सितारे की दुम से बचे हैं।"

जुम्मी ने कहा, "इस कम्बख्त की दुम का तो कुछ ठीक नहीं है। अगर कभी हमारी पृथ्वी से टकरा जाए तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दे।"

नाज़ ने कहा, "मगर शुक्र यही है कि यह दुम हमेशा हमसे दूर ही रहती है।"

उर्फी ने कहा, "मुझे तो भूख लगी है।"

मोहिनी बोली, "मुझे भी।"

नाज़ ने कहा, "मोहिनी ! रसोई की मालकिन तुम हो। तुम हम सबको खिलाओ। हम लोग तो अपनी मशीनों से उठ नहीं सकते।

मोहिनी ने नाज़ और उर्फी को सैंडविच बनाकर दिए और खुद भी खाने लगी। जुम्मी तो पैट्रोल पीता था और ग्रीज़ खाता था। इसलिए मोहिनी ने ये दोनों चीज़ें अलग रख दीं।

"ऊंह !" उर्फी ने सैंडविच खाते हुए कहा, "मोहिनी ! तुमने सैंडविच बहुत अच्छे बनाए हैं।"

जुम्मी ने पैट्रोल की बोतल मुंह में लगाते हुए कहा, "पैट्रोल भी बहुत बढ़िया है। इसकी खुशबू भी बहुत अच्छी है। कहां से लिया तुमने ? कालटेक्स कम्पनी से ?"

"नहीं तो," मोहिनी बोली, "यह तो ज्वालामुखी पहाड़ का पैट्रोल है।"

एकाएक जुम्मी पैट्रोल पीते-पीते रुक गया। उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

"क्या बात है जुम्मी ?" नाज़ घबराके बोली।

मगर जुम्मी ने कोई जवाब न दिया। उसका मुंह खुले का खुला और निर्जीव था।

"जुम्मी ! जुम्मी !!" उर्फी ज़ोर से चिल्लाया। वह अपनी मशीन से हटकर जुम्मी की ओर बढ़ने ही वाला था कि रुक गया, क्योंकि जहाज़ के ठीक सामने नीले रंग की किरणों का एक तूफान बढ़ा चला आ रहा था। उर्फी ने जहाज़ का रुख बदलने की बहुत कोशिश की, मगर नीले प्रकाश की लहरों ने पहले ही जहाज़ को चारों ओर से घेर लिया था और अब जहाज़ इन नीली किरणों में इस प्रकार घूम रहा था, जिस प्रकार गहरे पानियों के किसी बड़े भंवर में कोई नाव फंसकर चक्कर लगाने लगे।

उर्फी अपनी पूरी ताकत से जहाज़ को इस नोले भंवर से निकालने का प्रयत्न करता रहा था ; परन्तु जैसे-जैसे वह प्रयत्न करता, जहाज़ और भी भंवर के अंदर फंसता जाता।

एकाएक मोहिनी ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी।

"चुप रह।" नाज़ बिगड़कर बोली, "यहां जान पर बनी है और तुम खड़ी हंस रही हो।" मगर मोहिनी हंसती ही चली गई। उसे हंसते देखकर कुछ क्षणों के बाद खुद नाज़ को भी हंसी आने लगी। एकाएक उर्फी की समझ में आया कि यह हंसी कुदरती न थी। यह हंसी शायद नीले प्रकाश के असर का परिणाम था। उर्फी ने फौरन एक बटन दबाया और बटन दबाते ही जहाज़ के चारों तरफ सफेद रंग का खोल चढ़ गया। यह सफेद रंग का खोल कई धातुओं का मिश्रण मालूम होता था। इस खोल के चढ़ते ही नीली किरणों का प्रकाश जहाज़के अन्दर आना बन्द हो गया और जहाज़ के अन्दर अन्धकार छा गया। उर्फी ने दूसरा बटन दबाकर बिजली का प्रकाश किया और फिर उसने देखा कि जुम्मी का मुंह जो पहले लटका हुआ था, अब ठीक अपनी जगह पर है, मगर उसकी आंखों में रोशनी नहीं है। उर्फी जल्दी से उठकर जुम्मी के पास आया। उसने पेचकस से जुम्मी का सिर खोला। मालूम हुआ कि डाईनमो बन्द था। यह भी शायद नीली किरणों का असर था। उर्फी ने जल्दी से बिजली लगाकर डाईनमो को ठीक किया और जुम्मी फिर चालू हो गया।

उर्फी ने पूछा, "क्या हुआ था तुम्हें ?"

"कब ? किस वक्त ?" जुम्मी ने आश्चर्य से पूछा।

"अभी थोड़ी देर पहले !" मोहिनी घबराकर बोली, "न तुम बात कर रहे थे, न किसी बात का जवाब देते थे और तुम्हारा मुंह खुला का खुला था।"

"और तुम भी तो बेहद हंस रही थीं।" नाज़ ने जुम्मी की ओर से बोलते हुए ताना दिया।

जुम्मी बोला, "शायद यह नीली किरणों का असर था। मुझे तो बस ऐसा मालूम हुआ जैसे अचानक किसीने मेरे सिर पर हथौड़ा मारा हो। फिर मुझे कुछ याद न रहा। असल में हमसे गलती हुई। हमें जहाज़ के खोल को हर समय चढ़ाकर सफर करना चाहिए। जाने सफर में कैसी-कैसी किरणों से पाला पड़े।" जुम्मी ने टेलीविज़न से देखकर बताया, "हम अभी तक नीली किरणों के तूफान से गुज़र रहे हैं। मगर तूफान का ज़ोर उत्तर दिशा की ओर अधिक है, दक्षिण की तरफ कम है, तुम पूर्व से अब दक्षिण की ओर बढ़े चलो।" जुम्मी ने उर्फी को सलाह दी।

"उत्तर की ओर नीला ग्रह घूम रहा है।" नाज़ बोली, "तो हम नीले ग्रह पर क्यों न चलें? चांद ही क्यों जाएं?"

"नीले ग्रह तक पहुंचने के लिए हमें दस दिन का सफर करना पड़ेगा और हमारे पास सिर्फ पांच दिन की खुराक है।" जुम्मी ने कहा, "और जिस ग्रह की किरणें इतनी तेज़ हैं वहां के लोग कैसे होंगे!"

"मेरे ख्याल में तो हंस-हंसकर पागल हो गए होंगे।" मोहिनी बोली।

उर्फी ने कहा, "हां! यह भी हो सकता है।"

जुम्मी ने राडार के पर्दे पर देखकर कहा, "अब नीले प्रकाश का तूफान केवल अगले चार हज़ार मील तक फैला हुआ है। अगले आठ मिनट में हम लोग तूफान से निकल जाएंगे..."

फिर जुम्मी ने उर्फी की तरफ देखकर कहा, "मैं तुम्हारी होशियारी की दाद देता हूं। तुमने जहाज़ पर खोल चढ़ाकर हम सबकी जान बचा ली, वरना यह नीला प्रकाश हमें ढकेलकर नीचे ग्रह पर ले गया होता।"

जुम्मी घड़ी देखता रहा। ज्योंही आठ मिनट समाप्त हुए, प्रकाश का तूफान भी समाप्त हो गया। अगले दो मिनट में वह प्रकाश के तूफान को एक हज़ार मील पीछे छोड़ आए थे। अब वह तूफान नीले प्रकाश का एक बल खाता हुआ गुच्छा मालूम होता था, नीली ऊन का गुच्छा। जुम्मी ने उर्फी से कहा, "कम से कम केबिन की खिड़कियों से खोल तो हटा दो। बाहर का दृश्य देखें।" उर्फी ने नाज़ से कहा। नाज़ ने केबिन की खिड़कियों का पर्दा हटा दिया तो उन्हें अपने सामने एक अजीब दृश्य दिखाई दिया। सामने सैकड़ों मीलों तक फैला हुआ एक शहर था और यह शहर पूरे का पूरा वातावरण में लटका था। इस शहर के नीचे कुछ न था। कोई धरती न थी। शहर के नीचे आकाश था और शहर के ऊपर भी आकाश था और बीच में यह शहर भी लटका हुआ था। "भई, यह किस तरह का शहर है?" नाज़ आश्चर्य से बोली।

मोहिनी ने कहा, "जहाज़ ठहराओ! हम यह शहर देखेंगे।" मगर जहाज़ अब इस शहर से ऊपर उड़कर आगे चला गया था। लड़कियों के बहुत कहने पर जहाज़ को वापस लाया गया। रिएक्टर को बन्द करके जहाज़ की चाल धीमी होते-होते बिलकुल रुक गई और जहाज़ शहर से बाहर के हवाई अड्डे पर आकर ठहर गया।

यह हवाई अड्डा भी बड़ा अजीब था। इसकी इमारत मोतियों की बनी हुई थी और वातावरण में सैकड़ों फीट ऊपर उठे हुए मीनार भी मोती जोड़-जोड़कर बनाए गए थे। और इन मीनारों पर लाल रोशनियां झिलमिला रही थीं जैसे हमारी ज़मीन के हवाई अड्डे पर होती हैं, लेकिन इस हवाई अड्डे पर पृथ्वी की तरह सड़कें न थीं, केवल सड़क के दोनों ओर मोतियों के हाशिये चुन दिए गए थे और बीच का स्थान खाली था और मीलों तक खाली चली गई थी। ज्योंही बच्चों का जहाज़ इस अद्भुत हवाई अड्डे पर आकर रुका, तो एक तेज़ चलने वाली गाड़ी जो शक्ल में हमारी मोटरों से मिलती-जुलती लगती थी, जहाज़ के पास आकर रुकी और उसमें से एक लड़की निकली जिसका रंग तांबे का सा था। बाद में मालूम हुआ कि वह केवल तांबे की बनी हुई थी और बिजली से चलती थी। तांबे के रंग की लड़की ने बच्चों के जहाज़ का दरवाज़ा खोला और कहा, "स्वागतम्! मेरा नाम पुतली है।" उसने अपना नाम बताया। उत्तर में उर्फ़ी, नाज़, मोहिनी और जुम्मी ने भी अपना-अपना नाम बताया और पुतली से हाथ मिलाया।

पुतली ने जुम्मी को देखकर कहा, "यह कुरूप लड़का कौन है?"

उर्फ़ी ने कहा, "यह जुम्मी है। यह लोहे का बना हुआ है।"

पुतली बड़ी घृणा से बोली, "छिः, छिः! हमारे शहर में तो कोई भी लोहे का बना हुआ नहीं है। सबके सब तांबे के बने हुए हैं। लोहा तो बड़ी बदसूरत धातु है। इसका रंग तो देखो और मेरा रंग भी देखो।"

सचमुच पुतली बड़ी सुन्दर थी। तांबे क रंग के बाल, तांबे के रंग के गाल, तांबे के रंग का स्कर्ट उसने पहन रखा था। जब बात करती थी तो ऐसी मीठी गूंज पैदा होती थी जैसे किसी ढले-ढलाए तांबे के बर्तन को पानी की धारा के नीचे रखते समय पैदा होती है। जुम्मी तो उसे देखते ही मुग्ध हो गया। उसे देख-देखकर आहें भरने लगा।

उर्फी ने कहा, "हम आपका शहर देखना चाहते हैं।"

"शौक से देखिए।" पुतली बोली।

"क्या नाम है आपके शहर का?"

"मोतीनगर।"

और सच में यह शहर मोतीनगर था। यहां जो इमारतें दिखाई देती थीं, मोतियों को जोड़-जोड़कर बनाई मालूम होती थीं, दूधिया रंग की छः-छः, सात-सात मंज़िल की इमारतें, बहुत ही सुन्दर और हृदयस्पर्शी। हर इमारत ताजमहल की तरह सुन्दर दिखाई देती थी। दीवारें मोतियों की थीं, लिफ्टें मोतियों की थीं, कमरे के अन्दर टेलीफोन मोतियों का, लोगों का पहनावा मोतियों का, मगर लोग तांबे के थे। पुरुष तो खैर इतने अच्छे प्रकार के तांबे के न थे, मगर औरतें बहुत ही बढ़िया पालिश किए हुए तांबे की थीं।

नाज़ ने पूछा, "यहां हाड़-मांस के मनुष्य नहीं होते?"

पुतली ने उत्तर दिया, "किसी ज़माने में होते थे, मगर अब नहीं होते। किसी ज़माने में इस शहर में उन्हीं लोगों का राज्य था। उस समय यह शहर मोती सितारे पर बसा हुआ था, जहां अब असंख्य मोती होते हैं। उन्हीं लोगों ने शुरू-शुरू में इस

शहर को बसाया और इस शहर को बनाने के लिए तांबे के आदमी बनाए।"

"तांबे के क्यों, लोहे के क्यों नहीं ?"

"तांबे के आदमियों में बिजली खूब दौड़ती है और वे बड़ी चुस्ती से काम करते हैं।" पुतली बोली, "इसके अतिरिक्त लोहे के आदमियों को बड़ी जल्दी ज़ंग लग जाता है और वे देखने में भी बड़े कुरूप होते हैं। मोती सितारे के मनुष्य बड़े अच्छे हंस-मुख तथा सभ्य थे। वे आरामपसन्द भी थे। धीरे-धीरे उन्होंने सारा काम मशीनों से लेना आरम्भ कर दिया। मशीनों के अन्दर उन्होंने ऐसी बुद्धि, ऐसी स्मरण-शक्ति और भावुकता भर दी थी कि प्रत्येक मशीन खुद अपने स्थान पर एक व्यक्तित्व की मालिक होती थी।"

"जुम्मी भैया की तरह !" मोहिनी हंसकर बोली।

जुम्मी बोला, "मार बैठूंगा बहिन !"

पुतली बोली, "मगर यह सब कुछ धीरे-धीरे हुआ। धीरे-धीरे मनुष्य आरामतलब होते गए। धीरे-धीरे मशीनों को अक्ल आने लगी कि काम तो सब हम करते हैं, फिर हम पुरुषों की गुलामी क्यों करें। धीरे-धीरे मशीनों में विद्रोह का भाव उभरने लगा। तांबे के आदमियों में यूं भी क्रोध बहुत होता है। हर वक्त बिजली की तेज़ लहर उनके अन्दर जो घूमती रहती है। एक रात शहर की सारी मशीनों ने फैसला कर लिया कि हम लोग अपने-आपको मनुष्य की गुलामी से स्वतंत्र करेंगे। इसलिए रातों-रात हमने इंसानों को मार डाला और बिजली की सहायता से इस शहर को उठाकर यहां खाली स्थान में ले

आए और अब यह हमारा शहर है—तांबे के लोगों का ; मगर इस बात को भी अब कई सौ वर्ष हो चुके हैं।"

"तब से यह शहर यहां पर लटका हुआ है ?" जुम्मी ने पूछा।

"हां।"

"आप लोगों को अपना देश याद नहीं आता ?"

"देश क्या होता है ?" पुतली ने पूछा।

"अपने देश की धरती याद नहीं आती ?"

"धरती यानी ज़मीन के तो हम लोग बिलकुल विरुद्ध हैं। हमने अपने सुन्दर शहर की सड़कों, गलियों, बाज़ारों से धरती निकाल फेंकी है। धरती का क्या लाभ है ? ज़मीन से बड़ी गंदगी फैलती है। ज़मीन को साफ रखना पड़ता है। दिन में दो बार झाड़ू देना पड़ता है, फर्श को धोना पड़ता है। इन चीज़ों की किसी भी सभ्यता वाले शहर को क्या आवश्यकता है ? हमारे शहर की हर गली और बाज़ार में हवाई जहाज़ और हवाई मोटरें चलती हैं।"

"मगर किस तरह ? बिजली कहां से आती है ?"

"सूरज की रोशनी जो है। इससे हम दिन-रात अपने लिए बिजली पैदा करते हैं।"

"आप लोग खाते क्या हैं ?"

"बिजली ! शहर के हर घर में बिजली का नल है। सुबह उठते ही हम लोग अपने पेट की टंकी खोलकर उसमें बिजली भर लेते हैं और फिर दिन-भर काम करते रहते हैं।"

"दिन-भर भला आप काम क्या करते हैं ?" उर्फी ने पूछा।

जी नहीं

"वाह ! इतना बड़ा शहर है । कई लाख तांबे के लोग इस में रहते हैं । यहां काम की क्या कमी है ? मगर तुम हमारे घर चलके रहो तो तुम्हें कुछ पता चले, हम कैसे रहते हैं ।"

उर्फी, नाज़, मोहिनी और जुम्मी ने आपस में सलाह की । आखिर यह तै किया कि वे लोग यहां एक दिन के लिए अवश्य ठहर सकते हैं । यहां से चांद का सफर कुछ घंटों का था । इसलिए भय की कोई बात न थी । वे लोग सलाह करके अपने जहाज़ से उतरे और अन्तरिक्ष-पोशाक पहनकर पुतली की मोटर में बैठ गए जो बिजली से चलती थी । कुछ मिनटों में वे लोग पुतली के सुन्दर फ्लैट में थे ।

"आप लोग नहाएंगे ?" पुतली ने नाज़ और मोहिनी से पूछा ।

"हां ! यह तो तुमने बहुत अच्छी बात बताई ।"

पुतली उन्हें गुसलखाने में ले गई ।

मोतियों की टाइलों का गुसलखाना था । आइना भी मोतियों का था । गुसलखाने में दो नल लगे थे और दो फव्वारे । पुतली ने पूछा, "आप ए० सी० स्नान करेंगी या डी० सी० ?"

"वह क्या होता है ?" मोहिनी ने आश्चर्य से पूछा ।

पुतली को मोहिनी की अज्ञानता का अब अंदाज़ा हुआ । कुछ गर्व से बोली, "हमारे यहां कुछ लोग ए० सी० बिजली से स्नान करते हैं, कुछ लोग डी० सी० बिजली से—आपको कौन-सी बिजली पसन्द है ?"

"बिजली का स्नान ? बाप रे ! यहां क्या पानी नहीं होता है ?" नाज़ बोली ।

मोहिनी और नाज़ दोनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगीं। अब वे इस तांबे की लड़की को क्या समझाएं ? अन्त में उन्होंने फ़ब्वारे की ओर इशारा करके पूछा, "यह क्या है ?"

पुतली ने उत्तर दिया, "यह फब्वारा है। बटन दबाओ।"

नाज़ ने डरते-डरते बटन दबाया तो फब्वारे से पानी के बदले मोतियों के दाने, छोटे-छोटे बारीक मोतियों के दाने पानी की बूंदों की तरह बरसने लगे।

"कुछ लोगों को फब्वारे से नहाना बहुत पसन्द है। मोतियों का हर दाना बिजली से चार्ज होकर शावर से निकलता है और जब शरीर से छूता है तो बड़ा मज़ा आता है। आप लोग शावर में नहाइए।"

इसका तो नाज़ और मोहिनी ने कोई उत्तर न दिया। उन्होंने आइने के पास ब्रासो की एक शीशी को देखकर कहा, "यह क्या है ?"

"ब्रासो है।" पुतली ने बड़े आश्चर्य से पूछा, "आप ब्रासो भी नहीं जानतीं। यहां हम लोग रोज़ सुबह उठकर बिजली से नहाते हैं और अपने शरीर को ब्रासो से साफ करते हैं। ब्रासो से हमारा तांबे का शरीर स्वच्छ रहता है और हर वक्त चमकता रहता है। हमारे यहां जो फेशनेबल औरतें हैं वे तो दिन में कई बार ब्रासो का प्रयोग करती हैं।"

"हम लोग साबुन प्रयोग में लाते हैं।"

"साबुन ?—साबुन क्या होता है ?" पुतली ने पूछा।

"एक तरह का ब्रासो ही है।" नाज़ ने उत्तर दिया। पुतली ने कहा, "अपनी-अपनी जगह की रीति है। खैर, यहां जो है,

हाज़िर है। यह रहा मोतियों का ब्रुश, यह मोतियों की कंघी, यह मोतियों का तौलिया। हम लोग तांबे के गरीब पुतले हैं। मगर हमारा शहर अतिथि-सत्कार के लिए इस दृष्टि में किसीसे कम नहीं है।"

यह कहकर पुतली गुसलखाने से बाहर चली गई। खैर, वे लोग बिजली का स्नान तो क्या करतीं, यूंही थोड़ी देर बाद बाहर आ गईं। इतने में पुतली ने शहर के मेयर को टेलीफोन करके बुला लिया था। मेयर भी तांबे का था, मगर उसके तीन सिर थे। इसलिए कि अगर किसी कारण से दो सिर सोचते-सोचते व्यर्थ हो जाएं तो तीसरा काम दे सके। कभी-कभी वह तीनों सिरों से सोचता था।

मेयर ने उन्हें सारा शहर दिखाया। बच्चों ने शहर की बहुत प्रशंसा की। खास कर उन्हें बच्चों का पार्क बहुत पसन्द आया जिसमें मोतियों के वृक्ष थे और मोतियों की झाड़ियों पर मोतियों के जगमगाते हुए फूल थे। नाज़ और मोहिनी ने दो-चार फूल तोड़कर अपने बालों में लगा लिए। इस पार्क में तांबे के बड़े-बड़े पुतले छोटे-छोटे पुतलों को लिए घूम रहे थे, उंगली से पकड़े हुए।

जुम्मी ने पुतली से पूछा, "क्या आप लोगों के यहां भी बच्चे होते हैं?"

"वाह! क्यों न होंगे?" पुतली ने चमककर उत्तर दिया, "क्या हुआ अगर हम लोग तांबे के हैं। आखिर हमारे भी दिल है।"

"दिल है?" जुम्मी ने दिलचस्पी से पूछा।

"हां है और बिजली से धड़कता है और इस दिल में बच्चों के लिए बड़ा प्रेम है।"

"तुम्हें बहिन, बच्चे पसन्द हैं ?" जुम्मी ने पुतली से पूछा।

"हां ! बहुत पसन्द हैं और मैंने फैसला किया है, जब मैं ब्याह करूंगी तो वर्कशाप से दो बहुत अच्छे बच्चे खरीदकर लाऊंगी।"

"तो तुम्हारे यहां बच्चे क्या वर्कशाप में ढलते हैं ?" उर्फी ने आश्चर्य से पूछा।

"और क्या आसमान से आते हैं ?" पुतली ने हंसकर कहा, "वर्कशाप में जाओ। जिस साइज़ का, जिस वुद्धि का, जिस शक्ल का बच्चा चाहिए, ले आओ। कुछ धनवान लोग खास आर्डर देकर बच्चा बनवाते हैं।"

"फिर तुम्हारे यहां तो बच्चे सदा बच्चे रहते होंगे ?"

"और क्या ? बच्चे बच्चे रहते हैं, बड़े बड़े। यह तो अपने-अपने भाग्य की बात है।"

"फिर तो यह शहर बहुत बुरा है," मोहिनी बुरा-सा मुंह बनाकर बोली, "जहां बच्चे कभी बड़े न हो सकें।"

उर्फी ने पुतली को क्रोधित होते हुए देखकर बताया कि पृथ्वी पर किस प्रकार बच्चे बड़े होते हैं, जवान होकर बूढ़े हो जाते हैं। मेयर बड़े ध्यान से उर्फी की बातें सुनता रहा। फिर कहने लगा—

"जब हमारे शहरों में मनुष्यों का राज्य था, तब यहां भी सुना है, ऐसा होता था। मगर हमने अब वह सब कुछ समाप्त कर दिया है। अब तो यहां हर चीज़ प्लान करके होती है। इस

शहर में कितने लाख पुतले रह सकते हैं। उससे अधिक हम लोग बनाते ही नहीं। कितने बच्चे इस शहर में रह सकते हैं, उससे अधिक हमारी वर्कशाप बनाती ही नहीं। यहां कोई बच्चा भूखा नहीं होता, कोई बड़ा बेकार नहीं घूमता। सबके खाने के लिए बिजली है, पहनने के लिए मोती हैं।"

"तब तो आप लोग बहुत खुश होंगे ?" नाज़ ने पूछा।

नाज़ का प्रश्न सुनकर मेयर एकदम उदास हो गया और बोला, "खुशी तांबे के इंसानों के भाग्य में नहीं है। यद्यपि हमारे पास सब कुछ है—खाना, पहनना, बुद्धि और सूरत किसी बात की कमी नहीं। यहां खाना-कपड़ा सबके लिए है। हम लोग मूर्ख और अज्ञान तांबे के पुतले नहीं बनाते, न ही कुरूप पुतले बनाते हैं। हमारे शहर का हर पुतला सुन्दर है। क्या पुरुष, क्या स्त्री ? यहां कोई बीमार नहीं पड़ता। हां, सुना है, जिस ज़माने में यहां मनुष्य रहा करते थे, यहां शहर में बहुत-सी बीमारियां हुआ करती थीं और बहुत-से रोग फैलते थे ; मगर तांबे के इंसान होने से एक यह लाभ भी हुआ है कि हमारा स्वास्थ्य कभी खराब नहीं होता और हममें से कोई बीमार नहीं होता।"

"तब तो आप लोग बहुत खुश होंगे।"

मेयर ने कहा, "आप नहीं जानते, यह शहर बहुत अभागा है। जब यह शहर ज़मीन पर था, मोती के सितारे पर था, तो हज़ारों मील तक फैला हुआ था, परन्तु यहां फिज़ा में आते ही यह शहर अकेला पड़ गया। यहां हर वक्त किसी न किसी वक्त चमकते हुए तारे उड़कर आते रहते हैं। हजारों टन के चमकदार तारे जिस बिल्डिंग से गुज़र जाएं, उसे गिराकर अपने साथ नीचे

ले जाते हैं और आप जानते हैं, हम लोग खाली स्थान में रहने वाले हैं। यहां न तांवा मिलता है, न मोती; जो सामान हम एक बार अपनी ज़मीन से लाए थे, बस वही अपने पास है। धीरे-धीरे चमकदार तारे के हमलों से यह शहर खत्म हो रहा है। अब कुछ सौ मील ही रह गया है। अगले सौ सालों में यह शहर धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा और हमारी तांबे की सभ्यता नष्ट हो जाएगी—सदा के लिए, और फिर किसीको याद भी न रहेगा कि कभी यहां तांबे के लोग रहते थे।" मेयर की आंखों में एक आंसू झलकने लगा।

बच्चों को उसपर बहुत दया आई। जुम्मी ने पुतली की ओर देखकर कहा, "तुम मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा।"

"वाह!" पुतली चमककर बोली, "मैं तुमसे शादी क्यों करूंगी? तुम घटिया लोहे के आदमी, मैं तांबे की पुतली; अपना रंग देखो और मेरा रंग देखो। तुम्हारा-मेरा क्या मेल?"

जुम्मी ने कहा, "मैं तुम्हें बहुत बढ़िया पैट्रोल पिलाया करूंगा।"

पुतली बोली, "ईश्वर न करे। कौन यह गंदा पैट्रोल पिए। मैं तो बिजली से चलती हूं।"

जुम्मी चुप हो गया। उसके हृदय में विचार आया कि काश, मैं भी तांबे का होता!

थोड़ी देर के बाद मेयर का टेलीफोन आया और वह टेलीफोन सुनते ही घबरा गया। बोला, "थोड़ी देर में चमकदार तारे का एक तूफान हमारे शहर से निकलने वाला है। शहर के स्थान को

यहां से एकदम बदल देना होगा।"

"क्या आप अपने शहर की जगह बदलते रहते हैं?"

"हां! बदलनी पड़ती है। इसकी निर्भरता चमकदार तारे अथवा दूसरे आवारा सितारों के चक्कर पर है। इसके हिसाब से हम अपने शहर को खाली स्थान में एक, दूसरे स्थान पर उड़ाते रहते हैं।"

"बड़ी मुसीबत का काम है यह तो।" जुम्मी बोला।

"जीवित रहने के लिए सब कुछ करना पड़ता है।" मेयर ने उत्तर दिया।

जुम्मी ने कहा, "तो इसका मतलब यह भी हुआ कि हम लोगों को भी फौरन यहां से चल देना चाहिए।"

"वह क्यों?" मेयर ने पूछा।

"जुम्मी ने कहा, "पूरे शहर का स्थान बदलने में समय लगेगा; और कभी चमकदार सितारे का तूफान समय से पहले आ गया?"

"ऐसा भी होता है।" मेयर ने कहा, "इस प्रकार शहर के बहुत-से भाग नष्ट हो जाते हैं। कई बिल्डिगें चकनाचूर हो जाती हैं।"

जुम्मी ने फ्लैट की खिड़की खोलकर अपनी टेलीविज़न की पुतलियों से बहुत दूर तक देखा—इतनी दूर तक कि वहां तक कोई इंसान की आंख या दूरबीन की आंख नहीं पहुंच सकती थी। तुरन्त ही उसने खिड़की से सिर अंदर करते हुए कहा—

"भागो! भागो!! चमकदार सितारे का तूफान आ रहा है।" मेयर जल्दी से टेलीफोन पर शहर की पुलिस और

फौज को आज्ञा देने लगा और स्थानीय इंजीनियरों को शहर घुमाकर दूसरी ओर ले जाने की आज्ञा देने लगा। इतने में पुतली ने अपनी मोटर स्टार्ट की और उर्फी, नाज़, मोहिनी और जुम्मी को लेकर हवाई अड्डे पर पहुंच गई। उर्फी ने जल्दी-जल्दी हवाई जहाज़ को स्टार्ट किया। पुतली ने जल्दी-जल्दी सबसे विदा ली और अब वह जहाज़ के दरवाज़े पर खड़ी विदा हो रही थी कि जहाज़ चलने लगा और खट से जुम्मी ने जहाज़ का दरवाज़ा बन्द कर लिया। "खोलो ! खोलो !! दरवाज़ा खोलो !!!" पुतली घबराकर बोली। जुम्मी ने मुस्कराकर कहा, "अब यह दरवाज़ा तो चांद की धरती पर जाकर खुलेगा।" पुतली ने दरवाज़ा खोलने का बहुत प्रयत्न किया, मगर पुतली तांबे की थी और जुम्मी लोहे का था और लोहा तांबे से अधिक बलवान होता है। पुतली हारकर रोने लगी।

मोहिनी ने उसे आश्वासन दिया ; बोली, "घबराओ नहीं, हम तीनों लड़कियां बहिनों की तरह रहेंगी। हम तुम्हें नई-नई दुनिया दिखाएंगे। ऐसी दुनिया जो तुमने इससे पहले कभी न देखी थी। तुम उन दुनियाओं को देखकर बहुत प्रसन्न हो जाओगी।"

"और अगर तुम्हारा दिल प्रसन्न न हुआ तो हम तुम्हें वापस यहीं तुम्हारे शहर में छोड़ जाएंगे।" नाज़ ने वायदा किया। पुतली मान गई, मगर कहने लगी, "एक शर्त है। मैं इस कुरूप लोहे के लड़के से बिलकुल बात न करूंगी।"

"कौन ? जुम्मी ?" नाज़ मुस्कराकर बोली, "अरे, यह तो बिलकुल गधा है, तुम इसकी फिक्र मत करो। इधर आओ, राडार की

मशीनों पर मेरी सहायता करो।" पुतली जुम्मी से मुंह फेरकर नाज़ के साथ बैठ गई। यकायक उर्फी ने खुशी से चिल्लाकर कहा—

"चांद से सिगनल आ रहा है, चन्द्रमा का एयर पोर्ट पास आ रहा है।"

मोहिनी ने खुशी से उचककर जहाज़ के अन्दर के माइक्रोफोन के बटन खोल दिए।

माइक्रोफोन पर आवाज़ आ रही थी—

"हैलो—पृथ्वी के राकेट—हैलो! हैलो, हमसे बात करो, यह एयर पोर्ट चन्द्रमा है। एयर पोर्ट चन्द्रमा..."

जुम्मी ने टेलीविज़न के पर्दे पर सबको दिखाया। दूर-दूर सैकड़ों मील तक एयर पोर्ट चन्द्रमा के नारंगी प्रकाश झिलमिला रहे थे। हज़ारों गज ऊंचे खम्बों पर राडार के एंटिना काम कर रहे थे।

उर्फी चिल्लाया, "रैक्टर टु लैंड।"

"इलेक्ट्रोनिक्स टु लैंड!!"

"शिप मास्टर टु लैंड!!!"

"रेडी!"

जुम्मी, नाज़, मोहिनी, और पुतली सबने अपनी-अपनी मशीनों को टेस्ट करके कहा, "रेडी।"

उर्फी ने ब्रेक घुमाए और राकेट जहाज़ की चाल हज़ारों मील से केवल सौ मील प्रति घंटा रह गई और राकेट वातावरण में अर्धगोलाकार के रूप में चक्कर लगाकर नीचे उड़ने लगा।

मोहिनी ने केबिन की खिड़की से देखा। जहाज़ धीरे-धीरे

चांद की धरती पर उतर रहा था। जब बच्चों का राकेट जहाज़ चन्द्रमा एयर पोर्ट पर उतर गया, तो बच्चे प्रसन्नता से झांककर खिड़की के बाहर देखने लगे। हज़ारों वर्ष से बच्चों ने चन्दा मामा की कहानी सुनी थी और अपने छोटे-से हृदय में चन्द्रमा को पाने की इच्छा की थी। उन्होंने झील में, तालाब में, नदी में, समुद्र में और कहीं नहीं तो आइने ही में चांद की परछाईं को देखकर अपना दिल बहला लिया था, परन्तु चांद तक वे न पहुंच सके थे। क्योंकि अब तक ऐसे तेज़ हवाई जहाज़ न बन सके थे जो मनुष्य को चांद तक पहुंचा सकते, परन्तु आज यह असम्भव बात भी सम्भव हो गई थी; और मनुष्य के बच्चे पहली बार चांद की धरती पर पांव रख रहे थे। वे बहुत प्रसन्न थे और खिड़की से बाहर देखते हुए चांद देश में रहने वाले लोगों की शक्लें देखने के लिए बेचैन नज़र आते थे, परन्तु जब आधा घंटा निकल गया और उन्हें लेने के लिए कोई नहीं आया, तो बच्चे बहुत हैरान हुए। पुतली बहुत नाराज़ होकर बोली—

"नाज़! तुम मुझे कहां ले आईं? यहां के लोग तो बहुत ही बदतमीज़ दिखाई देते हैं। यह भी नहीं सोचते, इतनी दूर से चलकर इनके घर अतिथि आए हैं!"

"मगर तुमको बुलाया किसने था?"

अचानक जहाज़ के अन्दर के माइक्रोफोन से ज़ोर से एक आवाज़ आई। सब चौंक पड़े और इधर-उधर देखने लगे। मगर वहां कोई न था। सब स्तम्भित रह गए, यह आवाज़ किधर से आई थी! इससे पहले जब वे एयर पोर्ट पर उतर रहे थे तो बराबर जहाज़ को उतरने के लिए आज्ञा चांद के अड्डे पर से

दी जा रही थी। अब वे सब आवाज़ें बन्द थीं। उर्फी ने माइक्रोफोन पर बहुत बार 'हैलो, हैलो, एयर पोर्ट चन्द्रमा, हमसे बात करो' कहा, परन्तु किसीने उसका उत्तर तक न दिया। ऐसा मालूम होता था जैसे चन्द्रमा के हवाई हड्डे पर कोई है ही नहीं। थोड़ी देर और प्रतीक्षा करने के बाद आखिर उर्फी ने कहा, "मेरे ख्याल में तो अब जहाज़ से उतरकर देखना चाहिए कि क्या बात है। तुम सब लोग अपने-अपने खलाई-सूट पहन लो और आक्सीजन की दोनों नलकियां अपनी-अपनी जेबों में रख लो, क्योंकि चांद पर वायु नहीं है।"

राकेट से उतरकर बच्चों को चांद पर पैर रखना बहुत अजीब-सा लग रहा था। एक तो चांद पर पहुंचते ही वे यह महसूस करते थे कि उनका वज़न पहले से एक-चौथाई रह गया है। जुम्मी अपने-आपको बिलकुल हलका-सा महसूस कर रहा था। वह दो-एक बार उछला तो पन्द्रह-बीस फुट ऊपर वातावरण में उछल गया। बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि पृथ्वी पर तो वह इतना भारी था कि बिलकुल एक फुट उछलना भी उसके लिए असम्भव था। उसकी देखादेखी दूसरे बच्चे भी उछलने लगे और बिलकुल ऐसा लगता था कि मनुष्य के बच्चे मेंढकों की तरह उछल रहे हैं। पुतली भी बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि वह तुलना में जुम्मी से ज़्यादा उछल सकती थी। पुतली जुम्मी को चिढ़ाते हुए बोली, "अरे, तुम लोहे के बुद्ध क्या उछलोगे ?"

मोहिनी ने पुतली से पूछा, "चांद तुम्हें कैसा लगा ?"

पुतली बोली, "भई यह बात तो मुझे बहुत पसन्द आई चांद की कि यहां आकर वज़न बहुत हलका हो जाता है। अपने

शहर में तो मैं इतना तेज़ कभी न चल सकती थी, मगर यह क्या बात है, हमें लेने के लिए कोई नहीं आ रहा है। यह पूरा हवाई अड्डा बिलकुल निर्जन और सुनसान पड़ा है।"

सचमुच अब जो जुम्मी और उर्फी और दूसरे बच्चों ने देखा तो उन्हें कहीं पर कोई इन्सान या इन्सान की तरह जानवर या कोई चलती-फिरती चीज़ दिखाई न दी। हवाई अड्डे का फर्श नीले रंग के किसी कांच का था, परन्तु जब उर्फी ने उसे भली प्रकार देखा तो आश्चर्य से चिल्लाने लगा, "अरे यह तो नीलम है!"

"नीलम ?"

"हां, हवाई अड्डे का फर्श नीलम का है। देखो तो!" सचमुच मीलों तक, जहां तक दृष्टि काम करती थी, ज़मीन पर नीलम ही नीलम बिछा हुआ दिखाई देता था और सूर्य के प्रकाश में इतना सुन्दर दिखाई देता था कि दृष्टि नहीं टिकती थी। बच्चे आश्चर्य से उसे देखते आगे बढ़े, तो उन्हें हवाई अड्डे की आलीशान हरे रंग की बिल्डिंग दिखाई दी, जो इतनी स्वच्छ रंग और नाज़ुक-सी छिली हुई सतहों की दिखाई देती थी कि आप बिल्डिंग के बाहर से बिल्डिंग के अन्दर सुन्दर कमरे भी देख सकते थे। बिल्डिंग के अन्दर घुसते ही बड़े हाल के छः आलीशान खम्भे दिखाई देते थे, जो सैकड़ों फीट ऊपर की छत को संभाले हुए थे। इन खम्भों का रंग स्वच्छ गुलाबी-सा था और चमक मोतियों की सी थी। जुम्मी ने एक खम्भे को हाथ लगाकर कहा, "अरे, ये तो हीरे के बने हुए हैं, हीरे के! ···सचमुच!!"

मोहिनी ने ऊपर छत की तरफ दृष्टि उठाकर कहा—

में उठाकर देखा, तो चमकता हुआ सोना नज़र आया, उर्फी ने अपनी एक जेब सोने से भर ली। दूसरी जेब में उसने अनमोल हीरे भर रखे थे। दूसरे बच्चों ने भी ऐसा ही किया था। चलते-चलते दोपहर हो गई और सड़क थी कि सीधी-सपाट चली जा रही थी, कहीं पर कोई मोड़ न था। चलते-चलते दोपहर भी ढल गई। आकाश का रंग नीला न था, बल्कि वातावरण में उड़ने वाली सोने की धूल के कारण गहरा सुनहरी था और सूर्य की किरणों से इस प्रकार झिलमिलाता था जैसे उसने आकाश को इस कोने से उस कोने तक सुनहरी लहरिया बांध दिया हो। फिर चलते-चलते शाम हो गई और सूर्य एक लाल रंग के समुद्र में डूब गया और फिर एकदम सारे आकाश पर अंधेरा-सा छा गया और पीले-पीले लाखों सितारे जुगनुओं की तरह बिखर गए। अब बच्चे बिलकुल घटाटोप अंधेरे में चल रहे थे, एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए। अन्दाज़े से अब तक वे पन्द्रह-बीस मील आ गए होंगे। मगर क्योंकि उनके पांव बहुत तेज़ पर हलके-हलके से पड़ रहे थे और कम वज़न होने से अब तक उन्हें थकान नहीं लग रही थी। इतनी दूरी अगर उन्होंने पृथ्वी पर चली होती तो अब तक थककर चूर-चूर हो गए होते।

कुछ मील इसी प्रकार चलने के बाद अकस्मात् उर्फी का सिर एक दीवार से टकराया और उसने अपने दूसरे साथियों को सजग करते हुए कहा, "रुक जाओ।"

जुम्मी और पुतली, नाज़ और मोहिनी उर्फी के पीछे-पीछे रुक गए।

उर्फी ने दीवार पर चारों ओर अपना हाथ फेरा। दीवार

बिलकुल सीधी और साफ थी। अचानक उर्फी का हाथ एक बटन पर पड़ा। उर्फी ने डरते-डरते उस बटन को दबा दिया। बटन दबाते ही दूर-दूर तक अंधेरा छंट गया और चारों ओर हलका, निर्मल दूध की तरह मुलायम और नर्म प्रकाश फैल गया। उर्फी ने और दूसरे बच्चों ने सिर उठाकर देखा तो उन्हें अपने सम्मुख एक बहुत ऊंची सफेद रंग की दीवार दिखाई दी जिसके अन्दर हलके आसमानी रंग का एक सुन्दर-सा दरवाज़ा था और उस दरवाज़े के ऊपर चांदी के शब्दों में लिखा था—

"चांद देश।"

फिर कुछ क्षण पश्चात् धीरे-धीरे यह दरवाज़ा खुला और सुन्दर गीत सुनाई देने लगा और बच्चों के सिर पर चांदी और सोने के तार गिरने लगे। उर्फी डरते-डरते दरवाज़े के अन्दर घुसा, तो वह और उसके साथी बच्चे दरवाज़े के अन्दर का सुन्दर संसार देखकर अचम्भे में आ गए। एक हलका-हलका और सुहाना प्रकाश चारों ओर फैला हुआ था। आकाश बहुत निर्मल तथा हलके-से नीले रंग का था। कहीं-कहीं सरू की तरह नाज़ुक और सुन्दर वृक्ष दिखाई देते थे, परन्तु इन वृक्षों के पत्ते, टहनियां, तने सब चांदनी के बने हुए मालूम होते थे। दूर सामने पानी के रंग का एक ऊंचा पहाड़ खड़ा था जिसकी चोटी से ऐसा लगता था जैसेकि पिघली हुई चांदनी का एक झरना गिर रहा था।

जब बच्चे दरवाज़े के अन्दर आए, तो उन्होंने अपने-आपको सुन्दर औरतों के समूह में पाया, इन औरतों के कंधों पर चांदनी के पर थे और सिर से पैर तक चांदनी की बनी मालूम होती थीं। और जब वे चलती थीं तो उनके पैरों से चांदी की घंटी

की आवाज़ आती थी, और जब वे बात करती थीं, तो ऐसा लगता था मानो चांदनी की किरण बोल रही है। उनके साथ जो पुरुष थे, वे भी सुन्दर सफ़ेद परों वाले थे और सिर से पैर तक चांदनी में ढले हुए मालूम होते थे। यहां हर वस्तु जो दिखाई देती थी, वह बेहद सुन्दर और निर्मल और मानो दूधिया रंग की धुंध में खोई-खोई मालूम होती थी। वायु में एक हलकी-हलकी नींद लाने वाली सुगन्ध थी। उन्हें ऐसा लग रहा था कि जैसे यह चांद देश न हो, सुन्दर चांदनी का सपना हो। नाज़ बोली, "हाय! यह चांद देश कितना सुन्दर है!"

पुतली बोली, "और यहां के लोग कितने सुन्दर हैं! मैंने तो ऐसे सुन्दर लोग संसार में कहीं नहीं देखे।"

पुतली ने बड़ी घृणा से जुम्मी की ओर देखा और बोली, "तुम नीच लोहे! तुम कितने कुरूप हो!" और यह कहकर उसने जुम्मी से अपना हाथ छुड़ा लिया।

जुम्मी को क्रोध तो बहुत आया, मगर चुप रहा। इतने में चांद देश का एक बहुत सुन्दर पुरुष पुतली के पास आया और उससे मुस्कराकर बातें करने लगा। एक और ने जो सबसे आगे थी और सबकी रानी मालूम होती थी, और सबसे सुन्दर थी, उसने उर्फी का हाथ पकड़कर कहा, "आइए! स्वागतम्! चांद देश में पृथ्वी देश के बच्चों को स्वागतम् कहती हूं। आइए, हमने आपके सम्मान में एक बहुत बड़ी गार्डन पार्टी का आयोजन किया है, तशरीफ लाइए।"

वे लोग एक बहुत बड़े चांदी के गलीचे पर रानी के साथ बैठ गए। यह गलीचा बहुत बड़ा था और एक गोल दायरे की शक्ल

में कटा हुआ था। जब सब लोग गलीचे पर बैठ गए, तो रानी ने चांदी की छड़ी से गलीचे को छुआ और गलीचा हवा में उड़ने लगा और बच्चे चांद देश को देखने लगे। वे लोग धीरे-धीरे उड़े जा रहे थे और उनके नीचे सुन्दर महल, किले, नदियां, शहर, गांव, क़स्बे, खेत, मैदान, पहाड़ और बाग तथा जंगल गुज़रते जा रहे थे। हर चीज़ अपनी पृथ्वी की तरह थी, परन्तु हर चीज़ का रंग यहां सफेद था बल्कि निर्मल दूधिया चांदनी के रंग का सा था।

पन्द्रह-बीस मिनट तक इसी तरह उड़ने के बाद रानी ने गलीचे को फिर अपनी चांदी की छड़ी से छुआ और गलीचा धीरे-धीरे एक सुन्दर बाग में उतर गया। उस बाग में जितने भी फल थे वे चांदी के बने हुए दिखाई देते थे और फुव्वारों से जो पानी उछलता था वह पिघली हुई चांदी का मालूम होता था और क्यारियों पर जो फूल खिले हुए थे, वे भी चांदी की पत्तियों के बने हुए थे। मोहिनी ने एक फूल तोड़कर अपने बालों में लगाना चाहा तो वह फूल को तोड़ न सकी। फूल की हांडी एक किरण की तरह निर्मल थी, फूल की पत्तियां भी इसी प्रकार निर्मल थीं और जब मोहिनी ने उन्हें तोड़ना चाहा तो वे उसकी उंगलियों के आरपार हो गईं। इसी तरह जब नाज़ ने फुव्वारे के पानी को हाथ लगाया तो उसका हाथ बिलकुल गीला न हुआ। जुम्मी ने जब देखा कि चांद देश का एक सुन्दर पुरुष पुतली को हाथ से पकड़े लिए घूम रहा है, तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने उस आदमी को धर के एक घूंसा दिया; मगर जुम्मी के आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब उसका घूंसा उस

मनुष्य के आरपार हो गया, मगर उसे कोई हानि न पहुंचा सका। जुम्मी को ऐसा लगा मानो उसका हाथ धुनी हुई रुई से भी निर्मल और मुलायम और नर्म ऊपरी भाग को छूकर वापस आया। वह मनुष्य जुम्मी को देखकर उसी प्रकार मुस्कराता रहा और बोला, "भाई, मैं चांदनी का बना हुआ हूं, तुम्हारा मुक्का मुझमें से पार हो जाता है और मुझे कुछ मालूम नहीं होता, अगर विश्वास न हो तो एक मुक्का और मारकर देखो।"

जुम्मी ने उसे दस-बारह मुक्के मार के देखे, उस व्यक्ति को ज़रा भी चोट न लगी।

उर्फी ने रानी से पूछा, "मेरी समझ में यह नहीं आया कि आपके एयर पोर्ट पर हमें लेने कोई क्यों न आया था?"

रानी ने मुस्कराते हुए कहा, "हम सब लोग वहां उपस्थित थे।"

"मगर हमने तो आपको नहीं देखा!" उर्फी ने बड़े आश्चर्य से कहा।

रानी एक आह भरकर बोली, "उसका कारण यह है कि हम लोग चांदनी के बने हुए हैं। चांदनी दिन में किसीको दिखाई नहीं दे सकती, न हमारी आवाज़ संसार में किसीको सुनाई दे सकती है, इसलिए आज दिन में तुम्हें चिल्ला-चिल्लाकर स्वागतम् कहा, मगर तुम न तो हमें देख सके, न हमारी आवाज़ सुन सके। हम लोग तो केवल रात को दिखाई दे सकते हैं और रात ही हमारा दिन है। दिन को अक्सर हम लोग कोई काम नहीं करते और जहां होते हैं वहीं पड़कर सो जाते हैं। हमारे देश में सब काम रात को होता है। दिन सोने के लिए होता है।"

नाज़ ने पूछा, "तो यहां जो चीज़ें दिखाई दे रही हैं सब चांदनी की बनी हैं ?" "और क्या यह वृक्ष, फूल, फल, पत्ते, झरने, पहाड़, झीलें सब चांदनी की किरणों से बनी हैं ?"

थोड़ी देर में निर्मल चांदी की मेज़ों पर चांदी के बर्तन सज गए और उनमें सुन्दर मिठाइयां, केक और भांति-भांति के खाने की वस्तुएं, जैसे ये बच्चे पृथ्वी पर खाते आए थे, दिखाई देने लगीं; परन्तु यहां प्रत्येक वस्तु चांदनी की तरह निर्मल थी। गुलाबजामुन और इमरती, मोतीचूर और सोहन हलवा हर वस्तु का रंग सफेद था। चांदी के गिलासों में भी अब निर्मल पानी भरा हुआ था; परन्तु ज्योंही वे लोग पानी पीते, उन्हें ऐसा मालूम होता कि उन्होंने कुछ पिया ही नहीं। गिलास खाली हो जाता, मगर उनके पेट में कुछ नहीं पहुंचता, लड्डू उठाकर वे लोग मुंह में रखते और मुंह में रखते ही जबड़े जलने लगते, मगर मुंह में लड्डू उन्हें मालूम न देता। बच्चे बड़े परेशान हुए कि यह किस प्रकार का खाना है और किस प्रकार की मिठाइयां हैं, जिनका न कोई स्वाद है, न इनके खाने से भूख कम होती है।

जब उर्फी ने रानी से पूछा तो उसने बताया, "यह खाना भी चांदनी से बनाया जाता है, हम लोग क्योंकि चांदनी के बने हुए हैं, इसलिए हमारी भूख तो उससे समाप्त हो जाती है; परन्तु आप लोग···हाड़-मांस के मनुष्य है और आपके साथ ये दो जीव तांबे और लोहे के हैं। अब हम लोग क्या करें ? वास्तव में इस विषय में यह बड़ी कठिनाई है और यही इसकी सबसे बड़ी व्यवस्था है, यहां भिन्न-भिन्न नक्षत्रों और सितारों के लोग

भिन्न-भिन्न तत्त्व के बने हुए हैं। इनकी अपनी-अपनी जीवन की व्यवस्था है। आपकी व्यवस्था सूर्य है, तो हमारी व्यवस्था भूमि है। यहां हर व्यक्ति अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग बनाए हुए है। इससे सृष्टि में इतनी अव्यवस्था फैल चुकी है कि मैं तो सोच-सोचकर तंग आ चुकी हूं। मेरे विचार में तो सृष्टि में एक इंकलाब लाने की आवश्यकता है। भिन्न-भिन्न ग्रहों और सितारों के भिन्न-भिन्न तत्त्वों को एक सूत में पिरोने की आवश्यकता है। मेरा नारा है, 'सृष्टि के सितारो एक हो जाओ।' "

"हेयर ! हेयर !" पुतली ने रानी की वार्ता का समर्थन करते हुए कहा, "देखिए न, मैं एक निर्धन देश की रहने वाली हूं। यूं तो हमारा शहर सृष्टि में सबसे सुन्दर और मोतियों का बसा हुआ है, मगर मुसीबत देखिए कि हमारे यहां दिन में दो-तीन बार टूटे हुए सितारों के तूफान आते हैं और हमें दिन में चार बार अपने शहर का स्थान बदलना पड़ता है। अब आप ही सोचिए कि इस तरह से कोई शहर कभी उन्नति कर सकता है ?" "फिर दुमदार सितारे को देखिए।" जुम्मी क्रोध में बोला, "उसके चक्कर का कुछ ठीक नहीं है। एक ऊंट की तरह जिधर चाहे थूथनी उठाए चल देता है। बड़ी कठिनाई से जान बचाई है रास्ते में उससे।"

उर्फी ने कहा, "गैस का गोला है कि फैलता ही जा रहा है। दूसरा गोला है कि सिकुड़ता ही जा रहा है। कहीं कोई हाइड्रोजन गैस का बना हुआ सितारा हमारे सूरज से एक लाख गुना बड़ा अचानक फट पड़ता है और लाखों छोटे-छोटे सितारे

नष्ट हो जाते हैं। ऐसे सितारे, जो नक्षत्र होते जा रहे थे, जिनपर कभी हमारी पृथ्वी की तरह हवा चलती, समुद्र गरजते, वृक्ष श्रौर जानवर पैदा होते। मनुष्य की तरह कोई बुद्धिमान जीव जन्म लेते, मगर उस एक हाइड्रोजन धमाके ने सब समाप्त कर दिया। दुःख उन व्यक्तियों पर है जो बिना खिले मुर्भा गए।"

नाज़ उदास होकर बोली, "सचमुच इस विश्व में बड़ा श्रन्याय हो रहा है।"

चांद का वह सुन्दर पुरुष जो पुतली का हाथ पकड़े हुए था, हंसकर बोला, "श्ररे भाई, छोड़ो यह बेकार की बातें। खूबसूरत बातें करो।"

रानी ने मुस्कराकर कहा, "ठीक कहते हो चन्दरन। ज़रा साज़िन्दों को कहो।"

चन्दरन ने उत्तर में इशारा-सा किया श्रौर एक स्टेज पर से पर्दा-सा हटा श्रौर एक नृत्य-सा श्रारम्भ हो गया। हर वस्तु धुली-धुली श्रौर स्वप्न का सा श्रावरण लिए हुए थी, गीत श्रौर नृत्य भी ऐसा मालूम होता था मानो इससे पहले कहीं सुने हुए हैं।

जब उर्फी ने रानी से पूछा तो उसने बताया, "यह तो स्वाभाविक है। हम लोगों का कल्चर, सभ्यता, रहन-सहन पृथ्वी के लोगों से बहुत मिलता है। कभी चांद पृथ्वी ही का एक टुकड़ा था।"

नृत्य बहुत सुन्दर था। गीत मधुरता लिए हुए श्रौर धुन ऐसी स्वप्निल श्रौर नशे में बसी हुई कि थोड़ी देर में बच्चों को

नींद आने लगी और ये लोग गीत सुनते-सुनते वहीं सो गए।

सुबह को जब वे लोग उठे तो वहां पर न कोई बाग था, न फूल थे, न फल, न रानी थी, न उसके दरबारी। वहां न निर्मल पहाड़ थे, न झरने, न झीलें, न गीत, न मधुर राग, न खाना। वहां तो कुछ न था। उनके सिर पर सूरज चमक रहा था और वे लोग एक खाई में लेटे थे और उनके चारों ओर चांद के दहकते हुए ज्वालामुखी पहाड़ खड़े थे।

देर तक इधर-उधर देखने के बाद भी जब बच्चों ने चारों ओर निर्जनता ही निर्जनता देखी, तो वे लोग चांद से बहुत निराश हो गए। बच्चों को चांद का यह भाग बिल्कुल न भाया।

उर्फी कहने लगा, "भला जहां न मनुष्य हो न कोई जीव, वहां अगर हीरों के पहाड़ भी खड़े हों तो किस काम के?"

पुतली बोली, "नाज़! यह चांद के रहने वाले भी कैसे हैं! रात को दिखाई देते हैं, दिन को नज़र नहीं आते।"

शैतान मोहिनी चमककर बोली, "अगर मेरी आंखें उल्लू या बिल्ली की सी होतीं, तो मैं चांदवासियों को दिन में भी देख सकती।"

जुम्मी बोला, "उर्फी भैया, मेरे विचार में तो चांद की दूसरी ओर जाकर देखना चाहिए, वहां क्या है। यह इधर वाला चांद, जो हम पृथ्वी वालों को इतनी दूर से इतना प्यारा मालूम होता है, बिलकुल मज़ेदार नहीं है।"

सबने जुम्मी की यह सलाह मान ली कि हमें चांद की दूसरी तरफ अवश्य जाना चाहिए।

नाज़ बोली, "और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि चांद में क्यों आए थे।"

"शांति की फाख्ता ढूंढ़ने के लिए।" मोहिनी बोली, "मुझे अच्छी तरह याद है, मगर इस निर्मल स्थान में, जहां हवा है, न पानी, जंगल हैं न पहाड़, जहां अपने सिवा और किसी जीव की सूरत दिखाई नहीं देती, वहां अपनी फाख्ता आकर क्या करेगी ?"

थोड़ी देर इसी प्रकार सोच-विचार करने के बाद सब बच्चे वापस चांद एयर पोर्ट को आ गए और अपने राकेट में बैठकर चांद की दूसरी ओर प्रस्थान कर गए।

*जाना राकेट का चांद की दूसरी ओर। पहुंच जाना बच्चों का झूठों के शहर में * * **

आह मित्रो! वर्णन क्या करूं मैं चांद की दूसरी ओर का। चांद की यह हमारी वाली तरफ जितनी उजाड़ और वीरान थी, दूसरी ओर उतनी ही हरी-भरी और सुन्दर थी। सारी पृथ्वी पर नीले रंग की घास फैली हुई थी और कहीं पर भूरी मिट्टी दिखाई न देती थी। स्थान-स्थान पर सुन्दर वृक्षों के झुंड थे और प्रत्येक वृक्ष की अपनी सुगन्ध थी। कोई गुलाब की तरह सुगन्धित था, तो किसीमें से मोतियों की सुगन्ध आती थी। सब पत्तों का रंग सुनहरा था और सारे फूल सफेद थे और नदी-नालों में पिघलती हुई चांदी बहती थी। बादलों का रंग गुलाबी था और बादल बहुत ऊंचे नहीं उड़ते थे। केवल वृक्षों की चोटियों को छूकर निकलते थे तो उनमें से पानी की बारिश के बजाय रागिनियों की वर्षा होती थी और धीमे-धीमे सुरों में सुन्दर राग हर समय बरसते रहते थे। गाने की यह बारिश ज्योंही यहां की धरती पर गिरती तो किसान लोग खेतों में हल चलाने लगते। देखते ही देखते गीतों के पौधे बड़े हो जाते। यहां के किसानों को फसल उगाने के लिए अधिक काम नहीं करना पड़ता था। हल चलाने के बाद किसानों को दिन में तीन बार अपने खेतों में बांसुरी बजानी पड़ती थी। उस बांसुरी की आवाज़

सुन-सुनकर पौधे बड़े होते रहते थे। कोई किसान बांसुरी बजाता था, तो कोई जलतरंग, कोई सितार तो कोई रुबाब।

जिस प्रकार हमारे यहां अनाज अनेक प्रकार का होता है, उसी प्रकार वहां के पौधे और उनके अनाज अनेक प्रकार के थे। किसीका नाम विहाग था तो किसीका नाम पूरिया। कोई मल्हार था तो कोई दरबारी। हर व्यक्ति अपनी पसन्द का राग खाता था, जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर लोग अपनी पसन्द का अनाज खाते हैं। जैसे किसीको चावल पसन्द हैं तो किसीको गेहूं की रोटी। इसी प्रकार वहां के लोग अपनी-अपनी पसन्द का राग पकाते थे—वे लोग इस अनाज को अपने मुंह से नहीं, अपने कानों से खाते थे और मुंह से केवल झूठ बोलते थे।

इस बात का पता बच्चों को उस समय लगा, जब वे अपने राकेट को चांद की दूसरी ओर उतारने में सफल हो गए। सबसे पहले उनकी दृष्टि मनुष्यों के एक झुंड पर पड़ी। वे लोग फटे चीथड़े पहने उनकी ओर देखकर गालियां बक रहे थे और कह रहे थे, "चले जाओ, नहीं तो जान से मार डालेंगे। हमारी धरती पर पांव रखने का तुम्हें क्या अधिकार ? पृथ्वी के मूर्खो ! हमारे चांद को अपनी लालची निगाहों से अपवित्र मत करो। चले जाओ।"

यह सुनकर बच्चों ने सोचा, जिस देश के अतिथि-सत्कार की यह दशा हो वहां से चले जाना ही ठीक है। यह सोचकर वे लोग वापस अपने राकेट में बैठने को चले कि इतने में एक आदमी, जो इन सबमें कुरूप, गन्दा और मैला दिखाई देता था, आगे बढ़ा और उर्फी के समीप आकर धीरे से कहने लगा, "आप

चले जा रहे हैं ? आश्चर्य है ! हम लोग हालांकि आपका स्वागत करने के लिए इकट्ठे हुए हैं।"

"क्या मेहमानों को इस तरह स्वागतम् कहा जाता है ?" उर्फी ने क्रोध में पूछा।

"आप नाराज़ न हों।" वह आदमी बड़ी नम्रता से बोला, "यहां का नियम ही ऐसा है। जिस स्थान पर आप उतरे हैं, यह झूठों का शहर कहलाता है। हमारे सम्राट की आज्ञा है कि उसकी प्रजा का कोई मनुष्य सच न बोले। जो बोले सो झूठ बोले। इसलिए जब हम आपको कहते हैं 'चले जाओ' तो इसका मतलब है 'आ जाओ'। जब हम आपको मूर्ख कहते हैं तो उसका मतलब है, आप बड़े बुद्धिमान आदमी हैं।"

"आप बड़े मूर्ख हैं।" उर्फी ने झुंझलाकर कहा, "और बहुत ही बेहूदा है आपका बादशाह !"

"वाह ! वाह ! क्या तारीफ की है आपने हमारे बादशाह की ! बादशाह सलामत सुनें तो बहुत ही खुश होंगे।"

जुम्मी ने पूछा, "यहां अगर कोई सच बोलना चाहे तो क्या करे ?"

"सच बोलने के लिए राशन-कार्ड बनवाना पड़ता है और दिन में तीन बार से अधिक आप सच नहीं बोल सकते। एक बार सुबह, दूसरी बार दोपहर, तीसरी बार शाम। परन्तु यहां के लोग बहुत गरीब हैं। हर रोज़ सच नहीं बोल सकते और यहां का बादशाह बहुत ही निर्दय है। बहुत ही कम राशन-कार्ड देता है कि लोग सच के लिए तरसते ही रहते हैं।" उस मनुष्य ने उत्तर दिया।

"मगर तुम इस समय यह सच क्यों बोल रहे हो ?" नाज़ ने पूछा।

"मैं यहां के विदेश मंत्रालय का मंत्री हूं।" वह मनुष्य बोला, "मुझे बादशाह ने अधिकार दे रखा है, जब चाहूं सच बोलूं, जब चाहूं झूठ बोलूं। जी चाहे तो झूठ और सच दोनों को मिलाकर बोलूं।"

"आपका बादशाह बहुत बुद्धिमान मालूम होता है।" जुम्मी ने कहा।

"हाय ! हाय ! !" वह मनुष्य घबराकर बोला, "हुजूर बादशाह को गाली क्यों देते हैं ? उसके अगर किसी जासूस ने सुन लिया तो गज़ब हो जाएगा।"

"क्षमा कीजिए गलती हुई।" जुम्मी बोला, "मेरा मतलब है, मेरा मतलब नहीं है। मुझे मत क्षमा कीजिए, मुझसे कोई गलती नहीं हुई।"

"अब ठीक है।" मंत्री प्रसन्न होकर बोला, "आप कोशिश करेंगे तो झूठ बोलना सीख जाएंगे।"

विदेशमंत्री के बहुत कहने पर बच्चे बादशाह के महल को चल दिए। रास्ते में उन्होंने विदेशमंत्री को मना लिया। उन्हें क्योंकि झूठ बोलने की आदत नहीं है, इसलिए उनके लिए सच बोलने के राशन-कार्ड बनवा दिए जाएं।

मन्त्री बोला, "विदेशियों के लिए इसकी आवश्यकता नहीं है, बल्कि विदेशियों से तो हम यह आशा करते हैं कि वे हमसे सच ही बोलते रहें, चाहे हम उनसे कितना ही झूठ क्यों न बोलें।"

"इसका नाम डिप्लोमेसी है।" जुम्मी ने मुस्कराकर कहा।

"बेशक ! बेशक ! !" मंत्री ने सिर हिलाकर कहा, "वह मैं कर दूंगा।" विदेशमन्त्री ने वायदा किया, "मगर आप इतना वायदा तो कीजिए कि कम से कम हमारे बादशाह के सामने सच नहीं बोलेंगे, क्योंकि हमारे बादशाह झूठ बहुत पसन्द करते हैं।"

नाज़ बोली, "वायदा करते हैं।"

उर्फी एकदम चमककर बोला, "वाह, कैसे वायदा करते हैं? तुम तो हो ही झूठी। तुम्हारे लिए वायदा करना क्या कठिन है?" नाज़ उर्फी को चांटा मारने ही वाली थी कि पुतली ने बीच-बिचाव कर दिया और बच्चे आगे चले गए।

*पहुंचना बच्चों का झूठों के बादशाह के दरबार में और आश्चर्य-जनक वर्णन वहां के दरबारियों का * * **

प्यारे बच्चो ! मैं क्या हाल बताऊं झूठों के बादशाह के दरबार का ! वह इतना बड़ा दरबार था कि दरवाज़े में प्रविष्ट होकर बादशाह सलामत के चरणों तक पहुंचने में एक घंटा लगता था। बादशाह और दरबारी एक-दूसरे से माइक्रोफोन पर बात करते थे। बादशाह सलामत ने बहुत बढ़िया कपड़े पहन रखे थे, परन्तु दरबारियों के कपड़े फटे दिखाई दे रहे थे। झूठनगर के बादशाह सलामत की आज्ञा थी कि उनकी रियासत में कोई उनके सिवा अच्छे कपड़े न पहने, वरना बादशाह तथा उनकी प्रजा में क्या अन्तर रह जाएगा। इसी तरह प्रजा को न केवल अच्छे कपड़े पहनना, बल्कि अच्छा खाने, अच्छे मकान बनाने, यहां तक कि अच्छा सोचने की भी आज्ञा न थी। इस दरबार की छत इतनी ऊंची थी कि अगर दरबार की छत को देखो तो पगड़ी सिर से नीचे गिर पड़ती थी। इस दरबार में इतने फानूस थे, जितने आकाश पर तारे हैं। बादशाह का तख्त पन्ने का बना हुआ था। जब पृथ्वी के बच्चे बादशाह के दरबार में पहुंचे, तो उस समय बादशाह एक दरबारी को कोड़े लगा रहा था और दरबारी से पूछ रहा था—

"दर्द तो नहीं होता ?"

और दरबारी, जिसकी पीठ कोड़े खा-खाकर लहू-लुहान हो रही थी, बराबर कहे जा रहा था, "आ हा हा हा ! हुजूर और मारते जाइए और मारते जाइए। हुज़ूर, बहुत मज़ा आ रहा है।"

दरबार में सूली लगी हुई थी। वहां पर एक दरबारी कवि सूली पर चढ़ा हुआ बादशाह की शान में एक कविता पढ़ रहा था।

जब बच्चे दरबार के अन्दर आए तो चारों ओर से दरबारी कहने लगे, "लानत हो तुमपर पृथ्वी के रहने वालो !"

"तुमपर भी लानत है झूठनगर के वासियो !" उर्फी ने उत्तर दिया।

फिर विदेशमन्त्री ने सिर झुकाकर बादशाह से कहा, "ऐ, निर्दय झूठे बादशाह ! गोलाकार पृथ्वी के वासी तेरी सेवा में हाज़िर हैं।"

झूठों के बादशाह ने बच्चों की ओर बड़े ध्यान से देखा और फिर बोला, "बड़े बदसूरत बच्चे हैं !"

उर्फी ने यह प्रशंसा सुनकर झुककर सलाम किया और बोला, "बदसूरती तो आपपर खत्म है।"

जुम्मी ने कहा, "बादशाह सलामत के चेहरे पर थूकने को जी चाहता है ! हालांकि बड़ों ने कहा है, चांद का थूका अपने मुंह पर ही पड़ता है।"

"जिन लोगों ने यह बात कही है, वे बड़े मूर्ख थे।" बादशाह सलामत ने सिर हिलाकर कहा और फिर मुस्कराकर मन्त्री से बोले, "इन्हें महल के बाहर खड़ा करके भूखा मार दो।"

"इसका मतलब है," मन्त्री ने उत्तर दिया, "बादशाह सलामत ने फरमाया है, इन्हें महल के अन्दर ले जाकर खूब खाना

खिलाओ।"

"शुक्रिया !" उर्फी बादशाह सलामत की ओर देखकर मुस्कराया। फिर घबराकर बोला, "मेरा मतलब बिलकुल शुक्रिया नहीं ! हम जाते हैं। मेरा मतलब है, अभी हाज़िर होते हैं।"

"मगर यह तो बिलकुल हैदराबादी भाषा है।" मोहिनी चमककर बोली, "वहां भी तो यही कहते हैं। हैदराबाद में जब विदा होते हैं तो कहते हैं, 'अभी हाज़िर होता हूं।' "

विदेशमंत्री मुस्कराकर बोला, "हमारा कोई पुरखा पहुंचा होगा उस इलाके में। चलिए, आपको महल दिखा लाऊं।"

बादशाह का महल बड़ा सुन्दर था। दरवाज़े तथा दीवारें नीलम पत्थर के बने हुए थे। स्थान-स्थान पर सोने-चांदी के खंभे खड़े थे। महल की बुर्जियां और गुंबद और मीनार लाल और मूंगे के थे। पाइन-बाग में बड़े सुन्दर वृक्ष थे और उनपर सुन्दर पक्षी बैठे हुए चहक रहे थे। लान की हरी-हरी घास में एक सफेद कुत्ता बच्चों को देखकर भौंकने लगा। बड़ा ही प्यारा कुत्ता था ! मोहिनी को कुत्ते बहुत पसन्द थे। उससे न रहा गया। दौड़ी-दौड़ी उस कुत्ते के पास गई और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगी। थोड़ी देर के बाद जब कुत्ता दुम हिलाने लगा तो मोहिनी ने कुत्ते को अपनी गोद में लेना चाहा, मगर देखती है कि कुत्ता उसकी गोद में नहीं आया। जब उसने गौर से देखा, तो उस कुत्ते के पांव ज़मीन में गड़े दिखाई दिए।

"यह कुत्ता तो ज़मीन में गड़ा हुआ है !" मोहिनी घबराकर बोली।

मंत्री ने बताया, "गड़ा हुआ नहीं, उगा हुआ है।"

"हाएं!" नाज़ दौड़कर कुत्ते के पास जाकर देखने लगी। सचमुच कुत्ते के चारों पांव उगे हुए मालूम होते हैं।

मन्त्री ने समझाया, "हमारे यहां गाय, बैल, भेड़, बकरी सब जानवर ज़मीन से उगते हैं। न केवल पशु, बल्कि पक्षी भी। आपने उस चिड़िया को देखा! कब से उस डाली पर बैठी हुई चहक रही है, पर एक बार भी नहीं उड़ी।"

"हां सचमुच।" जुम्मी ने ध्यान दिया।

"यह चिड़िया वृक्ष पर उगी हुई है। हमारे यहां वृक्षों पर फल नहीं उगते, चिड़ियां उगती हैं। कोई बुलबुल का वृक्ष है, उसपर केवल बुलबुल उगते हैं। कोई कव्वे का पेड़ है, वहां केवल कव्वे उगते हैं। इसी प्रकार मोर का पेड़ है। वह देखिए मोर का पेड़।"

सचमुच आश्चर्यजनक संसार था यह। यहां जानवर ज़मीन पर उगते थे और पक्षी वृक्षों से लटकते थे। यहां न कोई पशु चल सकता था न कोई पक्षी उड़ सकता था। हां, इन पशु और पक्षिबों की शक्ल बिलकुल हमारी पृथ्वी के पशु और पक्षियों की तरह थी। बस, यह अंतर था कि यह पशु या तो ज़मीन पर उगे हुए थे या फूलों की तरह पक्षी डालियों पर लदे हुए थे। बाग में एक जगह दो-तीन गायें उगी हुई थीं और दूध दुहने वाले बड़े आराम से दूध दुह रहे थे।

"चांद की गाय इस लिहाज़ से तो बहुत अच्छी है। दूध दुहते समय लात नहीं मारती।"

"हां," मोहिनी बोली, "मेरे विचार में इस गाय को खेती

पृथ्वी पर भी की जानी चाहिए।"

"हमारी पृथ्वी पर तो पक्षी उड़ते हैं।" जुम्मी ने मन्त्री से कहा।

मन्त्री आश्चर्य से बोला, "आप सच कह रहे हैं कि झूठ?"

"सच।"

"असंभव!" मंत्री ने उत्तर दिया। असंभव है कि पक्षी उड़ सकें, पक्षी तो डालियों पर उगते हैं।"

"हमारे यहां तो जानवर भी चलते हैं। गाय, भैंस, बकरियां सब ज़मीन पर चलती हैं," नाज़ बोली, "हम मनुष्यों की तरह।"

मन्त्री की आंखें फटी की फटी रह गईं, "यह कैसे हो सकता है? ईश्वर के लिए इतना झूठ तो न बोलिए।"

उर्फी ने कहा, "और हम लोग कान से नहीं, मुंह से खाते हैं।"

"ओ हो हो!" मन्त्री हंसते-हंसते बेदम होने लगा।

"भई, झूठ की भी कोई हद होती है। मुंह से खाना खाते हो? हा हा हा······अरे मैं तो मर जाऊंगा······इतना झूठ तो न बोलो······ही ही ही······मैं बादशाह को बताऊंगा कि पृथ्वी के वासी तो चांदवासियों से भी ज्यादा झूठे हैं।"

"यह झूठ नहीं है जनाब, यह बिलकुल सच है," नाज़ क्रोधित होकर बोली, "हम लोग तुम्हारी तरह नहीं हैं। हम लोग सच बोलने के अभ्यस्त हैं और हमारे देश में केवल शासनकर्ता झूठ बोलते हैं।"

"केवल शासनकर्ता? हो हो हो!! बस नाज, इतना तो झूठ न बोलो—यानी इतना! यानी हम झूठों के सामने भी तुम

इतना झूठ बोलती हो। झूठ तो कानूनन हरएक को बोलना पड़ता है। बादशाह की आज्ञा से।"

"परन्तु हमारे यहां पृथ्वी पर कोई ऐसा नियम नहीं है जिस-में झूठ बोलना आवश्यक हो।"

मन्त्री ने सिर हिलाते हुए कहा, "बड़े चालाक हो तुम लोग। पृथ्वी का असल हाल मुझे नहीं बताते। कितना बड़ा झूठ है यह कि तुम्हारी पृथ्वी पर झूठ बोलना कानूनन आवश्यक नहीं! अरे, झूठ के बिना राज्य एक दिन नहीं किया जा सकता।...... क्या तुम! क्या तुम्हारी पृथ्वी होगी!......कल तुम कहोगी तुम्हारी पृथ्वी के फूलों पर लिपस्टिक नहीं लगाई जाती।"

"लिपस्टिक?" नाज़ आश्चर्य से बोली, "लिपस्टिक का फूलों से क्या संबंध है?"

"वह देखो।" मन्त्री ने बाग की एक क्यारी की ओर इशारा किया। उन लोगों ने मुड़कर देखा तो सचमुच बाग की एक क्यारी में, जहां सफेद फूल खिले हुए थे, वहां पर तीन माली हाथों में लिपस्टिक लिए हुए फूलों को लाल कर रहे थे।

"यह क्या मामला है?" जुम्मी ने आश्चर्य से पूछा।

"हमारे यहां यह प्रथा है," मन्त्री ने उत्तर दिया, "कि जब सफेद फूल बड़े हो जाते हैं तो माली उनकी पत्तियों पर लिप-स्टिक लगाते हैं।"

"मगर..." मोहिनी आश्चर्य से कहने लगी, "मगर हमारे यहां तो लिपस्टिक फूल नहीं लगाते, औरतें लगाती हैं।"

"औरतें! लिपस्टिक लगाती हैं?" विदेशमन्त्री आश्चर्य से चकराकर बोला, "आप तो झूठों की रानी चुनी जा सकती

हैं। देखिए…" और अब विदेशमन्त्री ने नाराज़ होना शुरू किया, "देखिए, आप लोग बेशक झूठ बोलिए, मगर इतना तो मत बोलिए। मैं आपसे कम से कम यह आशा तो रखता हूं कि आप मुझे गोलाकार पृथ्वी का ठीक-ठीक हाल बताएंगे।"

"हम बिलकुल ठीक कह रहे हैं।"

"आप बकवास कर रहे हैं। क्या मैं इतना मूर्ख हूं कि अभी तक यह न समझ सका कि सच क्या है और झूठ क्या है? आप चाहते हैं कि मैं यह विश्वास कर लूं कि पृथ्वी पर फूल नहीं बल्कि औरतें लिपस्टिक लगाती हैं? वहां जानवर उगते नहीं बल्कि मनुष्यों की तरह चलते हैं? और पक्षी उड़ते हैं? अजी आपने मुझे क्या समझ रखा है? मूर्ख? जाहिल? नालायक?" मारे क्रोध के मन्त्री के होंठों से झाग बहने लगा। उसने ज़ोर से ताली बजाई। उसी समय दस-बारह हृष्ट-पुष्ट गुलाम राइफलें लेकर हाज़िर हो गए।

मन्त्री ने उनसे कहा, "ये लोग झूठनगर में एक क्षण के लिए भी नहीं रखे जा सकते। इनके व्यवहार से हमारे लोगों का आचार खतरे में है। इसलिए इन्हें फौरन बांधकर किसी नाव में डालकर नदी में छोड़ दो।"

गुलाम बच्चों को गिरफ्तार करने के लिए आगे बढ़े। जुम्मी और उर्फी ने खूब जमके लड़ाई की। जुम्मी ने अपने फौलादी मुक्कों से कई गुलामों को ढेर किया। नाज़, मोहिनी और पुतली ने उर्फी और जुम्मी की बड़ी सहायता की; परन्तु ये लोग आखिर बच्चे थे, पकड़े गए। गुलामों ने इन सबको रस्सियों में बांधा और शहर से बाहर ले जाकर एक नाव में डालकर उसे नदी में

छोड़ दिया। बच्चे बेबसी से नाव में रस्सों से बंधे हुए पड़े थे और नाव नदी के तूफानी पानियों में घूमती हुई बहती हुई चली जा रही थी और झूठनगर बच्चों की दृष्टि से ओझल हो रहा था।

बच्चे नाव में बंधे पड़े थे। उन्होंने अपने को स्वतन्त्र करने का बहुत प्रयत्न किया, मगर झूठनगर के गुलामों ने उन्हें लोहे के मज़बूत रस्सों से इस प्रकार जकड़ दिया था कि जुम्मी, जो लोहे का बना हुआ था, वह भी अपना पूरा बल लगा लेने के बाद स्वतन्त्र न हो सका। थक-हारके बच्चे नाव में पड़े रहे और नदी कभी धीरे, कभी तेज़ बहती रही।

सुबह बीत गई। दोपहर आने लगी। सूरज सिर पर चमकने लगा। मोहिनी और नाज़ भूख और प्यास से परेशान होकर रोने लगीं।

मोहिनी बोली, "उर्फी भैया बेकार ही हमें चांद में ले आए। एक निगोड़ी फाख्ता के लिए।"

नाज़ बोली, "हाय, यह धूप तो हमें झुलसा देगी!"

पुतली बोली, "अरे, मैं तो अपने मोतियों के शहर में कैसे आराम से थी! अरे लोगो, देखो, मेरा शरीर मानो ज्वर से तप रहा है।"

"ज्वर नहीं मूर्ख लड़की! यह धूप की गर्मी है।" जुम्मी धीरे से बोला।

"जाहिल तुम! मूर्ख तुम!" पुतली ने फौरन क्रोध में आके कहा।

उर्फी ने कहा, "आपस में झगड़ने से क्या फायदा! अब हमें

अपने-आपको स्वतन्त्र करने का प्रयत्न करना चाहिए।"

"कैसे ?"

"सब मिलकर आवाज़ दें, 'अरे लोगो, हमें बचाओ, हमें बचाओ। हम डूबे जा रहे हैं।' " उर्फी ने उत्तर दिया।

पुतली बोली, "नाज़! यह तो झूठों का देश है। यहां हमारी बात का विश्वास कौन करेगा ?"

"तो हम कहेंगे," जुम्मी ने सोचकर कहा, "अरे लोगो ! हमें मत बचाओ। हम बड़े मज़े में हैं।"

नाज़ बोली, "मगर यह भी तो हो सकता है कि हम लोग झूठों के देश से बाहर आ गए हों और कोई हमारी बात का विश्वास तक न करे।"

"अजीब मुसीबत है !" मोहिनी रुआंसी होकर बोली, "मुझे तो भूख लग रही है।"

उर्फी ने कहा, "मैं समझता हूं—हम सब मिलकर शोर मचाएं, कोई न कोई अल्लाह का बंदा तो हमारी मदद को आएगा।"

बहुत देर तक बच्चे नाव में बंधे शोर मचाते रहे, मगर कोई उनकी सहायता को न आया। बच्चे चिल्लाते-चिल्लाते चुप हो गए। धूप बहुत तेज़ हो गई। नदी का पानी धीरे-धीरे बहने लगा। बच्चे भूख और प्यास से बेहोश होने लगे। थोड़ी देर में उर्फी को आकाश में एक बाज़ दिखाई दिया जो हवाई जहाज़ की तरह बड़ा था।

"अरे देखो, कितना बड़ा उकाब है !" नाज़ आश्चर्य और भय से चिल्ला पड़ी।

बाज़ चक्कर लगाता हुआ आकाश से नीचे उतरने लगा। कई गज़ लम्बी तो उसकी चोंच थी और सैकड़ों फीट तक उसके फैले हुए पर थे और उसके भयानक पंजे किसी भयंकर लोहे के क्रेन के शिकंजे की तरह दिखाई दे रहे थे। बाज़ चक्कर लगाते हुए नाव के सिर पर आ गया। अब ऐसा लगा मानो काली बदली आकाश पर फैल गई हो।

"या अल्लाह, अब क्या होगा!" नाज़ भय से बोली। उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

बाज़ ने एक ज़ोर का झपट्टा मारा और अपने पंजे में नाव को एक तिनके की तरह उठा लिया। अब बाज़ आकाश पर बहुत-बहुत ऊपर उड़ गया। नाव उसके पंजे में लटक रही थी। जहां बच्चे नाव में बैठे थे, वहां से वे लोग केवल बाज़ के फैले हुए काले पर देख सकते थे और उसका गर्व से तना हुआ सफेद वक्ष। बाज़ की आंखें एक घड़े जितनी बड़ी थीं और आग की तरह लाल नज़र आती थीं। पुतलो बोली, "मुझे तो इसकी आंखों से बड़ा डर लगता है। कैसी भयानक आंखें हैं इसकी!"

जुम्मी, जो नाव की एक ओर बंधा हुआ था और इसलिए ज़रा गरदन मोड़कर नीचे देख सकता था, बोला, "इस वक्त अगर यह बाज़ हमें छोड़ दे, तो चांद की धरती पर हम लोग गिरकर इस तरह टुकड़े-टुकड़े हो जाएं कि हमारा अंजर-पंजर तक न मिलेगा।"

अभी यह बात जुम्मी के मुंह में ही थी कि बाज़ ने नाव को अपने पंजे से छोड़ दिया। नाव डगमगाती हुई, चक्कर खाती हुई, ऊपर-नीचे होती हुई बहुत तेज़ी से नीचे गिरने लगी। अगर वे

लोग नाव से बंधे न होते तो अब तक सबके सब ज़मीन पर गिरकर मर गए होते। परन्तु बाज़ बहुत तेज़चाल था। वह बिजली की तेज़ी से नीचे गया और इससे पहले कि नाव ज़मीन पर गिरे, उसने उसे फिर अपने पंजे में दबा लिया और फिर आकाश की ओर उड़ने लगा।

बच्चों का सांस हवा में अटक गया था। उर्फी ने रुकते-रुकते कहा, "मौत आ गई थी।"

जुम्मी बोला, "मेरी तो बैटरी डाउन हो गई थी।"

पुतली बोली, "मगर इससे इस बात का पता चलता है, यह बाज़ बुद्धिमान जानवर है। हमारी बात समझता है।"

मोहिनी ने कहा, "जाने यह मुआ हमें किधर उड़ाए लिए जा रहा है?"

अकस्मात् बादलों की एक गरज-सी पैदा हुई। यह बाज़ बोल रहा था, "मैं आपको सम्राट उकाब के सम्मुख ले जा रहा हूं।"

सारा दिन बाज़ उस नाव को पंजे में दाबे पश्चिम दिशा की ओर उड़ता रहा। उसके उड़ने की चाल सात सौ मील फी घंटे के हिसाब से क्या कम होगी! परन्तु इस बीच में उसने एक बार भी अपने परों को आराम नहीं दिया। अन्त में जब सन्ध्या का समय हुआ और सूर्य पश्चिम को जाने लगा, तो बाज़ ने अपनी चाल कम की और वह धीरे-धीरे उतरने लगा।

उर्फी ने जुम्मी से कहा, "तुम किनारे पर बंधे हो। नीचे देखके बताओ कि हम कहां हैं।"

जुम्मी ने नीचे देखकर कहा, "यह तो मैं नहीं बता सकता

कि हम कहां हैं ? मगर हम नीचे उतर रहे हैं। चारों ओर बड़े भयानक पहाड़ नज़र आते हैं, जिनकी सीधी खड़ी चट्टानों पर बड़े-बड़े आलीशान महल खड़े हैं। पहाड़ों से नीचे एक खूबसूरत घाटी है, मगर इस घाटी में एक भी खेत नहीं है। जिधर देखो, जंगल ही जंगल दिखाई देता है। हा···नहीं, नहीं···अब खेत नज़र आने लगे। अरे, यहां तो नहरें भी हैं ! इसका मतलब है, यहां पर खेती-बाड़ी करने वाले लोग रहते होंगे।"

इसके बाद जुम्मी कुछ बोल न सका, क्योंकि अब बाज़ बहुत जल्दी-जल्दी चक्कर खा रहा था और नाव इधर-उधर उसके पंजे में डोल रही थी। एकाएक बाज़ ने चोंच नीची करके वातावरण में एक डुबकी-सी लगाई और सांय-सांय करता हुआ एक बहुत बड़े दरवाज़े के अन्दर से मानो तैरता हुआ निकल गया और सीधे एक तख्त के नीचे जाकर रुक गया। उसने अपना पंजा ढीला छोड़ दिया और नाव गिरते-गिरते एक चट्टान से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गई। लकड़ी की नाव थी, उसके टुकड़े होते ही लोहे की ज़ंजीरें ढीली हो गईं और बच्चे कुसमुसाते हुए उनमें से बाहर निकल आए और इधर-उधर देखने लगे। सामने एक बहुत ऊंची तख्त की तरह की चट्टान पर भयानक उकाब बैठा था। वज़न और शरीर में बाज़ से दुगना-तिगुना मालूम हो रहा था। उसी तख्त के पीछे शाही झंडा लहरा रहा था, जिसपर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा था—

"तू बाज है बसेरा कर चट्टानों पर"

बाज़ ने बच्चों से कहा, "बा अदब बा मुलहज़ा होशियार ! शाहंशाह उकाब सिंहासन पर विराजमान हैं। झुककर दंडवत

करो।" बच्चों ने झुककर प्रणाम किया।

सम्राट उकाब पत्थर की एक बहुत बड़ी तिपाई पर एक बहुत बड़ी तश्तरी में कुछ रखे हुए था और बार-बार तश्तरी की ओर झुककर चोंच से कुछ ठूंगता जाता था। तश्तरी में मक्खियों के भिनभिनाने की सी आवाज़ पैदा हो रही थी।

"तश्तरी में क्या है?" मोहिनी ने ज़रा दिलचस्पी से पूछा।

सम्राट उकाब ज़ोर से हंसा। उसने अपनी चोंच बढ़ाकर उर्फी को ठूंग लिया। फिर उसे पत्थर की बड़ी तश्तरी में ले जाकर छोड़ दिया।

उर्फी देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उस तश्तरी में पचास-साठ इन्सान होंगे। इन्सान तो न थे। इन्सान की तरह जानवर थे जिनका कद मुश्किल से दस इंच होगा। मगर शक्ल-सूरत और चलने में बिलकुल इन्सान दिखाई देते थे। वही आंखें, वही बाल, वही बांहें, वही टांगें।

भय और आश्चर्य से उर्फी की घिग्गी बंध गई। कुछ देर तक वह उन्हें आंखें फाड़े देखता रहा। अन्त में उससे रहा नहीं गया। बोला, "आप इन्सान हैं?" वे लोग भी उसे ध्यान से देखते रहे। अन्त में उनमें से एक आदमी जो शक्ल-सूरत से वृद्ध जान पड़ता था, बड़े दुःखी स्वर में बोला, "हां, कभी हम भी इन्सान थे।"

"मगर आपकी यह दशा कैसे हो गई? इतना छोटा कद आपका कैसे हो गया? या शुरू ही से आप लोग ऐसे थे?"

"नहीं भाई!" वह बूढ़ा बोला, "कभी हम भी तुम्हारी ही तरह कद वाले इन्सान थे। यह सारी घाटी हमारी थी। इस

Sohan Lal wagri

देश पर हमारा राज था। मगर···"

इसके आगे वह बूढ़ा कुछ न कह सका, क्योंकि उकाब उसे अपनी चोंच में ठोंगकर साबुत और पूरा ही निगल गया। उसके बाद उसी चोंच से सम्राट उकाब ने उर्फी को तश्तरी से उठाकर वापस बच्चों में रख दिया। नाज़ तो भय से चीख़-सी उठी थी। उसका ख्याल था, उर्फी को उकाब खा जाएगा।

सम्राट ने बाज़ से पूछा, "ये इन्सान तुम्हें कहां से मिले? ये तो हमारे देश के इन्सान नहीं मालूम होते। ये तो बड़े मोटे-ताज़े इन्सान हैं और इनमें कुछ औरतें भी हैं।"

बाज़ बोला, "हुज़ूर! मैं सीमा पर उड़ रहा था कि झूठों के देश से जो नदी बहती हुई समुद्र को जाती है, उस नदी में एक बहती हुई नाव में ये लोग बंधे पड़े थे।"

सम्राट ने पूछा, "तुम लोग कहां से आए हो?"

उर्फी ने कहा, "पृथ्वी के ग्रह से।"

"अच्छा, अच्छा। समझ गया।" सम्राट उकाब बोला, "यह पृथ्वी जो हमारे चांद के चारों ओर चक्कर खाती है।"

जुम्मी ने कहा, "पृथ्वी नहीं, चांद हमारी पृथ्वी के चारों ओर चक्कर खाता है।"

"क्या बकते हो?" उकाब क्रोध से बोला, "तुम्हारी पृथ्वी तो बस इतनी-सी है, जितना एक बड़ा गोला। वह हमारे चांद का क्या मुकाबला कर सकती है! चांद तो पृथ्वी से बहुत बड़ा है।"

"चांद नहीं, पृथ्वी बड़ी है।"

"नहीं, हमारा चांद बड़ा है। साफ बड़ा मालूम होता है। अरे, तुम उस ज़लील पृथ्वी के रहने वाले हो, जिसे हर वर्ष ग्रहण

लगता है !"

"अजी जनाब !" मोहिनी उंगलियां नचाकर बोली, "हमारी पृथ्वी को नहीं आपके चांद को हर साल ग्रहण लगता है।"

"ज्यादा बढ़-बढ़के बात करोगी तो खा जाऊंगा।"

उकाब ने अपनी चोंच खोली और मोहिनी की आंखों के सामने एक कुआं-सा खुल गया, जिसके अंधकार में एक लाल-लाल कई गज़ लम्बी जीभ मोहिनी के रक्त की प्यासी मालूम होती थी। मोहिनी डर के मारे पीछे हट गई।

सम्राट उकाब ने बाज़ से कहा, "इन्हें ले जाकर जेल में बन्द कर दो। सुबह नाश्ते पर हम इन्हें खाएंगे। मैं मर्दों को खाऊंगा। महारानी साहिबा औरतों को खाएंगी। कल सुबह नाश्ते पर हम इन्हें बताएंगे कि ज़मीन बड़ी है या चांद; इन्सान बड़ा है या उकाब। हा हा हा !"

इसके बाद सम्राट उकाब ने जो अपनी चोंच चलाई तो कुछ क्षणों ही में उसने इन्सानों से भरी हुई तश्तरी को खाली कर दिया और उड़कर अपने महल में चला गया। शाहंशाह के जाने के बाद बाज़ ने कुछ मनुष्य की तरह बालिश्तियों को आज्ञा दी कि वे इन पृथ्वी के इन्सानों को ले जाकर शाही जेलखाने में बन्द कर दें।

थोड़ी देर में लकड़ी की एक बहुत बड़ी बन्द गाड़ी आई जिसके आगे कई सौ बालिश्तिये इन्सान घोड़ों की तरह जुते हुए थे। बाज़ ने उर्फी, नाज़, मोहिनी, पुतली, जुम्मी सबको बारी-बारी से अपनी चोंच में उठाकर बन्द गाड़ी का दरवाज़ा खोलकर उसमें रखा और फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया। एक बाज़ का बच्चा कोड़े

मार-मारकर गाड़ी चलाने लगा और बालिश्तिये इन्सान गाड़ी ढकेलते हुए उसे जेलखाने की ओर ले गए।

रात-भर बच्चों को जेलखाने में नींद नहीं आई। और आती भी कैसे ? सुबह उन्हें नाश्ते पर अपनी मृत्यु दिखाई दे रही थी। जेल का बालिश्तिया चौकीदार उनके खाने के लिए बहुत-सी घास छोड़ गया था। पहले तो बच्चों को ध्यान न आया कि यह घास उनके लिए है ; परन्तु जब उन्होंने एक बालिश्तिये कैदी को जो उनके कमरे में कैद था, घास खाते देखा तो हैरान होकर बोले—

"तुम लोग इन्सान होकर घास खाते हो ?"

"और क्या खाएं ?" वह बालिश्तिया आश्चर्य से बोला।

"रोटी खाओ।"

"रोटी ?...रोटी क्या होती है ?"

इस बालिश्तिये के समीप एक वृद्ध सफेद दाढ़ी वाला बैठा था। रोटी का नाम सुनकर वह चौंक पड़ा। उसका सारा शरीर कांपने लगा। थोड़ी देर के बाद वह बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। उर्फी, जुम्मी, मोहिनी, नाज़ सबने उसे बहुत धैर्य बंधाया। उससे उसके रोने का कारण पूछा। वृद्ध ने कहा, "यह बड़ी भयानक कहानी है। मगर तुम्हें इसलिए सुनाता हूं कि शायद तुम लोग किसी तरह इस जालिम उकाब के पंजों से बचकर अपने घर को लौट सको और वहां के रहने वालों को शिक्षा दे सको।

"प्यारे दोस्तो ! कभी हम बालिश्तिये मनुष्य भी तुम्हारी तरह पूरे कद के इंसान थे। कभी हम भी स्वतन्त्र थे। इसी घाटी में

हरदम हमारी स्वतंत्रता रहती थी। स्वतंत्रता और शासन, न्याय और सत्यता का यहां पर राज्य था। इस घाटी में सारे मनुष्य एक-दूसरे की सहायता करते थे, एक-दूसरे की भलाई के लिए जीते थे। हमारी घाटी में हत्या, डाके, चोरी का नाम-निशान न था। इस घाटी की धरती बहुत उपजाऊ है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पेट भर खाने को मिल जाता था…इसलिए कोई किसीको देखकर जलता न था…इसलिए हमारी सरकार के पास कोई फौज न थी, और फौज न थी इसलिए कोई हथियार भी न थे। पांच हज़ार वर्ष तक इसी प्रकार हमारे देशवासी खेती-बाड़ी करते रहे और आराम और चैन से रहते रहे।

"फिर ईश्वर की क्या इच्छा हुई कि हमारे देश में दो जानवर आए। एक अपने-आपको उकाब कहता था, दूसरा बाज़। ये दोनों बड़े भयानक जानवर थे और हर समय लड़ते रहते थे। इससे पहले हमारी घाटी में किसीने बाज़ और उकाब को न देखा था, इसलिए हमने ज़रा बड़ी जाति के पक्षी समझकर इनके सामने अनाज डाला तो उन्होंने घृणा से मुंह फेर लिया और बोले, 'हम बाज़-बच्चे हैं। हम अपना शिकार खुद करते हैं।' इसके बाद ये दोनों ऊपर उड़ गए आकाश में और चकरियां खाते रहे। अंत में एक झपट्टा मारकर उकाब ने मनुष्य के एक बच्चे को पंजे में उठा लिया, जिसे पैदा हुए अभी दो दिन हुए थे। उसे अपनी चोंच से नोच-नोचकर खा गया। बाज ने भी ऐसा ही किया। इनकी इस निर्भीकता, साहस और वीरता को देखकर हमारे नवयुवकों के दिलों पर बहुत असर हुआ और सारी जाति दो भागों में बंट गई। एक समूह उकाब की पूजा करने लगा,

दूसरा बाज़ की। आपस में लड़ाई-झगड़े, रक्तपात बढ़ता गया। ज़मीनों पर, वृक्षों पर, खेतों पर, हवा और पानी पर झगड़े बढ़ते-बढ़ते भयानक जंगलों की शक्ल में बदल गए। पांच सहस्र वर्ष इसी वादी में लड़ाइयां होती रहीं। इस बीच में हम बराबर उकाब या बाज़ की पूजा करते रहे और इन्हें पवित्र जानकर पालते रहे। हम लड़ाई से गुलामों का रक्त और मांस इनकी भेंट करते रहे। उकाब और बाज़ इन्हें खा-खाकर फैलते गए। मोटे और भयानक होते गए। अंत में एक दिन वह आ गया जब उकाब और बाज़ के वंश ने मनुष्य को नीचे दबा लिया। उस दिन से इस वादी में उकाब और बाज का राज है। ये लोग हमें पालते हैं और खाते हैं। मनुष्य-जाति निर्बल होते-होते बालिश्तों से भी घटती जा रही है। हम लोग अब खेती-बाड़ी नहीं कर सकते, क्योंकि उकाब हमें आकर खेतों से अपनी चोंच में दबाकर खा जाते हैं। सारी वादी पर एक घना जंगल उग आया है और हम उसकी लम्बी-लम्बी घास में छिपकर अपनी जान बचाते फिरते हैं और कल सुबह नाश्ते पर मेरी बारी है।" बूढ़ा भय से रोने लगा। यह कथा सुनकर मोहिनी, नाज़ और पुतली का जी भर आया। वे भी रोने लगीं।

जुम्मो ने कहा, "मगर बाज़ का काम तो कबूतरों पर झपटना था..."

उर्फी बोला, "भई जब कबूतरों पर झपटने में मज़ा न रहे तो इंसानों की बारी आ जाती है और अगर मजा झपटने ही में है तो यह झपटना कबूतरों तक ही क्यों सीमित रहे?"

"तुम्हारी बुद्धिमानी बेमौके है यहां!" वह वृद्ध उर्फी से

कहने लगा, "कल सुबह तुम भी उकाब के नाश्ते में होगे...।"

"दुआ कीजिए बड़े भाई !" जुम्मी बोला, "हम निर्बोध बच्चे हैं। हम तो एक छोटी-सी फाख्ता की खोज में आए हैं, यहां और हम किसीका बुरा नहीं चाहते। इसलिए हमारा बुरा कोई क्यों चाहेगा ?"

"और अगर कोई चाहे ?" वृद्ध ने पूछा।

"तो वह अपने किए का दण्ड पाएगा।" जुम्मी ने बड़े ठोस लहजे में कहा और उसकी हाथों की उंगलियां फौलादी मुक्के में तन गईं।

बच्चों की वह रात न सोते में कटी न जागते में। कुछ अजीब-सी दशा थी। इसपर जुम्मी ने सोच-सोचकर बच्चों को काम पर लगा दिया। जिस जेलखाने के कमरे में वे कैद थे, उसकी दीवारों पर बहुत-से रस्से लटके हुए थे, जिनसे कैदियों को बांधकर पीटा जाता था। जुम्मी ने ये सब रस्से दीवारों पर से उतरवा लिए और उन्हें जोड़कर एक लम्बा रस्सा तैयार कर लिया। जब यह रस्सा तैयार हो चुका तो जुम्मी ने हरएक से कहा कि वे बारी-बारी कुछ गज़ की दूरी छोड़कर इस रस्से को अपनी कमर के चारों ओर लपेट लें और गांठ लगा लें। रस्से के आरंभ में ही सबसे पहले जुम्मी आया। उसके बाद नाज़, फिर मोहिनी, फिर पुतली और सबसे अंत में उर्फी। जब सब बच्चे बारी-बारी से एक ही रस्से में बंध गए, तो जुम्मी ने सबको आराम से सो जाने को कहा। मगर यहां नींद किसको आती थी ! उकाब की तेज़ और जानलेवा चोंच हर समय आंखों के आगे घूमती थी।

जब सुबह हुई और सूर्य उदय हुआ तो कारावास का दरवाज़ा खुला और बच्चों को वापस उसी लकड़ी की गाड़ी में सवार कराके उकाब के सामने एक बड़ी थाली में रख दिया गया।

उकाब ने हंसकर जुम्मी से पूछा, "रात कैसी कटी ?"

जुम्मी ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया, "हम लोग बड़े आराम से सोए।"

उकाब ने हंसकर कहा, "अभी थोड़ी देर में आप हमेशा के लिए सो जाएंगे।"

"हम आपको शांति का संदेश देने आए हैं। आप बहुत बड़े उकाब हैं। यह आपको शोभा नहीं देता कि गरीब मनुष्यों पर अत्याचार करें।"

उकाब ने कहा, "जब एक बलवान एक निर्बल पर प्रभुत्व पाता है, तो इसमें किसी तरह अत्याचार का प्रश्न नहीं उठता। संसार इसी प्रकार चलता है।"

जुम्मी ने कहा, "संसार दूसरे तरीके से भी चल सकता है और ज्यादा अच्छी तरह से चल सकता है।"

उकाब ने चोंच में जुम्मी को उठा लिया। जुम्मी के साथ-साथ दूसरे बच्चे भी रस्सी में बंधे हुए लटके नज़र आए।

उकाब ने पूछा, "यह रस्सा क्यों बांध रखा है ?"

जुम्मी ने कहा, "बस, यही सोचा कि जब तक जिएं साथ जिएं। जब मरें तो साथ मरें।"

उकाब ने चोंच से एक झटका दिया तो जुम्मी उसकी चोंच के अन्दर चला गया। जुम्मी ने अन्दर जाते ही अपने दोनों लोहे

के बाज़ू फैला दिए और दूसरे झटके में नाज़ और मोहिनी अन्दर आ गईं। तीसरे झटके में पुतली और उर्फी। अब सब बच्चे चोंच के अन्दर थे। परन्तु जुम्मी ने क्योंकि अपने लोहे के हाथ फैला रखे थे, इसलिए उकाब को बच्चों के निगलने में कष्ट महसूस हो रहा था। जुम्मी ने कहा, "जल्दी से मेरी बात सुन लो। उकाब की चोंच से बाहर हम उकाब का सामना नहीं कर सकते थे, परन्तु उकाब का मुकाबला हम उकाब के अन्दर से ही कर सकते हैं।"

"वह कैसे ?"

जुम्मी ने कहा, "उकाब हमें निगलने का पूरा प्रयत्न कर रहा है। इसकी चोंच की हड्डी लोहे की तरह कठोर है। इसने हमें अगर अपनी चोंच में दबाकर पीस दिया तो हम यहीं मर जाएंगे। इसलिए आप लोग मेरे पीछे-पीछे आइए। ज्योंही मैं अपना हाथ छोड़ दूंगा, उकाब अपनी चोंच चलाएगा। उसी क्षण हम लोग उसके पेट की नाली में कूद जाएंगे।"

एक, दो, तीन कहकर जुम्मी ने अपने हाथ छोड़ दिए और रस्से को जोर से झटककर पेट की नाली में कूद गया। रस्सी के झटके से नाज़, मोहिनी, पुतली और उर्फी सब नाली में कूद गये।

कुछ क्षणों तक तो इन्हें ऐसा लगा जैसे वे किसी गुफा के अन्दर कूद गए हैं। किसी गहरे कुएं में छलांग लगा गए हों। कुछ क्षणों तक तो उनके पांव कहीं न लगे। फिर उन्हें ऐसा लगा, जैसे वे किसी गहरी झील में गिर गए हों।

जुम्मी ने तैरते हुए कहा, "यह उकाब का पेट है। मैं इसे

अपनी फौलादी उंगलियों से फाड़ देता हूं।"

"हाय, हाय !" उकाब चिल्लाया, "यह मेरे पेट में क्या हो रहा है ?" मारे दर्द के वह लोट-पोट होने लगा।

पेट के अन्दर बच्चे ऊपर-नीचे होने लगे, परन्तु जुम्मी बड़े साहस से अपना काम करता रहा। पुतली भी तांबे की थी। बड़े साहस से उसका हाथ बंटाती रही। जुम्मी और पुतली ने मिलकर पेट को फाड़ दिया और उकाब के हृदय के अन्दर ही अन्दर से टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उसके अन्दर के मांस और झिल्लियों को चीरते हुए उकाब के शरीर से बाहर आ गए। उनकी आंखों के सामने उकाब तड़प-तड़पकर मर गया।

जुम्मी ने कहा, "हर निर्दयी ऊपर से बहुत कठोर दिखाई देता है, परन्तु अन्दर से बड़ा कमज़ोर होता है।"

फिर जुम्मी ने बाज़ से कहा, "क्या विचार है, आप हमें खाएंगे ?"

बाज़ जो आश्चर्य से इस सारे दृश्य को देख रहा था, चुपचाप चोंच खोले जुम्मी की ओर देखता ही रह गया। जीवन में पहली बार उसकी आंखों में भय की चमक पैदा हुई। जब उसने अपने सम्राट उकाब की लाश देखी तो उसने अपनी चोंच नीचे गिरा ली और बच्चों की ओर पीठ कर ली।

जुम्मी ने कहा, "नहीं, नहीं, आप हमें खा लें। हम हाज़िर हैं।"

बाज़ ने अपने पर खोले और कहा, "अब मैं जाता हूं। अब मैं यहां कभी नहीं आऊंगा।"

यह कहकर वह हवा में उड़ गया और शीघ्र ही दृष्टि से

ओझल हो गया।

सारी घाटी में उकाबों की पराजय का समाचार आग की तरह फैल गया। वनों में जहां-जहां मनुष्य छिपे बैठे थे, स्वतंत्रता का नारा लगाते हुए बाहर निकल आए और बच्चों को धन्यवाद देने लगे। जेलखाने के दरवाज़े खोल दिए गए और खेतों में, जहां वर्षों से गेहूं का एक दाना न बोया गया था, वहां फिर से हल चलने लगे।

वृद्ध ने जुम्मी और बच्चों को धन्यवाद देते हुए कहा, "गुलामी ने हमें बौना बना दिया था, परन्तु शीघ्र ही हम लोग फिर से मनुष्यों का कद पा लेंगे।"

सात दिन तक वादी में स्वतंत्रता का उत्सव मनता रहा। सात दिन तक बच्चे इस घाटी के अतिथि रहे। सात दिन के बाद—

उर्फी ने उस वृद्ध से पूछा, "अब हमें आज्ञा दीजिए। हम तो यहां शांति की फाख्ता की खोज में आए थे। आपको मालूम है, वह कहां होगी ? आपकी वादी में किसीने उसे देखा है ?"

वृद्ध ने कहा, "एक फाख्ता आई तो थी। उसका गीत खूबसूरत था और उदास था और जब हमने उसकी आवाज़ सुनी तो हमारी आंखों में आंसू आ गए और हमारे दिल में उस ज़माने की तस्वीर आई जब हम आज़ाद थे। वह एक रात हमारे जेलखाने में भी आई थी, क्योंकि उसके लिए कहीं पर कोई दीवार नहीं है और कोई दरवाज़ा उसके लिए बन्द नहीं है। हमने रो-रोकर उससे रुक जाने के लिए कहा, परन्तु वह नहीं रुकी। उसने कहा कि तुम्हारी वादी में अत्याचार और युद्ध का राज है और जहां

अत्याचार और गुलामी हो, वहां मैं नहीं रह सकती। इसलिए वह यहां नहीं रुकी और दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान कर गई।"

"दक्षिण दिशा की ओर कौन-सा देश है?" उर्फी ने पूछा।

"दक्षिण की ओर मत जाओ," वृद्ध ने घबराकर कहा, "दक्षिण में कहते हैं, जादूगरों का राज है जो हर बाहर से आने वाले को मंत्र पढ़कर पत्थर बना देते हैं। वहां जो गया, आज तक वापस नहीं आया।"

उर्फी ने कहा, "अगर फाख्ता उधर गई है तो हम भी जाएंगे। जिस काम के लिए घर से निकले हैं, उसे पूरा करके रहेंगे।"

जब बच्चे किसी तरह नहीं माने और वृद्ध के समझाने पर भी उन्होंने फाख्ता की तलाश में जादूगरों के देश में जाने की ठान ली तो उकाब घाटी के लोगों ने हमारी पृथ्वी के बच्चों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया, जिन्होंने पृथ्वी से चांद में वहां के लोगों को गुलामी से छुटकारा दिलवाया था। उन्होंने अपने अतिथियों को अपनी रियासत की सीमा तक पहुंचाने के लिए सात घोड़ों वाले रथ तैयार किए और उनमें खाने का बहुत-सा सामान रखा और बच्चों को बहुत-से इनाम देकर अपने यहां से विदा किया।

रथ पांच दिन और पांच रात उकाब घाटी में से गुज़रते रहे। अन्त में सीमा आ गई। सीमा पर आकर रथ रुक गए। यहां पर उकाब वादी समाप्त हो जाती थी और वादी के साथ-साथ लहलहाती हुई हरियाली भी। अब बच्चों के सामने उजाड़ रेगिस्तान थे। जिनका दूसरा सिरा नज़र न आता था, परन्तु

इस रेगिस्तान में मिट्टी की रेत न थी। चारों ओर, जिधर दृष्टि जाती थी, चांदी की रेत बिछी नज़र आती थी। मोहिनी ने अपनी मुट्ठी में रेत लेकर सबको दिखाई और खुशी से चिल्ला-कर बोली, "यह तो चांदी की रेत है। देखो!!"

उर्फी ने पूछा, "इस स्थान को क्या कहते हैं?"

वृद्ध सारथी ने कहा, "यह चन्द्रमा का रेगिस्तान है और जहां पर यह रेगिस्तान समाप्त होता है वहां से जादूगरों का देश आरम्भ होता है।"

"इस रेगिस्तान को पार करने में कितने दिन लगेंगे?"

"सात रातों की यात्रा के बाद जादूगरों का देश आएगा। परन्तु जादूगरों के देश में हम लोग नहीं जा सकते और न ही वे लोग हमारी वादी में आ सकते हैं। हां, इन दोनों देशों के बीच में यह जो रेगिस्तान है, इसे खास-खास मौकों पर दोनों देशों के लोग व्यवहार में ला सकते हैं, परन्तु इसके आगे हम लोगों को अपने रथ के आगे चांद का झण्डा लटकाना होगा और केवल रात में यात्रा करनी होगी।"

"सिर्फ रात में क्यों?" मोहिनी ने पूछा।

"क्योंकि रात में जादूगरों का जादू नहीं चलता। सिर्फ दिन में चलता है।"

सात रातों की यात्रा के बाद बच्चे जादूगरों के देश की सीमा पर पहुंच गए। अभी कुछ रात बाकी थी। सुबह हुई न थी। सामने जहां चन्द्रमा का रेगिस्तान समाप्त होता था, वहां पर एक बहुत बड़ा दरवाज़ा बना हुआ था जिसमें चमकदार शब्दों में लिखा था—

जादूगरों का देश

हमारे देश में प्रवेश करने के लिए नीचे लिखी हुई शर्तें ध्यान से पढ़िए—

१. बिना आज्ञा अन्दर आना मना है।
२. बिना आज्ञा अन्दर आने वालों को मक्खी बना दिया जाएगा।
३. माचिस की डिबिया या सिगरेट-लाइटर या ऐसी कोई वस्तु, जिससे आग लगती हो, वहीं कस्टम्ज़ पर ज़ब्त कर ली जाएगी।
४. दिन में आप हर जगह घूम सकते हैं, परन्तु रात को पुलिस की हवालात में सोना होगा।
५. जितने दिन रहना हो, उतने दिन का खाना साथ लाइए।
६. प्रवेश करने के लिए किसी एक न एक जादू का जानना आवश्यक है। जादू न जानने वालों को कान घुमाकर खरगोश बना दिया जाएगा।
७. औरतों को जादू जानने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हर औरत जादूगर होती है। इसलिए उनका प्रवेश फ्री है।

आज्ञानुसार—

सरदार आला देश जादूगरी

"आहा ! मज़ा आ गया," मोहिनी आज्ञापत्र पढ़कर बोली, "हम औरतों के लिए कोई जादू जानने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु तुम पुरुषों ने अगर कोई जादू न बताया, तो जादूगरों के देश में प्रवेश तक न कर सकोगे।"

"देखा जाएगा।" उर्फी क्रोध में बोला। "चलो, आगे बढ़ो !" उर्फी ने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ठहरो !"

बच्चों ने आश्चर्य से देखा। सामने एक साधु-शक्ल का व्यक्ति एक हाथ में भिक्षा का पात्र, दूसरे हाथ में मोतियों की माला लिए खड़ा था। उसकी सफेद दाढ़ी घुटनों तक आती थी और उसने चांदी के कपड़े का चोगा पहन रखा था और उसके पांव नंगे थे, परन्तु उसके पांव देखकर नाज़ के मुंह से आश्चर्य की एक चीख निकल गई क्योंकि उस साधु के पांव नंगे थे, परन्तु पत्थर के बने हुए थे।

"यह क्या माजरा है ?" उर्फी आश्चर्य से साधु की ओर देखकर बोला।

"बेटा !" साधु ने उसे अपनी रामकहानी सुनाते हुए कहा, "सौ वर्ष का समय हुआ, जिस वन से तुम निकलकर आए हो, यह एक लहलहाता हुआ हरा-भरा इलाका था। यहां दिन को सूर्य उदय होता है और रात को पृथ्वी। मैं उस इलाके का राजकुमार था। मेरा नाम माहे-तमाम है। एक रात को जब मैं अपनी बाईसवीं वर्षगांठ के उत्सव में सम्मिलित था, चारों ओर पृथ्वी पर हलका-हलका प्रकाश फैला हुआ था। मैंने एक नर्तकी को देखा। उसका नृत्य बहुत सुन्दर था और वह खुद भी बेहद खूबसूरत थी। वह चांद की रहने वाली मालूम होती थी। ऐसा मालूम होता था मानो वह पृथ्वी की परी हो।" साधु ने नाज़ और मोहिनी की ओर इशारा करके कहा, "वह औरत तुम लोगों की तरह बदसूरत न थी।"

"अजी जनाब," मोहनी ने क्रोध में आकर कहा, "आप क्या कहते हैं ? हम लोग पृथ्वी ही से आए हैं।"

"बिलकुल झूठ !" साधु ने और भी क्रोधित होकर कहा, "पृथ्वी पर तो परियां रहती हैं । हमारी दादी अम्मां बताया करती थीं ।"

"और हमारी दादी अम्मां," नाज़ ने कड़ककर कहा, "हमें बताया करती थीं कि चांद पर परियां रहती हैं । बस, दूर के ढोल सुहावने मालूम होते हैं । चांद में आकर पता चल गया, यहां कैसी-कैसी परी की संतानें रहती हैं, जिनके पांव पत्थर के हैं और दाढ़ी घुटनों तक लम्बी है ।"

साधु उदास होकर बोला, "मेरी यह दशा तो इन कम्बख़्त जादूगरों ने कर दी है ।"

जुम्मी ने पूछा, "यह कैसे हुआ ?"

साधु ने आह भरकर कहा, " मैं उस कम्बख़्त नर्तकी को विवाह का संदेश दे बैठा, मगर उसने इन्कार कर दिया । जब मैं बहुत गिड़गिड़ाया तो उसने कहा, 'मैं तुमसे विवाह तो कर लूंगी, मगर एक शर्त पर ।'

" मैंने डरते-डरते पूछा, 'वह शर्त क्या है ?'

" वह बोली, 'अगर तू अपना देश जादूगरों के नाम लिख दे तो मैं तुझसे शादी कर लूंगी ।'

" मैंने कहा, 'यह देश तो मेरा नहीं है । मेरी प्रजा का है । मैं उसे किसीके नाम कैसे कर सकता हूं ?'

" फिर वह बोली, 'अच्छा, तो मुझे आज्ञा दे कि मैं तेरी प्रजा को जादू के ज़ोर से होशियार कर दूं ।'

" मैंने कहा, 'इसकी भी आज्ञा नहीं दे सकता । वे लोग अगर होशियार हो गए तो मेरा राज चला जाएगा ।'

"वह बोली, 'अच्छा, तू मुझे एक लाख डालर सोने के लाकर दहेज में दे।'

"मैंने कहा, 'मेरे देश में सिर्फ चांदी होती है। सोना कहां से लाऊं ?'

"वह बोली, 'अच्छा, तू जो कहता है—मैं तुमसे सच्चा प्रेम करता हूं—तो तू मेरे लिए क्या कर सकता है ?'

"मैंने कहा, 'मैं तेरे लिए रो सकता हूं।'

"'और क्या कर सकता है ?' वह जलकर बोली।

"'और तुमसे प्रेम कर सकता हूं।' मैंने फिर उससे कहा।

"मेरी बात सुनकर वह कुछ सोचने लगी। फिर कहने लगी, 'क्या तू यही शब्द मेरे देश में चलके सबके सामने कह सकता है ?'

"मैंने कहा, 'ज़रूर कह सकता हूं।'

"यह सुनकर वह मुस्कराई और उसने नाचना आरम्भ किया और नाचते-नाचते पीछे हटती गई और मैं उसके सुन्दर मुखड़े और उसके नाच में मदहोश होकर उसके साथ-साथ जादूगरों के देश में चला आया। मुझे पता भी नहीं चला कि मैं कहां हूं। परन्तु जब वह मुझे अपने देश में ले आई, तो अपने शहर के सबसे बड़े चौक में ले जाकर कहने लगी, 'अब यहां सबके सामने कह दे कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं।'

"मैं इधर-उधर देखने लगा और यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि जादूगरों के देश में एक से एक खूबसूरत लड़की मौजूद थी। हर युवती राजकुमारी बल्कि परी मालूम होती थी, क्योंकि जादू के ज़ोर से बनाई गई होती हैं इसलिए बेहद सुन्दर होती

हैं। यहां तक कि उनके सामने तो यह लड़की साधारण शक्ल-सूरत की मालूम होती थी। यहां आकर वह औरत बिलकुल मेरी नज़रों से गिर गई। अब मेरा जी नहीं चाहता था कि मैं उस औरत से कहूं कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं। वह बराबर आग्रह करती जा रही थी कि कहो मैं तुमसे प्रेम करता हूं, तथापि शर्मा-शर्मी में मैंने कह दिया, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूं।' मेरा यह कहना था कि आकाश से आवाज़ आई, 'झूठे, मक्कार! छल करता है। हमारे देश की मासूम औरत को धोखा देता है। जा, तुझे पत्थर कर दिया और जितना तेरा प्रेम है, उतना ही तुझे पत्थर किया।'

"उसी समय से मेरे पांव पत्थर के हो चुके हैं। उसी नर्तकी ने जब मेरी यह दशा देखी तो रोने लगी। बोली, 'अफसोस, तुम्हारा प्रेम सच्चा न था, वरना मैं तुम्हें अपने घर ले जाती।'

"'वह कैसे?' मैंने पूछा।

"वह बोली, 'अगर तुम्हारा प्रेम सच्चा होता तो तुम प्रेम शब्द बोलते ही सिर से पांव तक पत्थर के हो जाते और फिर मैं तुम्हें उठाकर अपने घर ले जाती और तुम्हें अपना पति मान-कर दिन-रात तुम्हारी पूजा करती; परन्तु तुम बड़े झूठे निकले, तुम्हारे तो केवल पांव पत्थर के हुए हैं।'

"'तो क्या तुम लोगों के पति बिलकुल पत्थर के होते हैं?' मैंने पूछा।

"वह बोली, 'यह उन लोगों के प्रेम और वफा पर निर्भर करता है। कुछ पति केवल घुटनों तक पत्थर के होते हैं, कुछ कमर तक, कुछ सीने तक। जो बिलकुल सच्चे और वफादार होते

हैं वे सिर से पांव तक पत्थर के बन जाते हैं। फिर हम उन्हें ताक में रखकर उनकी पूजा करते हैं।'

"'अब तुम मुझे क्या सज़ा दोगी ?' मैंने पूछा।

"नर्तकी ने ताली बजाकर दो जादूगरों को बुलाया और उनसे कहा कि मुझे दरवाज़े के बाहर छोड़ आएं। मैंने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया। समझाया-बुझाया कि पति पत्थर का नहीं, हाड़-मांस का अच्छा होता है; मगर वह बोली, 'नहीं मुझे तो पत्थर का पति चाहिए जो बिलकुल मेरा हो, जिसे मैं ताक में बन्द कर सकूं, जिसे मैं चौबीस घंटे अपने सामने रख सकूं। तुम्हारे तो सिर्फ पांव पत्थर के हुए हैं। तुम्हें अपने घर ले जाऊंगी तो गली-मुहल्ले की औरतें मुझसे क्या कहेंगी ?'

"तथापि उस दिन से मैं इस दरवाज़े के बाहर पड़ा हूं और अपना दंड भोग रहा हूं। जादूगरों ने जादू के ज़ोर से मेरे राज्य को वन में बदल दिया है और मुझसे क्योंकि चला नहीं जाता, इसलिए इस दरवाज़े के बाहर खड़ा भीख मांगता हूं और जो लोग जादूगरों के देश में जाना चाहते हैं, उन्हें अन्दर जाने से मना करता हूं। सौ साल से मेरा यही काम है।"

"तुम्हें इस दंड से मुक्ति कैसे मिल सकती है ?" जुम्मी ने उससे सहानुभूति दिखाते हुए पूछा।

"अगर कोई औरत, दुनिया की कोई औरत, विश्व की कोई औरत मेरे लिए रो दे और उसके दो आंसू मेरे पांवों पर पड़ें तो मेरे पत्थर के पांव फिर से ठीक हो जाएंगे और मैं चल-फिर सकूंगा।" यह कहकर साधु बड़ी दीनता से नाज़ और मोहिनी की ओर देखने लगा।

नाज़ क्रोध में बोली, "किस औरत को पड़ी है जो तुम्हारे ऐसे झूठे, मक्कार के लिए दो आंसू बहाए ! चलो जी, अन्दर चलें।"

"तुम ठीक कहती हो।" मोहिनी ने नाज़ की हां में हां मिलाते हुए कहा।

"और मैं बेचारी तो तांबे की हूं।" पुतली बोली, "रो ही नहीं सकती। इसलिए मुझे तो क्षमा कीजिए।"

उर्फी ने कहा, "क्यों एक बूढ़े फकीर की जान को आ रही हो ? चलो, अन्दर चलो !" यह कहकर उर्फी ने अपने हिस्से के भोजन में से थोड़ा-सा साधु के भिक्षा-पात्र में डाला और आगे बढ़ गया।

साधु उसे आशीर्वाद देकर बोला, "बच्चा, तू मुझे दिल का बहुत नेक मालूम होता है। मेरी एक सलाह मान ले। जादूगरों के देश में न जा। वहां की औरतें परियां होती हैं। तू ज़रूर पत्थर का बन जाएगा।"

उर्फी ने कहा, "आप फिक्र न करें साधु जी। आपकी कथा सुनने के बाद मैं बिलकुल किसी धोखे में न आऊंगा।"

साधु अपनी जेब टटोलते हुए बोला, "जाता है तो जा, मगर मेरा एक तावीज़ लेता जा।"

साधु ने एक छोटा-सा कागज़ का तावीज़ उर्फी को दिया। उर्फी ने तावीज़ को अपनी जेब में रखकर पूछा, "बाबा, इसको इस्तेमाल करने का तरीका क्या है ?"

साधु बोला, "बेटा, जब तू किसी संकट में फंस जावे, तो तू इस तावीज़ को जेब से निकालकर तीन बार चूमना। तीन बार

चूमकर तीन बार इसे अपने माथे से लगा लेना, फिर अपने सिर पर सात जूते मारकर बोलना—

गुड़म बड़म बा
गुड़म बड़म बा
मेरी मदद को आ
मेरी मदद को आ

फिर देखना क्या होता है। मगर अपने सिर पर सात जूते मारना न भूलना।"

"बहुत अच्छा!" उर्फी ने तावीज़ लेकर अच्छी तरह से अपनी जेब में रख लिया और सब बच्चों को लेकर जादूगरों के देश में गया।

जादूगरों के देश में अन्दर जाते ही बच्चों को कस्टम चौकी पर रोक लिया गया और उनके सामान की तलाशी ली गई और माचिस की डिब्बिया ज़ब्त कर ली गई। पूछने पर कस्टम आफिसर ने कुछ न बताया। मुस्कराकर कहने लगा, "अब आप लोग हमारे देश के अन्दर जा सकते हैं। मगर इससे पहले आप-को जादू का तमाशा दिखाना होगा।"

"किस प्रकार का तमाशा?" जुम्मी ने पूछा।

"कोई भी जादू का खेल।"

"पहले तुम करके दिखाओ।" जुम्मी बोला।

कस्टम आफिसर ने जुम्मी के सिर पर हाथ फेरा। अब उसके हाथ में मुर्गी के तीन अंडे थे।

जुम्मी ने कस्टम आफिसर के सिर पर हाथ फेरा। अब जुम्मी के हाथ में रेडियो के बल्ब थे।

"यह क्या है ?" कस्टम आफिसर ने पूछा।

जुम्मी बोला, "यह कांच के अंडे हैं।"

कस्टम आफिसर रेडियो-बल्ब को आश्चर्य से देखता रह गया। उसने जुम्मी से कहा, "तुम अन्दर जा सकते हो।"

अब उर्फी की बारी थी, कस्टम आफिसर ने फिर कहा, "जादू का तमाशा दिखाओ।"

"पहले तुम दिखाओ।" उर्फी ने उत्तर दिया।

कस्टम आफिसर ने मेज़ पर से एक कागज़ उठा लिया और कहा, "देखो, यह सफेद कागज़ है न ?"

"हां।"

कस्टम आफिसर ने कागज़ को दोहरा-तिहरा किया। उसे मुंह में डालकर निगल गया। फिर उर्फी से पूछा, "कहो—एक, दो, तीन, चार।"

उर्फी ने कहा, "एक, दो, तीन, चार।"

'चार' सुनते ही कस्टम आफिसर ने मुंह से कागज़ की एक लम्बी-सी नलकी निकाली, जिसका रंग बिलकुल लाल था। कस्टम आफिसर ने कहा, "देखा मेरा जादू। मुंह में डाला था सफेद कागज़, निकाला लाल कागज़।"

"यह कौन-सी बड़ी बात है ?" उर्फी ने कहा, "अब मेरा जादू देखिए।" उसने अपने पानदान से एक पान का पत्ता निकालकर कहा, "यह पत्ता देखिए। इसका रंग कौन-सा है ?"

"हरा है।"

उर्फी ने पान मुंह में डाला और कहा, "अब आप कहिए—एक, दो, तीन, चार।"

कस्टम आफिसर धीरे से कहने लगा, "एक, दो, तीन, चार।"

"एक बार फिर कहो।"

"एक, दो, तीन, चार।"

"वह रही पानी की धार !" उर्फी ने पान की लाल पीक ज़ोर से एक ओर फेंकते हुए कहा, "देखा मेरा जादू। मुंह में डाला था हरा पत्ता, निकाला सुर्ख पानी।"

कस्टम आफिसर ने आश्चर्य से पूछा, "आप लोग कहां से आए हैं ?"

नाज़ बोली, "हम लोग पृथ्वी से आए हैं।"

कस्टम आफिसर बोला, "पृथ्वी से ? सुना है वहां का जादू बड़ा ज़बरदस्त होता है। वे लोग, सुना है, हवा में उड़ सकते हैं, पानी पर चल सकते हैं ?"

"ठीक है।" मोहिनी ने गर्व से ज़रा तनकर कहा।

"ओर सुना है, वहां के जादूगर ऐसे मकान बनाते हैं जिनमें आग का कोई असर नहीं होता।"

"हां, ईंटों के मकान होते हैं। तो क्या," नाज़ पूछने लगी, "तुम्हारे यहां मकान ईंटों के नहीं होते ?"

"ईंट क्या होती है ?" कस्टम आफिसर बोला, "हम तो नहीं जानते यह जादू। हमारे यहां मकान कागज़ के होते हैं।"

सचमुच अब जो बच्चों ने ध्यान से देखा तो कस्टम चौकी की इमारत सारी की सारी कागज़ों की बनी हुई थी। न केवल कस्टम चौकी, बल्कि जब जुम्मी ने कस्टम आफिसर को हाथ लगाया तो मालूम हुआ कि वह भी कागज़ का बना हुआ है। पुराने समाचारपत्रों को जोड़-जोड़कर बनाया गया था और

जादू के बल पर बोलता था और चलता था। कस्टम चौकी से बाहर निकलकर जब उन्होंने शहर में कदम रखा तो वे अचम्भे में आ गए। सड़क कागज़ की थी, फुटपाथ कागज़ का था, पहरा देने वाला संतरी कागज़ का था और सड़क के दोनों ओर जो बड़ी-बड़ी बिल्डिगें खड़ी थीं, वे भी कागज़ की थीं। दुकानों में जितना सामान रखा था, वह सब कागज़ का था। बच्चों के लिए खिलौने कागज़ के थे, सिपाहियों की बन्दूकें कागज़ की थीं, फल कागज़ के थे, मिठाइयां कागज़ की थीं, बड़ी खूबसूरत और रंगीन मिठाइयां थीं, मगर सब कागज़ की थीं।

कस्टम चौकी में से बच्चों ने जादूगरों का देश देखने के लिए एक गाइड किराये पर ले लिया था। यह गाइड बेचारा बहुत गरीब था और बहुत ही फटे-पुराने अखबार के टुकड़ों को जोड़-जोड़कर बनाया गया मालूम होता था। उसका रंग कहीं से पीला, कहीं से भूरा, कहीं से काला था और स्थान-स्थान पर उसके शरीर का वारनिश उतर चुका था और समाचारपत्रों के शीर्षक के चिह्न स्थान-स्थान पर स्पष्ट नज़र आ रहे थे।

मोहिनी ने गाइड की उंगली पकड़कर कहा, "अच्छे गाइड जी, हमें सारा शहर दिखा दीजिए।" गाइड एकदम पीछे हट गया। चौंककर मोहिनी ने भी उसका हाथ छोड़ दिया।

गाइड की उंगली फुटपाथ पर गिर गई। गाइड ने जल्दी से उंगली फुटपाथ से उठा ली और कोट की जेब में से गोंद-दानी निकालकर गोंद से फिर अपनी उंगली को हाथ में चिपका दिया और बहाना करते हुए बोला, "माफ करना, मैं बहुत पुराने अखबार का बना हुआ हूं। 'सादिक-उल अखबार'

जो आज से अस्सी वर्ष पहले मोची गेट, लाहौर से निकलता था। इसलिए हाथ लगाते ही झर-झर करके गिरने लगता हूं। मुझे हाथ मत लगाइए।"

जुम्मी ने कहा, "यह क्या माजरा है ? यहां हर चीज़ कागज़ की बनी हुई है और कागज़ भी अखबारी मालूम होता है।"

गाइड ने एक आह भरकर कहा, "महिलाओ तथा भद्र पुरुषो! गंभीर दर्शकगण तथा अच्छी प्रकृति के श्रोतागण! यह कथा बहुत पुराने ज़माने की है। आज से कई सौ साल पहले जब चीनी जादूगरों ने कागज़ का आविष्कार किया, उस समय की बात है कि इस संसार को चीनी जादूगरों ने आकर पहले-पहल बसाया था। उन लोगों को क्योंकि कागज़ से प्रेम था, इसलिए उन्होंने यहां आकर हर चीज़ कागज़ की बना डाली। होते-होते यहां संसार-भर के अखबारी जादूगर आने लगे और बसने लगे। अब तो यह दशा है कि संसार में जहां कहीं भी कोई अखबार छपता है, उसका जादूगर यहां पहुंच जाता है। संसार के अखबारों में जितनी झूठी-सच्ची खबरें पहुंचती हैं, जितने युद्ध होते हैं, जितने झगड़े होते हैं, देशों और जातियों के बीच जितने झगड़े होते हैं, यहीं के जादूगरों के द्वारा संसार के अखबारों में छपते हैं। यहां के जादूगरों का कोई और काम नहीं है, सिवाय इसके कि लोगों में, देशों में, जातियों में लड़ाई कराते रहें। अखबार यहां के लोगों का ओढ़ना-बिछौना है। ये लोग अखबार खाते हैं, अखबार पर सोते हैं, अखबार लिखते हैं, अखबार पढ़ते हैं, अखबार पीते हैं, और जिस दिन संसार में कोई अखबार बन्द होता है, यहां पर किसी न किसी जादूगर की मृत्यु होती

है। फिर हम लोग उन अखबारों से या किताब की सारी जिल्दें और फाइलें यहां मंगा लेते हैं और जादू के ज़ोर से उनको मनुष्य बना डालते हैं या उनसे दूसरी वस्तुएं बना डालते हैं। आप अक्सर आश्चर्य करते होंगे कि अभी-अभी मेज़ पर यहां अखबार रखा था, वह किधर गया। यहां शैल्फ पर किताब रखी थी, कहां गायब हो गई, कि 'खिलौना' रिसाले की फाइल थी, किधर खो गई। आपको मालूम भी नहीं होता और कुछ मिनट में जादू के ज़ोर से वे सारी किताबें, कापियां, पत्रिकाएं और अखबार हमारे संसार में पहुंच जाते हैं।"

नाज़ ने बड़े अनुराग से पूछा, "तो क्या 'खिलौना' रिसाले से बनाए गए मनुष्य यहां हैं?"

"क्यों नहीं?"

"ज़रा हमें वहां ले चलिए।"

गाइड ने उसी समय हाथ के इशारे से बाजार से गुज़रने वाले तीन-चार खाली रिक्शा रोक लिए। ये रिक्शा भी कागज़ के बने हुए थे और उनके चलाने वाले भी कागज़ ही के थे। सबसे पहले रिक्शा में जुम्मी लपककर सवार हुआ, परन्तु सवार होते ही रिक्शा धड़ से ज़मीन पर बैठ गया और रिक्शा चलाने वाले के मुंह से चीख निकली और उसके भी दो टुकड़े हो गए। इतने में बहुत-से कागज़ी लोगों की वहां भीड़ इकट्ठी हो गई और लोग चीखने-चिल्लाने लगे और हमारे बच्चों को घूंसे दिखाने लगे।

जुम्मी ने मुक्का तानके कहा, "मैं लोहे का बना हुआ हूं। मुझे घूंसा मत दिखाओ। सारी जादूगरी निकालकर फेंक दूंगा कागज़ी पहलवानो!"

मगर लोग और भी शोर मचाने लगे। बच्चे चारों ओर से घिर गए। इतने में पुलिस का संतरी भी वहीं पहुंच गया। उसने पूछा, "क्या हुआ ?"

"ऐक्सीडेण्ट हो गया। यह रिक्शे वाला मर गया और इसका रिक्शा भी टूट गया। पृथ्वी से ये कुछ यात्री आए हैं। यह सब इनकी बदमाशी है।"

"बाहर से सैर करने के लिए आए हैं। यहां आकर हेकड़ी जमाते हैं।"

भीड़ में कुछ लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे—

"पृथ्वी मुर्दाबाद।"

"जादूस्थान जिन्दाबाद।"

"पृथ्वी मुर्दाबाद।"

संतरी ने लोगों को हटाया। रिक्शे का और गाइड का नम्बर नोट किया और एक पर्चा फाड़कर गाइड के हाथ में थमा दिया और कहा, "आज रात के दस बजे इन लोगों को राजकुमारी के हुजूर में पेश करो।"

गाइड ने कहा, "बहुत अच्छा !" और फिर बच्चों को लेकर पैदल ही चल पड़ा।

*गाइड का ले जाना बच्चों को एक सात मंज़िल की बिल्डिंग में और भेंट कराना 'खिलौना' पत्रिका के बने हुए बच्चों से, मियां फौलादी से, कागज़ी टार्ज़न से, टुल्लू मियां से और पिलपिली साहेब इत्यादि से * * **

यह बिल्डिंग बहुत बड़ी थी। एक के ऊपर दूसरी सात तो इसकी मंज़िलें थीं और कई सौ कमरे थे इसमें, और संसार में जितने समाचारपत्र और पत्रिकाएं बच्चों के लिए छपते हैं, इन सबसे बने हुए कागज़ी बच्चे यहां पर मौजूद थे। मोहिनी और नाज़ के आग्रह पर गाइड उन्हें सबसे पहले पूर्व की मंज़िल में तीसरे कमरे में ले गया। यह एक बहुत बड़ा कमरा था, और क्योंकि जादू का कमरा था इसलिए जितना छोटा उतना बड़ा हो जाता था। यहां हज़ारों कागज़ी बच्चे खेल रहे थे और शोर मचा रहे थे। एक कोने में एक खूबसूरत मेज़ के सामने दस-बारह वर्ष का लड़का अचकन पहने बड़ी ही गंभीरता से बैठा कुछ पढ़ रहा था। मोहिनी ने झुककर देखा, पत्रिका 'खिलौना' थी और वह सितारों की सैर पढ़ रहा था।

गाइड ने बच्चों का परिचय कराया। वह लड़का पृथ्वी के बच्चों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ।

फिर उसने हाथ के इशारे से बताते हुए कहा, "इस हाल में जितने बच्चे हैं, वे सबके सब भारत और पाकिस्तान के बच्चों

की पत्रिकाओं से बनाए गए हैं। न केवल बच्चे बल्कि इन पत्रिकाओं के चरित्र भी यहां उपस्थित हैं। वह देखिए फौलादी मियां।"

जुम्मी ने एक कोने में देखा, सचमुच मियां फौलादी ही थे और 'खिलौना' को पढ़ने में खोए हुए थे।

"वह देखिए टिल्लू मियां और पिलपिली साहेब।"

"अरे, सचमुच यह तो बिलकुल वही है!" मोहिनी प्रसन्नता से चिल्लाके बोली, "और 'भाईजान' पढ़ रहे हैं।"

"वह देखिए कटुयामा'" कागज़ी लड़के ने दिखाया, "वह रहा उल्लू चिड़ियों की अलिफ लैला पढ़ रहा है। वह 'हमदर्द नौ-निहाल बच्चा'। चालाक खरगोश कागज़ से बनाया है। वह बच्चा 'पराग' के कागज़ों से बना है, वह बच्चा 'चन्दा मामा' की जादूगरी की कहानी पढ़ रहा है और खुद भी चन्दा मामा के कागज़ों से बना है।"

सचमुच यह अद्भुत संसार था। यहां हर जाति, हर देश, हर भाषा के बच्चों को पत्रिकाओं के बच्चे मौजूद थे और इन पत्रिकाओं की कथाओं के जितने प्रसिद्ध चरित्र बच्चों को पसन्द थे, वे सबके सब यहां भिन्न-भिन्न कमरों में एकत्र थे। यहां पर बच्चों ने कागज़ी टार्ज़न को देखा जो हूबहू पृथ्वी के टार्ज़न की तरह था और बिलकुल उसीकी तरह चलता था। जादू-गरों के बच्चे उस टार्ज़न से बहुत भय खाते थे और वह भी उन-पर बेकार धौंस जमाता था। जब पृथ्वी के बच्चे उसे देखने के लिए आए, तो उसने उनकी ओर कोई ध्यान न दिया और उठकर नमस्कार तक न किया। वह इस समय एक कागज़ के

पेड़ पर बैठा हुआ 'कामिक' पढ़ रहा था।

नाज़ बोली, "टार्ज़न साहेब, ज़रा नीचे उतर आइए। हम आपकी सूरत तो देखें।"

"वो हो!" टार्ज़न ज़ोर से चिल्लाया, "मुझे फुर्सत नहीं!" और फिर 'कामिक' पढ़ने में तन्मय हो गया।

"देखिए!" उर्फी ने हंसकर जुम्मी की ओर इशारा करके कहा, "लंगूरों का बादशाह आपके साथ लड़ाई करने के लिए आया है।"

"वो हो!" टार्ज़न ने कामिक की किताब ज़ोर से नीचे जुम्मी पर फेंक दी। फिर वह कागज़ के रस्से पर झूलता हुआ, छलांगता हुआ नीचे उतरा और आते ही उसने जुम्मी को एक घूंसा दिया। जुम्मी वहीं खड़ा-खड़ा हंसता रहा।

टार्ज़न ने ध्यान से अपने हाथ की ओर देखा। उसका हाथ टूट गया था। टार्ज़न ने अबके बायें हाथ से दूसरा घूंसा जुम्मी के मुंह पर दिया। जुम्मी ने मुंह खोल दिया। अब के टार्ज़न का अखबारी हाथ जुम्मी के मुंह में फंसा रह गया। जब टार्ज़न अलग हुआ तो जुम्मी बड़े मज़े से टार्ज़न का हाथ अपने मुंह में चबा रहा था।

टार्ज़न ने आश्चर्य से कहा, "यह क्या जादू है! इस छोटे-से लड़के ने मुझ टार्ज़न को हरा दिया है, जिसे इस संसार में कोई हरा ही नहीं सका!"

गाइड बोला, "मियां टार्ज़न, होश में रहो। यह इन बच्चों के दिल की बहादुरी है जो तुम्हें इतना बहादुर बनाते हैं, वरना तुम हो क्या? अब आराम से बैठो। जब अगले माह की पत्रिका

आएगी तब तुम्हें नये हाथ मिलेंगे।"

इतना कहकर गाइड बच्चों को उस बिल्डिंग से बाहर ले गया और बोला, "आइए, अब आपको शहर के दूसरे भागों की सैर कराऊं।"

जब गाइड बच्चों को लेकर बाहर सड़क पर आया तो उसने रास्ते पर शाही गार्ड के आगे फौजी को पाया। फौजी ने कहा, "राजकुमारी जी ने आप लोगों को फौरन बुलाया है। चलिए।"

जुम्मी ने कहा, "और हम न चलें तो?"

नाज़ बोली, "चलो, चलेंगे! कागज़ी देश की राजकुमारी देखने को तो मिलेगी।"

कागज़ का यह महल, जहां राजकुमारी रहती थी, बहुत सुन्दर था। बस, ऐसा ही था जैसे परियों की कहानियों की पुस्तक के किसी चित्र में दिखाया जाता है। पाइन-बाग में कागज़ के फूल थे, कागज़ के फुवारे, महल का सारा सामान कागज़ का था। खुद राजकुमारी इतनी सुन्दर थी कि ऐसा लगता था कि अभी-अभी किसी तस्वीरों वाली पुस्तक से फाड़कर यहां लाई गई है।

राजकुमारी ने पूछा, "तुम लोग यहां क्यों आए हो?"

राजकुमारी ने फिर कहा, "कागज़ के शहर में पृथ्वी के बच्चों का रहना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए हम तुम्हें अपने देश से बाहर करते हैं।"

जुम्मी बोला, "हम तो अपनी चिड़िया लेकर जाएंगे।"

राजकुमारी बोली, "चिड़िया यहां नहीं है। वह तो उल्टा देश गई है। तुम लोग वहीं जाओ।"

मोहिनी बोली, "राजकुमारी, हम लोग उल्टा देश कैसे

जाएंगे ? अपना राकेट जहाज़ तो हम बहुत पीछे छोड़ आए हैं।"

राजकुमारी ने कहा, "तुम्हारे जाने का प्रबंध मैं किए देती हूं।" राजकुमारी ने इतना कहकर ताली बजाई। उसी समय एक कागज़ी जादूगर हाज़िर हुआ। राजकुमारी ने आज्ञा दी कि इन लोगों को इसी समय उलटा देश पहुंचा दिया जाए।

जादूगर ने बच्चों को जादू के एक कागज़ी कालीन पर बिठाया और मन्त्र पढ़कर कालीन को हवा में उड़ने के लिए कहा। कालीन उसी समय हवा में उड़ने लगा। ऊपर होते-होते बहुत दूर हवा में उड़ने लगा। उसकी चाल बहुत तेज़ थी। पलक झपकते ही वे लोग हज़ारों मील की दूरी तय कर गए। फिर धीरे-धीरे कालीन नीचे उतरने लगा। थोड़ी देर के बाद वे लोग उलटा देश के सबसे बड़े शहर के चौक में खड़े थे। जादूगर ने फिर मन्त्र पढ़ा और बच्चों से विदा होकर उसी कालीन पर चढ़कर अपने देश लौट गया।

उलटा देश की हर बात उलटी थी। बच्चों ने देखा कि यहां पर जो लोग पैदल चल रहे थे, वे सिर के बल चलते थे, मोटरें पीछे से आगे चलने के बजाय आगे से पीछे जा रही थीं। स्कूलों में नक्शे उलटे लटके हुए थे। मास्टर सिर के बल खड़ा होकर पढ़ा रहा था और बच्चे किताब को उलटा रखके पढ़ते थे। मोहिनी ने एक बच्चे से पूछा, "ऐसा क्यों होता है ?"

लड़के ने उत्तर दिया, "इस तरह से पाठ अच्छी तरह याद हो जाता है।"

मोहिनी ने नाज़ से कहा, "तभी मैं कहती थी कि मुझे पाठ

याद क्यों नहीं होता है । आज मालूम हुआ कि हमारी पृथ्वी पर पढ़ने-पढ़ाने के प्रबन्ध में अवश्य कोई गलती है ।"

बच्चे ने मोहिनी से पूछा, "तुम लोग कैसे पढ़ते हो ?"

मोहिनी ने कहा, "हम लोग तो किताब को सीधी रखकर पढ़ते हैं ।"

"फिर क्या खाक पाठ याद होता होगा !" बच्चे ने बेहद घृणा से हंसकर कहा और अपने क्लासरूम में चला गया ।

अस्पतालों में भी बच्चों ने एक उलटी बात देखी । यहां रोगियों को कुनीन की बीमारी होती थी और उन्हें ठीक करने के लिए मलेरिया के मच्छरों से कटवाया जाता था । कुछ रोगी पेंसिलीन के रोग से पीड़ित थे और उन्हें ठीक करने के लिए उन्हें दही-बड़े की चाट खिलाई जाती थी, जिससे उनका गला खराब हो । यहां कब्ज़ दूर करने के लिए पेचिश के कीटाणुओं के टीके लगते थे ।

एक रोगी डाक्टर के पास खड़ा शिकायत कर रहा था, "साहेब, मुझे बहुत कष्ट है । बेहद बीमार हूं ।"

"तुम्हें क्या कष्ट है ?" डाक्टर ने पूछा ।

"मुझे छः वर्ष से बुखार ही नहीं होता । अब मैं क्या करूं ? इस तरह तो मैं मर जाऊंगा ।"

"परन्तु यह तो बिलकुल स्वस्थ दिखाई देता है ।" नाज़ ने डाक्टर से कहा ।

डाक्टर ने कहा, "यही तो भयंकर बात है । इस मनुष्य को छः वर्ष से अच्छे स्वास्थ्य का रोग है ।"

डाक्टर ने उस रोगी की नब्ज़ देखकर कम्पाउंडर से कहा,

"इसे रोग-मिक्सचर दे दो। एक सौ चार डिग्री वाला।"

"इससे क्या होगा डाक्टर साहब ?" जुम्मी ने पूछा।

डाक्टर बोला, "इस दवा से इसे एक सौ चार डिग्री बुखार होगा और यह रोगी ठीक हो जाएगा।" फिर वह डाक्टर पृथ्वी के बच्चों को देखकर बोला, "मगर आप लोग उलटे क्यों खड़े हैं, सीधे क्यों नहीं खड़े होते सभ्य मनुष्यों की तरह ?"

नाज़ बोली, "डाक्टर साहब, हम लोग इसी तरह अपनी पृथ्वी पर चलते हैं।"

डाक्टर ने बेहद दुःख प्रकट किया और कहा, "यह बहुत बड़ा रोग है। मेरे विचार में तो मुझे आपका आपरेशन करना पड़ेगा।"

डाक्टर ने उसी समय अस्पताल के आठ-दस अर्दलियों को बुलाकर आज्ञा दी कि बच्चों को पकड़कर आपरेशन-रूम की ओर भेजा जाए। अर्दली इन बच्चों की ओर बढ़े। नाज़ बहुत चीखी-चिल्लाई, मोहिनी भी डर गई। इस समय पर जुम्मी और उर्फी और पुतली ने बड़ी वीरता से काम किया और चूंकि सारे अर्दली उलटा होकर बच्चों को पकड़ने का प्रयत्न कर रहे थे, इस कारण बच्चों ने शीघ्र ही मैदान जीत लिया और अस्पताल से निकल भागे। अस्पताल से निकलकर उन लोगों ने एक क्षण के लिए शांति की सांस ली थी कि इतने में पुलिस की सीटियां बजने लगीं और मोटरें बच्चों को पकड़ने के लिए भागने लगीं। मगर क्योंकि मोटरें आगे से पीछे भाग रही थीं, इसलिए उनके और भागते हुए बच्चों के बीच दूरी कम होने के बजाय बढ़ती गई। भागते-भागते बच्चे शहर से बाहर निकल आए और एक खेत

के किनारे बैठकर सुस्ताने लगे।

यहां बच्चों ने एक अद्भुत दृश्य देखा। जितने खेत थे, सब उलटे बोए हुए थे। पौधों की जड़ें भी ऊपर हवा में लटक रही थीं और फसल के गुच्छे धरती पर झुके हुए थे। जो हाल फसल के पौधों का था, वहीं हाल वृक्षों का था। जड़ें ऊपर हवा में थीं और फल-फूल ज़मीन पर झुके हुए थे। बच्चे आश्चर्य से इस दृश्य को देख ही रहे थे कि इतने में एक शेर दौड़ता हुआ आया और घबराकर एक वृक्ष की जड़ पर चढ़ गया। पहले तो बच्चे शेर को देखकर बहुत घबराए, परन्तु उन्होंने खुद शेर को घबराते और कांपते हुए देखा तो उससे पूछने लगे, "शेर, इतने परेशान क्यों हो ?"

"तुम्हें मालूम नहीं है ? एक बकरी मेरे पीछे-पीछे आ रही है। वह मुझे खा जाएगी।"

"बकरी शेर को खा जाएगी ?" नाज़ ने कहकहा लगाया, "ऐसा भला कभी हो सकता है ?"

"हमारे देश में यही होता है।" शेर ने रोते हुए कहा, "यहां की बकरियां बड़ी निर्दयी होती हैं। शेरों को खा जाती हैं।"

अभी शेर डर के मारे रो ही रहा था कि इतने में एक बिल्ली कहीं से दौड़ती हुई आई और उसी वृक्ष की जड़ पर चढ़ गई। वह भी बेहद घबराई हुई थी और 'म्याऊं-म्याऊं' कर रही थी।

"तुम्हें क्या कष्ट है मौसी बिल्ली ?"

"चूहा !" बिल्ली ने डरकर कहा, "एक बड़ा मोटा-सा चूहा मुझे खा जाना चाहता है। वह देखो।"

बच्चों ने पलटकर देखा तो ज़मीन पर एक चूहा अपने सफेद-

सफेद दांत निकाले हुए ललचाई हुई दृष्टि से बिल्ली को देख रहा था और उसके पास एक मोटी-ताज़ी बकरी बार-बार अपने पांव धरती पर पटककर मानो शेर को कह रही थी, नीचे आओ तो तुम्हें कच्चा खा जाऊंगी।

बच्चे इस दृश्य को देखकर आश्चर्य में रह गए और अभी वे यह सोच ही रहे थे कि यह कैसा उलटा देश है, जहां की हर बात निराली है कि उन्हें एक वृद्ध सड़क पर आता हुआ मिला, जो एक नन्हे लड़के को उंगली से लगाए चला आ रहा था।

उर्फी ने उन दोनों को ध्यान से देखकर पूछा, "बड़े मियां! यह तुम्हारा बेटा है?"

बूढ़े ने कहा, "नहीं, मैं इसका बेटा हूं।"

मारे आश्चर्य के उर्फी का मुंह खुले का खुला रह गया। यह बूढ़ा क्या बक रहा था, मगर बूढ़े के साथ जो नन्हा लड़का चला आ रहा था, उसने बच्चों को समझाया—

"हमारे देश में सब बूढ़े पैदा होते हैं। जब वे पैदा होते हैं, तो उनके चेहरे पर सफेद दाढ़ी होती है और उनके मुंह में दांत नहीं होते, फिर धीरे-धीरे आयु के हिसाब से बूढ़े अधेड़ हो जाते हैं। अधेड़ उम्र के बाद वे जवान होते हैं। जवानी से निकलकर वे लड़के हो जाते हैं। लड़कों से बच्चे बन जाते हैं और धीरे-धीरे उनकी आयु घटती जाती है और उनका कद भी घटता जाता है और एक दिन वह आ जाता है, जब वे केवल एक दिन का बच्चा होकर रह जाते हैं और उसके बाद मर जाते हैं। हमारे यहां सब लोग एक सौ वर्ष के पैदा होते हैं और एक दिन का बच्चा होकर मर जाते हैं।"

नाज़ ने बड़े आश्चर्य से उलटा देश के बच्चे को देखकर पूछा, "और तुम्हारी आयु अब क्या है ?"

छोटे बच्चे ने उत्तर दिया, "अब मैं पचानवें वर्ष का हूं।"

"और यह तुम्हारा बाप ?......ओफ, ओ, मेरा मतलब है तुम्हारा बेटा ?"

लड़के ने वृद्ध की ओर इशारा करके कहा, "यह मेरा बच्चा अभी बहुत छोटा है। इसकी आयु अभी केवल सात वर्ष की है।"

"भागो ! भागो।" जुम्मी और उर्फी ने लड़कियों से कहा, "भागो इस उलटा देश से। वह हमारी चिड़िया तो यहां एक दिन भी नहीं रह सकती। कहीं और चलके उसे ढूंढ़ेंगे।"

"ठहरो," बच्चे ने कहा, "तुम लोग हमारे अतिथि हो। खाना तो खाते जाओ।"

"तुम लोग खाना कैसे खाते हो भला?" उर्फी ने पूछा।

बच्चे ने खेतों की ओर रुख करके कहा, "इधर देखो। खेतों में क्या उगा है ?"

यह गेहूं का एक उलटा खेत था। जड़ें हवा में थीं और गुच्छों पर गेहूं की सुनहरी-सुनहरी रोटियां लगी थीं।

उलटा देश का बच्चा बोला—

"हमारे खेतों में रोटियां उगती हैं। हम उन्हें पौधों से तोड़कर चक्की में पीस देते हैं, इससे जो आटा होता है उसे कारखाने में बेच देते हैं।"

"कारखाने में क्यों बेच देते हैं ? रोटियां तोड़कर क्यों नहीं खा लेते।"

"मालूम होता है, तुम पृथ्वी के लोग बहुत जाहिल हो !

आज से दो सौ साल पहले हमारे देश के लोग भी तुम्हारी तरह वहशी और असभ्य थे। वे पौधों से कच्ची रोटियां तोड़कर खा जाया करते थे। मगर अब हमने बहुत उन्नति कर ली है, हमने खाने पकाने के कारखाने बनाए हैं, जहां इन रोटियों को पीसकर आटे की शक्ल में ढाल लिया जाता है। फिर उसमें पानी मिलाकर इन्हें गूंध लिया जाता है। फिर उन्हें गर्माई पहुंचाकर सुखा लिया जाता है। फिर उन्हें खास मशीनों में डालकर उस आटे से गेहूं के दाने तैयार किए जाते हैं।"

"रोटी से गेहूं का दाना! यह तो बिलकुल उलटी बात है। हमारे यहां तो गेहूं के दाने से रोटी तैयार की जाती है।"

"मूर्ख! हमेशा रोटी से गेहूं का दाना तैयार होता है।" वह बोला।

"हमारे यहां शेर बकरी को खाता है।" नाज़ ने कहा।

उलटा देश का बच्चा हंसकर बोला, "क्या? उलटा देश होगा तुम्हारा। कल को तुम कहोगे—चूहा बिल्ली को नहीं, बिल्ली चूहे को खा जाती है।"

"बिलकुल ऐसा ही होता है। हमारी पृथ्वी पर बिल्ली चूहे को खा जाती है।"

"भागो! भागो!!" जुम्मी ने परेशान होकर कहा, "हम इस उलटा देश में हरगिज़ न रहेंगे।"

उलटा देश का बच्चा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। पृथ्वी के बच्चे डरकर उलटा देश से भाग निकले। भागते-भागते वे लोग कई खेतों और जंगलों को पार कर गए। अन्त में वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां चारों ओर रेत ही रेत थी और रेत के

ऐन बीच में कोई एक सौ गज़ के घेरे में एक बड़ी-सी चांदी की तश्तरी के पास पहुंच गए। तश्तरी के बाहर एक ज़ीना लगा था। बच्चे पहले तो बड़े आश्चर्य से इस तश्तरी जैसी चीज़ को देखते रहे, फिर ज़ीना चढ़कर तश्तरी पर चढ़ गए। तश्तरी के ठीक बीच में प्लास्टिक का एक हैंडल लगा था जो अन्दर से प्रकाशमान था। जुम्मी ध्यान से इस हैंडल को देखने लगा। इतने में उसने क्या देखा कि दूर वन में नदी के किनारे से रेत के बगूले-से उड़ने लगे और दो मानव-रूपी पशु, जिनकी ऊंचाई पचास फ़ुट से कम न होगी और जो देखने में बिलकुल देव मालूम होते थे, भागते हुए तश्तरी की ओर बढ़ रहे थे।

"बाप रे!" मोहिनी डरकर बोली, "ये देव तो हमें कच्चा खा जाएंगे।"

जुम्मी ने इधर-उधर देखा। बचने की कोई राह दिखाई न दी। देव पास आते जा रहे थे और उनके बड़े-बड़े मुंह खुले हुए थे और उनके बड़े-बड़े दांत हाथियों के दांतों से भी अधिक बड़े थे और भयानक दिखाई देते थे। दोनों देव बच्चों को देखकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, और ज़ोर-ज़ोर से भागने लगे। अकस्मात् जुम्मी ने ज़ोर-ज़ोर से प्लास्टिक के हैंडल को घुमाया और उसी समय ज़ूं की आवाज़ करती हुई चांदी की तश्तरी ऊपर वातावरण में उड़ गई। बच्चों को एक धक्का-सा लगा, मगर फिर वे एकदम संभल गए। उड़नतश्तरी के अन्दर से आवाज़ आई—

"खबरदार! होशियार!! जहाज़ चांद को छोड़ रहा है और मंगल ग्रह की ओर बढ़ रहा है।"

"खबरदार ! होशियार !! हैंडल को बायें से दायें और दायें से बायें फिर घुमाओ और तीन बार कहो—चख ! चख !! चख !!!"

जुम्मी ने आवाज़ के कहे अनुसार हैंडल घुमाया और बच्चों ने तीन बार 'चख ! चख !! चख !!!' कहा। चख चख चख की आवाज़ पर उड़नतश्तरी का एक भाग नीचे गिर गया और बच्चे उड़नतश्तरी के अन्दर जा गिरे।

पृथ्वी के बच्चे उड़नतश्तरी के अन्दर थे और उड़नतश्तरी दो लाख मील प्रति घंटे की चाल से मंगल ग्रह की ओर उड़ी जा रही थी।

मिलना बच्चों का उड़नतश्तरी के पाइलेट से और फिर पहुंच जाना जहाज़ का मंगल ग्रह पर और हृदय को भाने वाला वर्णन मंगल ग्रह के दृश्यों और बर्फ़ के जिन्नों का * * *

दो घंटे उड़ने के पश्चात् उड़नतश्तरी एक ऐसे प्रदेश में पहुंची, जहां ज़रा नीचे देखने से चारों ओर नीला पानी ठाठें मारता हुआ दिखाई देता था। मोहिनी प्रसन्नता से ताली बजाती हुई बोली--

"अहा हा ! पानी ! पानी !!"

"कोई समुद्र मालूम होता है।" उर्फी ने कहा।

जुम्मी, जो बहुत दूर तक देख सकता था, बोला, "समुद्र नहीं है। एक बहुत बड़ी झील है और उसके बीच में एक टापू भी है।"

"और क्या नज़र आता है ?" मोहिनी ने पूछा।

"अब इतनी दूर से और कुछ नजर नहीं आता है। किन्तु टापू का रंग हरा है। इससे ज्ञात होता है कि हरियाली तो अवश्य होगी।"

"तो उड़नतश्तरी ज़रा नीचे ले जाओ।"

जब वे उड़नतश्तरी को और नीचे ले गए तो ज्ञात हुआ कि झील के गहरे पानी के मध्य एक सुन्दर-सा टापू है, जहां सुन्दर वृक्ष लहरा रहे हैं और उन वृक्षों के मध्य विशाल क्षेत्र है। फूलों

के बड़े-बड़े बाग हैं। कितने-कितने खुले मैदान बने हुए हैं। कहीं-कहीं पर छोटी-छोटी पहाड़ियों पर छोटे-छोटे लुभावने गांव बने हुए हैं। झील के चारों तरफ एक किलानुमा ऊंची दीवार बनी हुई है, जिसके चारों खूंटों पर चार बड़े-बड़े द्वार-से हैं, जिनके अन्दर छोटी-छोटी नावें तट से बंधी खड़ी हैं। कुछ नावें झील की सतह पर तैर रही हैं और उनमें छोटे-छोटे जुम्मी, उर्फी, नाज़, मोहिनी और पुतली की आयु के बच्चे पिकनिक कर रहे हैं। बाजे बजा रहे हैं। धुन पर डांस कर रहे हैं। बड़ा सुन्दर दृश्य है!

मोहिनी इस दृश्य को देखकर कह उठी, "हम तो इस टापू पर जाएंगे। उड़नतश्तरी नीचे उतारो। जल्दी से नीचे उतारो।"

जुम्मी ने उड़नतश्तरी का मुख हवा में ही टापू की ओर फेर दिया। ज्योंही उड़नतश्तरी का मुख हवा में टापू की ओर किया, तो वह झील के पानी पर उड़ान करने लगी। चारों ओर खतरे की घंटियां बजने लगीं—टन्...न्...न्...न्। बहुत बड़ी नावें, जो एक क्षण पहले तट के किनारे खड़ी थीं, पानी से उड़कर हवा में उड़नतश्तरी के चारों ओर तैरने लगीं और उन नावों से आवाज़ें आने लगीं—

"टापू की तरफ मत जाओ! टापू की तरफ मत जाओ!! पहले कस्टम्स के गेट पर जाओ। वापस ले जाओ अपनी उड़नतश्तरी......।"

आवाज़ें ऐसी मधुर और लुभावनी थीं, स्वर इतना सरल और सभ्य था कि बच्चों ने फौरन अपनी उड़नतश्तरी का मुख वापस एक गेट की ओर मोड़ दिया। दूसरे क्षण जुम्मी ने उड़न-

तश्तरी को एक बड़े गेट के सामने उतार दिया। अन्दर वाले गेट की मेहराब पर सोने के शब्दों में लिखा हुआ था, "घृणाहीन देश। स्वागतम्।"

बच्चे खुशी-खुशी आगे बढ़े। मेहराब के अन्दर जब पहुंचे, तो चारों ओर से पन्द्रह-बीस बच्चों ने गीत गाते हुए उनका स्वागत किया। अब इतने पास आने पर देखा कि उन बच्चों का रंग विचित्र-सा था। उन सब बच्चों का रंग हरा था जैसे हरे पत्तों का होता है और उनके दांत बसन्ती रंग के थे और उनकी आंखें बनफशी रंग की थीं और वे लाल रंग के चोगे पहने हुए थे।

हरे रंग के एक बच्चे ने आगे बढ़कर उर्फी से पूछा, "श्रीमान ! कहां से पधारे हैं ?"

"धरती से !"

"क्या भ्रमण करने का इरादा है ?"

"जी हां।"

'तो सबसे पहले उस चौकी पर अपना नाम और पता लिखवाइए, जहां पर आपकी तलाशी ली जाएगी।"

सब बच्चों ने अपना-अपना पता लिख दिया, किन्तु जब तलाशी की बारी आई तो धरती के बच्चे यह देखकर हैरान हुए कि एक हरे रंग का बच्चा आया और उसने सबको सूंघना शुरू किया। सबसे पहले उसने उर्फी को सूंघा और दूसरे बच्चे से बोला—

"यह तो ठीक है। इसके पास से घृणा की बू नहीं आती है।"

"यह भी ठीक है।" उस हरे रंग के बच्चे ने नाज को सूंघते

हुए कहा ।

मोहिनी गुस्से से चिल्लाई, "मूर्ख, सूंघते क्यों हो ? तलाशी लो, तलाशी लेनी है तो । जानवरों की तरह सूंघते क्यों हो ?"

"यह बहुत शैतान है और नटखट है।" हरे रंग के बच्चे ने दूसरे दो रंग के बच्चों से कहा, "इसे हमारी झील में दो गोते दो ।"

शीघ्र दो बच्चों ने मोहिनी को पकड़ लिया। मोहिनी ने कुछ हुज्जत की, किन्तु उन दोनों बच्चों ने उसे पानी में ढकेल दिया । दो-तीन गोते खाने के बाद मोहिनी फिर किनारे पर आ गई । उसे फिर उन बच्चों ने सूंघा । बोले, "अब इसके दिल में घृणा नहीं है ।"

जुम्मी बोला, "यह क्या तमाशा है ?"

हरे रंग के एक बच्चे ने बताया, "······यह घृणाहीन टापू है । यहां पर केवल वे ही लोग आ सकते हैं या रह सकते हैं, जिनके दिलों में घृणा न हो । दूसरे लोगों को हम अन्दर घुसने की आज्ञा नहीं देते ।"

"और जिस बेचारे के दिल में घृणा हो, वह क्या करे ?"

"उसे हम अपनी झील के पानी में गोते देते हैं । यदि उसके दिल में साधारण प्रकार की घृणा होती है तो वह इस पानी से घुल जाती है । फिर हम उसे इस टापू पर आने की आज्ञा दे देते हैं और यदि घृणा नहीं घुलती, तो उसे नहीं आने देते ।"

बच्चों को इस टापू के इस कानून पर बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु वे चुप रहे । अच्छा हुआ कि हमारे किसी बच्चे में उन लोगों ने कोई घृणा न पाई । इसलिए उन लोगों को जल्दी टापू

पर आने की आज्ञा मिल गई।

ज्योंही हरे रंग के बच्चों को मालूम हुआ कि धरती से आने वाले बच्चे उचित प्रकार के बच्चे हैं, तो वे लोग बारी-बारी से उनके हाथ चूमने लगे। उनके चारों ओर खड़े होकर गीत गाने लगे और नाचने लगे। नाच समाप्त होने के बाद वे लोग उन्हें एक नाव में सवार करके टापू पर ले गए।

टापू पर पहुंचकर तट के किनारे नावें खोलकर उन लोगों ने जुम्मी, उर्फी, नाज़, पुतली और मोहिनी को स्वतंत्र छोड़ दिया।

"अब आप जा सकते हैं।" एक हरे रंग का बच्चा बोला।

"कहां?"

"जहां आपका जी चाहे। इस सारे टापू पर आपके लिए कोई रोक-टोक नहीं है।"

बच्चे बड़े हैरान हुए, यह किस तरह का टापू है! और सीधे-सीधे एक पगडंडी पर चल पड़े, जिसके दोनों ओर लुभावने फूल खिले हुए थे। यह पगडंडी एक मनमोहक और लुभावनी घाटी के किनारे से लगी-लगी आगे जा रही थी। फूल ऐसे महकते हुए और लुभावने थे कि मोहिनी से रहा न गया। उसने एक फूल तोड़कर अपने बालों में लगा लिया। फूल लगाकर जब वह एकदम आगे बढ़ी तो पीछे से आवाज आई, "तुमने मेरा धन्य-वाद नहीं किया!"

मोहिनी ने हैरान होकर पीछे देखा। किन्तु उसे वहां कोई बच्चा नज़र नहीं आया। परेशान होकर वह एक कदम आगे बढ़ी, तो फिर आवाज़ आई, "मेरा धन्यवाद न करोगी?"

मोहिनी वहां रुक गई। पीछे मुड़कर देखा तो फूलों का पौधा बोल रहा था और कह रहा था, "हमारे यहां परिपाटी है कि यदि तुम किसीसे कुछ लेते हो तो उसका धन्यवाद करो।"

"धन्यवाद।" मोहिनी ने बेहद आश्चर्य से कहा, "अजीब जगह है! यहां फूल भी बोलते हैं और धन्यवाद मांगते हैं! अजीब तरह का टापू है यह!"

जुम्मी बोला, "मुझे तो इस टापू की यह बात ही पसन्द आई।"

बच्चे आगे बढ़ गए। कुछ समय चलने के बाद उन्हें रास्ते में एक घने पेड़ के नीचे एक सुन्दर रेस्तरां नज़र आया, जहां तरह-तरह की चाकलेट, टाफियां और फूल वगैरह रखे हुए थे। एक ओर रंगारंग शर्बतों की सुराहियां थीं, दूसरी ओर बर्फ में लगी हुई सोडावाटर की बोतलें थीं। छोटी-छोटी मेज़-कुर्सियों पर बैठे हुए बच्चे शर्बत पी रहे थे या आइस-क्रीम खा रहे थे, चाकलेट खा रहे थे और एक-दूसरे से हंसी-मज़ाक में व्यस्त थे।

इस सुन्दर रेस्तरां को देखकर और हरे रंग के बच्चों को खाता देखकर हमारे बच्चों को भी ज़ोर की भूख अनुभव होने लगी। वे लोग रेस्तरां के काउंटर की तरफ बढ़ गए जहां पर हरे रंग की प्लेटें रखी हुई थीं और एक तरफ हरे रंग का एक लड़का भी खड़ा अपने बसन्ती दांतों से उनकी तरफ देखकर मुस्करा रहा था। "स्वागत है!..." वह बड़ी मीठी आवाज़ में बोला।

मोहिनी बोली, "हमें भूख लगी है।"

वह हरे रंग का लड़का बोला, "सब कुछ उपस्थित है।

जो जी चाहे खा लो।"

तरह-तरह की चाकलेटें, मिठाइयां और टाफियों से बच्चों ने अपनी जेबें भर लीं। सुराहियों में से उंडेलकर मीठे-मीठे शर्बत पिए और खूब तृप्त होकर जब चलने लगे तो वही हरे रंग का लड़का बोला—

"बिल तो आपने चुकाया ही नहीं है?"

"जो कुछ हमने लिया है, उसकी कीमत क्या होगी?" जुम्मी ने पूछा।

वह हरे रंग का लड़का बोला, "पचास चुम्बन।"

"पचास चुम्बन!" नाज़ आश्चर्य से चीखकर बोली, "यह किस तरह का बिल है?"

"हमारे यहां इसी तरह चीज़ों की कीमत वसूल की जाती है। हर चीज़ के लिए अलग-अलग चुम्बनों की संख्या नियत होती है। जो चीज़ लो, उसके उतने ही चुम्बन देने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए आपने पचीस टाफियां ली हैं, आपको पचास चुम्बन देने पड़ेंगे। हमारे यहां एक टाफी की कीमत दो चुम्बन है।"

"दो चुम्बन में दोगे?" नाज़ आश्चर्य से बोली।

हरे रंग का लड़का बोला, "हां, आपको दो चुम्बन मेरी नाक पर देने पड़ेंगे।"

"मैं तो तुम्हारी पकोड़ा-सी नाक पर एक चुम्बन भी न दूं।" नाज़ क्रोध से बोली और आगे को चलने लगी। दूसरे बच्चे भी उसीके साथ आगे को रास्ते पर रवाना हुए, किन्तु यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हरे रंग के बच्चे ने किसी प्रकार का

एतराज़ नहीं किया, किन्तु जब वे कुछ कदम आगे बढ़े अपने रास्ते पर, तो अचानक सामने के रास्ते पर बड़ी-बड़ी कांटेदार झाड़ियां उग आईं और देखते ही देखते रास्ता बन्द कर दिया।

बच्चे इन झाड़ियों से बचकर जिधर जाने लगते, उधर ही वे झाड़ियां प्रकट हो जातीं। वे दाईं तरफ मुड़ते तो झाड़ियां उसी तरफ उनका रास्ता रोक लेतीं। बाईं तरफ मुड़ते तो झाड़ियां बाईं तरफ खड़ी हो जातीं। फिर-फिर वे झाड़ियां धीरे-धीरे इन बच्चों की तरफ आगे बढ़ने लगीं। यह देखकर बच्चे आश्चर्य से चीखकर पीछे हटे और पीछे हटते-हटते वापस रेस्तरां के काउंटर पर पहुंचे, जहां वही हरे रंग का बच्चा उनकी तरफ देखकर मुस्करा रहा था। उसने बड़े मधुर स्वर में कहा—

"मेरी नाक पर चुम्बन दे दो। मैं तुमसे पहले ही कहता था।"

जल्दी-जल्दी उसे पचास चुम्बन उसकी नाक पर दिए गए और पचासवें चुम्बन पर ज्योंही बच्चों ने रास्ते की तरफ देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि रास्ते की हर कांटेदार झाड़ी गायब हो चुकी है और पहले जहां पर कांटेदार झाड़ियां थीं, वहां पर अब केवल फूल ही फूल हैं।

"यह कैसा देश है!" मोहिनी रुआंसी होकर बोली।

जुम्मी ने हंसकर कहा, "मुझे तो उनकी यह सज़ा भी पसन्द आई।"

बच्चे आगे बढ़ते गए। पगडंडी घाटियों में से गुज़रती चली जा रही थी और समाप्त होने का नाम न लेती थी; न ही अभी तक रास्ते में कोई गांव नज़र आया था। कहीं-कहीं पर

अलबत्ता खेत नज़र आते थे, जहां छोटे-छोटे बच्चे मशीनें चलाते हुए काम कर रहे थे।

अन्त में जब बच्चे चलते-चलते बिलकुल थक गए तो एक खेत के किनारे बैठ गए। इस खेत के किनारे एक बच्चा मक्के के भुने हुए भुट्टे बेच रहा था।

उर्फी ने पूछा, "एक भुट्टा कितने पैसे का ?"

"चार चुम्बन।" वह बच्चा धीरे से बोला। उसकी नाक बहुत बड़ी थी। दूर से बिलकुल गोभी का फूल मालूम होती थी।

"मैं एक चुम्बन दूंगी।" मोहिनी शरारत से बोली।

"मैं तुमसे दस चुम्बन लूंगा।"

"यह क्यों ?"

"हमारे यहां का दस्तूर है, जो भाव-ताव करता है, उससे अधिक रकम वसूल की जाती है।" चुनांचे शेष बच्चों को चार चुम्बन के बदले में एक भुट्टा मिला, किन्तु मोहिनी को एक भुट्टे के बदले दस चुम्बन उस कुरूप बच्चे को गोभी के फूल-सी बड़ी नाक पर देने पड़े। इसपर सब बच्चों ने मिलकर खूब मज़ाक बनाया।

भुट्टे खाकर उर्फी ने पूछा, "यहां कोई मोटरगाड़ी नहीं है ?"

"नहीं।"

"कोई तांगा ?"

"नहीं।"

"कोई रिक्शा ?"

"नहीं।"

"तो फिर क्या पैदल चलना पड़ेगा इस सड़क पर ?"

"सभी चलते हैं।"

"और थकते नहीं ?"

"नहीं।"

"यहां से पहला गांव कितनी दूर है ?"

"कोई सौ मील दूर होगा।"

"सौ मील ! बाप रे !!" नाज़ गुस्से से बोली।

"सौ मील पैदल कैसे चला जाएगा ?"

"बहुत आसान तरकीब है।" भुट्टे बेचने वाले लड़के ने कहा। कुछ रुककर फिर आगे बोला—

"आप आगे मोड़ पर पहुंचकर एक मील का पत्थर देखेंगे। वहां पर तमाम गांवों के नाम और दूरियां लिखी हुई हैं। जिस गांव जाना हो, उसके नीचे का बटन दबा दीजिए। बस, सब ठीक हो जाएगा।"

"ठीक क्या हो जाएगा ? क्या कोई हेलीकोप्टर हमें उड़ाकर ले जाएगा ?" जुम्मी ने पूछा।

"आप बटन दबाकर तो देखें।" भुट्टा बेचने वाले ने मुस्कराकर कहा।

आगे मोड़ पर पहुंचकर बच्चों ने देखा कि पगडंडी के किनारे टेलीविज़न के सेट की तरह एक शफाक मील का पत्थर लगा है, जिसपर लिखा है : हमारा गांव—सौ मील; प्यारा गांव—ढाई सौ मील; दुलारा गांव—तीन सौ मील; राजधानी—पांच सौ मील।

जुम्मी ने पूछा, "बोलो बहिनो-भाइयो ! कहां का बटन दबाऊं ?"

"कहीं बटन दबाते ही कांटेदार छुरियां तो न आ जाएंगी ?" मोहिनी सशंकित होकर बोली।

"अजीब टापू है यह। मेरे ख्याल में तो सीधे राजधानी चलना चाहिए। मुझे तो सख्त भूख लगी है। मुझे तो कहीं रोटी नज़र नहीं आई।"

जुम्मी ने राजधानी का बटन दबाया।

कुछ भी नहीं हुआ।

जुम्मी ने फिर बटन दबाया।

फिर कुछ नहीं हुआ।

"मेरे ख्याल में वह मज़ाक करता था लौंडा।"

"नहीं, मज़ाक नहीं है।" मील के पत्थर के ढांचे से आवाज़ आई, "आपने मेरा शुक्रिया तो अदा ही नहीं किया है और यहां अदायगी के बिना कोई काम नहीं होता।"

"शुक्रिया, शुक्रिया और शुक्रिया। सौ बार शुक्रिया।" पुतली जल्दी से बोली।

और सड़क के अन्दर से घूं-घूं की आवाज़ आने लगी, जैसे पहिये तेज़ गति से धरती के नीचे चल रहे हों।

अचानक सड़क सौ मील प्रति घंटे की गति से दौड़ने लगी। बच्चे गिरते-गिरते बचे।

"हाय ! यह तो सड़क चल रही है !!" नाज़ बड़े आश्चर्य से बोली।

वास्तव में अब सड़क तेज़ गति से घाटी पर चढ़ रही थी,

जैसे हरी घास पर तेज़ी से कोई चाकू से रेखा खींचता चला जाए।

"क्या अजीब टापू है!" उर्फी बोला, "यहां की सड़कें चलती हैं। जब जी चाहे स्वयं पैदल चलो। जब थक जाओ तो बटन दबाकर सड़क को चला लो।"

"मुझे पसन्द है।" जुम्मी ने प्रशंसा करते हुए कहा, "मुझे यह टापू बहुत पसन्द आ रहा है।"

अगले पांच मिनट में सड़क ने पांच सौ मील तय करके हमारे बच्चों को टापू की राजधानी में पहुंचा दिया।

टापू की राजधानी छोटी-छोटी पहाड़ियों के एक लम्बे सिलसिले पर बसी हुई थी और नगर की अपेक्षा एक फैले हुए माडर्न गांव से मिलती-जुलती थी। छोटे-छोटे मनमोहक घर पहाड़ियों, टीलों, घाटियों और वादियों में एक-दूसरे से दूर-दूर बसे हुए थे। हर घर के चारों तरफ एक चौड़ा बगीचा और बच्चों के खेलने के लिए एक छोटा-सा मैदान था। नगर की तमाम सड़कें और पगडंडियां स्वयमेव चलती थीं और भिन्न-भिन्न चौकों पर आकर स्वयं ही रुक जातीं, जहां उन्हें बारी-बारी से आगे बढ़ने का रास्ता मिलता था। बच्चे नगर के एक बड़े चौक पर आकर रुक गए, जहां पांच सड़कें आकर मिलती थीं। उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि अब वे किधर जाएं। कुछ क्षण उन्होंने इधर-उधर देखकर पास की सड़क पर खड़े हुए एक बच्चे को देखा, जो उनसे विरुद्ध दिशा की ओर जा रहा था। वह बच्चा धरती के बच्चों को देखकर मुस्कराया और हिन्दुस्तानी में बात करते हुए बोला—

"फरमाइए, आपको कहां जाना है ?"

उस बच्चे को धरती से लाखों मील दूर, यहां हिन्दुस्तानी में बातचीत करते देखकर जुम्मी, उर्फी और दूसरे बच्चों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अन्त में नाज़ से न रहा गया। उत्सुकता से उसकी ओर देखते हुए बोली—

"तुमने हमारी भाषा कैसे सीखी ?"

"अपनी बहिन से।"

"तुम्हारी बहिन ने कहां से सीखी ?"

"वह तुम्हारे देश से सीखकर आई है।"

"तुम्हारी बहिन हमारे देश गई थी !" मोहिनी चीखकर बोली, "झूठ बोलते हो तुम !"

"नहीं, बिलकुल सच कहता हूं।" वह लड़का स्वाभिमान से बोला।

"किधर है तुम्हारी बहिन ? दिखाओ हमें।" मोहिनी ने चैलेंज करते हुए उससे कहा।

"अच्छा। मेरी सड़क पर आ जाओ। फिर तुम्हें वहां ले चलता हूं।"

दूसरे क्षण, वे सब लोग अपनी सड़क छोड़कर उस दूसरी सड़क पर आ गए, जहां वह बच्चा खड़ा था। उस समय दूसरी सड़क चलने लगी और वे लोग भी उस हिन्दुस्तानी बोलने वाले लड़के के साथ-साथ चलने लगे।

मोहिनी ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"बिल्लू।" बच्चे ने उत्तर दिया।

नाज़ ने पूछा, "और तुम कितनी भाषाएं जानते हो ?"

"दस।"

"दस भाषाएं !" जुम्मी ने आश्चर्य से पूछा, "इस छोटी-सी आयु में तुमने दस भाषाएं कैसे सीख लीं ?"

"मेरी बहिन ने सिखाई हैं। मेरी बहिन इस संसार की सारी भाषाएं जानती है।" बिल्लू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

"फिर भी इस छोटी-सी आयु में इतनी भाषाएं सीख लेना बहुत कठिन है।" उर्फी ने कहा, "क्या तुम्हारी बहिन किसी स्कूल में पढ़ाती है ?"

बिल्लू मुस्कराकर बोला, "नहीं, वह किसी स्कूल में नहीं पढ़ाती, क्योंकि हमारे यहां स्कूल नहीं होते।"

"स्कूल नहीं होते !" नाज़ आश्चर्य से बोली, "तो फिर तुम लोग पढ़ते कैसे हो ?"

"तकिये से।" बिल्लू ने उत्तर दिया।

"तकिये से कैसे ?" मोहिनी की समझ में कुछ न आया।

बिल्लू ने उत्तर दिया, "मेरे घर चलो। फिर सब कुछ बताऊंगा।"

वे लोग बड़ी बेचैनी से बिल्लू के घर की प्रतीक्षा करने लगे। बिल्लू उन्हें भिन्न-भिन्न सड़कों पर घुमाता हुआ, नगर के भिन्न-भिन्न दृश्य दिखाता हुआ एक ऊंची पगडंडी पर ले गया, जो राजधानी की सबसे ऊंची पहाड़ी पर थी, जिसकी चोटी पर एक बहुत सुन्दर घर बना हुआ था।

वह घर बिलकुल ऑटोमेटिक था। घर के दरवाज़े पांवों की आहट पाते स्वयं ही खुल जाते थे और फिर अपने-आप ही बन्द हो जाते थे। रोशनी का प्रबन्ध ऑटोमेटिक था। ज्यों-ज्यों दिन

का प्रकाश कम होता था, कमरों के अन्दर का प्रकाश अपने-आप बढ़ने लगता था। न कोई बल्ब था, न कहीं पर बिजली के तार नज़र आते थे। केवल सोते समय अंधेरा करने के लिए स्विच दबाना पड़ता था। अंधेरा करने के लिए भिन्न-भिन्न स्विच थे: कम अंधेरा, अधिक अंधेरा, बिलकुल अंधेरा।

बिल्लू बच्चों को एक बड़े ड्राइंगरूम में ले गया और उन्हें ले जाकर उसने एक बड़ी मेज़ के चारों तरफ बिठा दिया। फिर उसने बारी-बारी प्रत्येक से पूछा, "आप क्या पिएंगे?"

जुम्मी बोला, "पेट्रोल।"

पुतली बोली, "मैं तो बिजली में भुने हुए मोती खाती हूं।"

नाज़ बोली, "मुझे संतरे का रस चाहिए।"

मोहिनी बोली, "मुझे पाइन-एपल का जूस पिला दो।"

उर्फी ने कहा, "मैं आम का रस पीऊंगा।"

बिल्लू ने मेज़ के गिर्द तीन-चार बटन दबाते हुए कहा, "बाकी चीज़ें तो अभी आ जाएंगी। किन्तु पेट्रोल और मोतियों के आने में समय लगेगा।"

"क्यों?" जुम्मी बोला।

"हमारे यहां पेट्रोल कोई नहीं पीता।" बिल्लू बोला, "तुमने देखा होगा, हमारे देश में एक भी मोटरगाड़ी नहीं है।"

"क्यों नहीं है?" मोहिनी ने पूछा।

"इसलिए कि मोटरों के चलने से बहुत एक्सीडेंट होते थे और बहुत-से लोग मर जाते थे। इसलिए हमने मोटरों को छोड़कर सड़कों को चलाना आरम्भ कर दिया। अब एक भी एक्सीडेंट नहीं होता।"

"वास्तव में मोटर चलाना बेहद दकियानूसी मालूम होता है।" पुतली बोली, "आज तक किसीने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया कि बजाय मोटरगाड़ी के चलती हुई सड़कें बना दी जाएं, जिस प्रकार धरती के लिए एक्सेलेटर बनाए जाते हैं, तो यात्रा करना कितना आसान और सुरक्षित हो जाए !"

"तुम्हारा नगर बड़ा विचित्र है।" उर्फी बोला, "हमने तुम्हारे नगर में कोई बाज़ार भी नहीं देखा।"

"बाज़ार की क्या आवश्यकता है ?" बिल्लू बोला, "हमारे यहां बटन दबाने से घर में हर चीज़ अपने-आप आ जाती है।"

"कहां से आ जाती है ?"

"हमारे यहां नगर के नीचे बड़े-बड़े कारखाने और डिपार्टमेंटल स्टोर्स हैं। वहां से सब चीजें आती हैं।"

"कारखानों में क्या तैयार होता है ?"

"खाने-पीने की चीजें, कपड़ा, इमारत का सामान, सिनेमा की पुस्तकें।"

"सिनेमा की पुस्तकें ?" मोहिनी ने पूछा, "तुम्हारा मतलब एक आने वाली गानों की पुस्तकों से होगा, जो हमारे देश में मिलती हैं।"

"नहीं। ये पुस्तकें होती हैं। इन्हें पढ़ने के बजाय देखा जाता है।"

यह कहकर बिल्लू ने मेज़ पर लगा एक बटन दबाया। बटन दबाते ही दूसरे कमरे से चलकर एक ट्राली उसके पास पहुंच गई, जिसपर एक पुस्तक रखी थी। पुस्तक खोलते ही सिनेमा चालू हो गया। यह पुस्तक अपने-आप बोलती और

दिखाती चली जाती थी। बच्चे उस पुस्तक को देखकर बड़े हैरान हुए।

बिल्लू ने कहा, "हमारे यहां हर विषय पर सिनेमा की पुस्तक मिलेगी। उससे घर पर बैठे ही सब कुछ याद हो जाता है और जो सिनेमा की पुस्तक से याद न हो सके, उसे तकिये से याद कराया जाता है।"

"तकिये से, किस तरह ?" मोहिनी ने फिर से पूछा।

अब इतने में मेज़ पर सबके लिए पीने की चीजें, मेज़ के अन्दर से निकलकर हरएक के सामने पहुंच चुकी थीं। पुतली के लिए बिजली से चार्ज किए हुए मोती और जुम्मी का पेट्रोल भी उपस्थित था।

बिल्लू ने कहा, "आप लोग पी लीजिए। इसके बाद थोड़ी देर के लिए आराम कर लीजिए तो मैं आपको अपनी बड़ी बहिन के घर ले चलूंगा।"

"तुम्हारी बड़ी बहिन कहां रहती है ?"

"वह बाहर बाग में रहती है।" बिल्लू बोला, "किन्तु आप पहले आराम करके तरो-ताज़ा हो जाएं, फिर मैं उससे आपकी भेंट का समय ले लूंगा। मेरी बहिन बेहद व्यस्त रहती है। इस कारण जो समय वह बताएगी, उसी समय पर उसकी सेवा में चलना होगा।"

शर्बत वगैरह पीकर बिल्लू अपने मेहमानों को आराम करने के अलग-अलग कमरों में ले गया। बिस्तर पर लेटते ही और तकिये पर सिर रखते ही, बच्चों को मीठे-मीठे गीत सुनाई देने लगे और उन्हें नींद आने लगी। कुछ ही मिनटों में वे सब

सो गए।

बिल्लू उन्हें देखकर मुस्कराता रहा और जब वे लोग गहरी नींद में सो गए तो उसने हरएक के तकिये के पास जाकर एक स्विच दबाया और धीरे से कहा, "इन्हें सोते में हमारी टापू की भाषा सिखा दीजिए।"

दो घंटे के बाद जब धरती के बच्चे उठे तो उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अब वे सब बड़ी आसानी से बिल्लू के साथ हिन्दुस्तानी भाषा में नहीं, बल्कि उसके अपने टापू की भाषा में बातचीत कर रहे हैं।

"यह कैसे हुआ ?" उर्फी ने अचम्भे से पूछा।

"हमारे वैज्ञानिकों ने ज्ञात किया है," बिल्लू बोला, "कि यदि सोते में, स्वप्नावस्था में बच्चों के मस्तिष्क में कोई बात डाल दी जाए तो वह बड़ी आसानी से मस्तिष्क में बैठ जाती है और कभी भुलाई नहीं जा सकती। इसलिए हमने सिखाने-पढ़ाने का यह नया तरीका खोज निकाला है। जो कुछ सिखाना होता है, उसे बिजली के कोड में ढालकर उस तकिये के अन्दर लगा देते हैं। सोते समय मनुष्य के मस्तिष्क में वह सारा ज्ञान अपने-आप ही बैठ जाता है। इस तरह से दो घंटे में एक भाषा सीखी जा सकती है।"

"कमाल है !" नाज़ की आंखें आश्चर्य से खुलने लगीं।

बिल्लू बोला, "इस तरीके से हमारे बच्चे छोटी-सी आयु में बहुत-सी भाषाएं और ज्ञान सीख जाते हैं। इस टापू के लड़के बहुत पढ़े-लिखे और होशियार हैं। हर आदमी अपनी मर्ज़ी के अनुसार छः-सात काम स्वयं ही सीख लेता है और आठ वर्ष की

आयु तक उसे इतना ज्ञान प्राप्त हो जाता है, जितना धरती के लोगों को पचास वर्ष में भी प्राप्त नहीं होता।"

उर्फी ने बात का रुख बदलते हुए कहा, "तुम लोग दिन में कितने घंटे काम करते हो ?"

बिल्लू बोला, "समय की कोई कैद नहीं है। यह आदमी को अपनी मर्ज़ी पर निर्भर है। चाहे तो बारह घंटे काम करे, चाहे तो बारह मिनट भी नहीं।"

"भला यह कैसे हो सकता है ?" उर्फी बोला, "यदि सब लोग केवल बारह मिनट ही काम करें, तो इस टापू में जीवित रहना कठिन हो जाए।"

"नहीं।" बिल्लू ने मुस्कराकर कहा, "हमने ऐसा प्रबन्ध कर लिया है कि कम काम करने से टापू के जीवन में किसी प्रकार का व्यवधान न आएगा।"

"वह कैसे ?"

बिल्लू बोला, "इस टापू के निवासियों को खाने के लिए जितना भोजन चाहिए, वह हम सब ज़मीन के नीचे आॅटोमेटिक कारखानों में तैयार करते हैं। जितना कपड़ा चाहिए, घर का जितना आवश्यक सामान चाहिए, वह हम सब आॅटोमेटिक मशीनों से तैयार कर रहे हैं, जिनपर एक आदमी भी काम नहीं करता...। इसलिए यदि इस टापू के बच्चे काम न करें तब भी कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। अन्तर वहां पड़ता है, जहां भोजन प्राप्त करने के लिए ज़मीन में हल चलाने की आवश्यकता पड़ती है और कपड़े के लिए रुई उगाने या भेड़ें पालने की आवश्यकता होती है। हम तो सारा खाद्य सफल प्रयोग से मिट्टी ही से कारखाने

में तैयार करते हैं और सारा कपड़ा इस तरीके से मिट्टी से बुन लेते हैं। अब हमारी तमाम बुनियादी आवश्यकताएं अत्यन्त फराखानी से मिट्टी से प्राप्त की जाती हैं और ऑटोमेटिक तरीकों से हमारे यहां ऐसी मशीनें काम कर रही हैं जिन्हें पचास वर्ष में शायद एक बार भी देखने की आवश्यकता नहीं है।"

"इसलिए तुम लोग तो अब काम करते नहीं होगे ?"

"नहीं। हम लोग प्रतिदिन कई घंटे काम करते हैं। किन्तु अब हम काम के गुलाम नहीं है। काम हमारे लिए एक खेल है, एक खुशी है, जीवन में प्रसन्नता का एक सहारा है और चूंकि हम काम के गुलाम नहीं हैं, इसलिए अब हम काम को पहले से अधिक उत्तरदायित्व से करते हैं, खुशी से करते हैं और उससे सौ गुना आनन्द उठाते हैं।"

जुम्मी बोला, "तुम्हारे नगर में कोई फौज नहीं देखी। पुलिस का एक सिपाही तक नहीं मिला।"

"फौज की तो वहां आवश्यकता होती है, जहां एक-दूसरे से घृणा होती है। यह तो घृणाहीन देश है। यहां फौज का क्या काम ? और पुलिस की वहां आवश्यकता होती है, जहां एक-दूसरे का हक मारा जाता है। यहां हर बच्चे को इतना आराम प्राप्त है कि उसे किसी दूसरे का हक मारने की आवश्यकता ही नहीं है। तो फिर पुलिस हम क्यों रखें ?" बिल्लू ने हैरान होकर धरती के बच्चों से कहा।

"यदि कोई किसीको जान से मार दे, तो क्या होता है ?" जुम्मी ने पूछा।

"कोई किसीको जान से मारे ही क्यों ?" बिल्लू ने पूछा,

"हमारे यहां तो कभी कोई कत्ल नहीं होता।"

"मान लो," जिम्मी बोला, "मैं बाहर से आकर तुम लोगों पर हमला कर दूं तो…।"

"तुम हमला क्यों करोगे भला ?" बिल्लू ने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए ? मकान ? वह हम मुफ्त देते हैं। खाना ?…जितना चाहो खा लो। कपड़ा ?…जितना चाहो पहन लो। शिक्षा ?…वह यहां मुफ्त है। दवा ?…वह यहां मुफ्त है। फिर तुम्हें क्या चाहिए ?"

"शक्ति।" जुम्मी ने अपना लोहे का बाजू उठाकर कहा।

"शक्ति क्या होती है ?" बिल्लू ने बड़े भोलेपन से कहा, "हम लोग शक्ति क्या जानें ? हम घृणाहीन बच्चे हैं। हम केवल प्रेम जानते हैं।"

जुम्मी लज्जित हो गया। उसने अपना हाथ नीचे कर लिया और धीरे से बोला—

"अजब देश है यह ! अजीब किस्म के बच्चे हो तुम !! चलो, हमें अपनी बहिन से मिला दो, जिसने तुम्हें यह विचित्र शिक्षा दी है।"

"वह केवल मेरी ही बहिन नहीं है।" बिल्लू ने गर्व और स्वाभिमान के मिले-जुले भावों से कहा, "तुम लोग यहां ठहरो। मैं अभी उससे भेंट का समय लेकर आता हूं।"

कुछ मिनटों के पश्चात् ही बिल्लू वापस आ गया। बहुत प्रसन्न दीख रहा था। आते ही ताली बजाकर बोला, "मेरी बहिन तुम्हें बुलाती है। अभी बुलाती है। बड़े भाग्यवान हो तुम लोग। मेरी बहिन ने तुम्हें अभी बुलाया है। वर्ना, उससे भेंट

करने के लिए कई-कई दिन प्रतीक्षा करनी पड़ती है, क्योंकि मेरी बहिन हर समय व्यस्त रहती है।" वे लोग उसके साथ बाहर बाग में चले गए।

वे सब सुन्दर फूलों वाली क्यारियों, नीले पत्थरों वाली सड़कों पर से गुज़रते हुए एक अलूचे के वृक्ष के निकट पहुंचे, जो गुलाबी फूलों से लदा-फदा था। उस वृक्ष के चारों ओर छोटे-छोटे लकड़ी के बेंच लगे हुए थे, जिनपर बहुत-से छोटे-छोटे बच्चे बैठे हुए थे। वातावरण में धीमी-धीमी संगीत की गूंज थी और चारों तरफ पानी के छोटे-छोटे फव्वारे चल रहे थे।

उर्फी ने पूछा, "किन्तु तुम्हारी बहिन कहां है ?"

"वह देखो।" बिल्लू ने अलूचे की एक डाल की ओर संकेत किया।

बच्चों ने घबराकर ऊपर देखा तो उन्हें बिल्लू की बहिन तो न दिखाई दी, अलबत्ता अलूचे की उस डाल पर सफेद परों वाली एक सुन्दर कबूतरी दिखाई दी, जिसके सिर पर कमल के फूलों का मुकुट था। उसके दायें-बायें दो छोटे-छोटे कबूतर थे, जो उसके बच्चे मालूम होते थे, क्योंकि वे भी उसकी तरह ही सफेद परों वाले थे और उनके सिरों पर भी उसी तरह छोटे-छोटे कमल के फूलों के मुकुट थे।

मोहिनी देखकर चिल्लाई, "हमारी फाख्ता, अमन की फाख्ता !"

उर्फी बोला, "हां, वही तो है जिसे ढूंढ़ने के लिए हम यहां तक आए थे ! वही सफेद पर और सिर पर कमल का मुकुट !"

"यह हमारी बहिन है।" बिल्लू ने गर्व से कहा।

"यह सब बच्चों की बहिन है···वास्तव में···हम सबकी बहिन है···" उर्फी बोला।

जुम्मी ने धीरे से कहा, "बहिन, हम तुम्हें लेने आए हैं। जिस दिन से तुम हमसे रूठकर चली आई हो, हमारी धरती तबाह और बर्बाद हो रही है।"

"और यदि हमारी बहिन हमें छोड़ जाएगी तो हम तबाह हो जाएंगे।" बिल्लू अपनी आंखों में आंसू लाते हुए बोला, "तुम हमें छोड़कर कहीं न जाना बहिन !"

"यदि तुम हमारे साथ न चलोगी तो हमारी प्यारी धरती पर एक भी इंसान जीवित नहीं बचेगा।" नाज़ ने अत्यन्त गिड़-गिड़ाते हुए कहा।

कबूतरी बोली, "मैं तो आना नहीं चाहती थी, किन्तु तुम लोगों ने स्वयं ही लड़ाई-झगड़ा करके मुझे यहां आने पर बाध्य कर दिया।"

"हम लज्जित हैं," जुम्मी सिर झुकाकर बोला, "अब कभी तुम्हारा कहा न मोड़ेंगे। अब कभी खून-खराबा नहीं करेंगे। अब हमारे साथ चलो। हमारी धरती को बर्बाद होने से बचा लो···।"

"चाहे हमारा प्रिय टापू नष्ट हो जाए !" बिल्लू उदास होकर बोला।

"यह घृणाहीन टापू तो पुराना है," चिड़िया बोली, "और अपनी जान से अधिक प्रिय है। किन्तु धरती के बच्चों की इच्छा भी पूरी करना चाहती हूं। बच्चों का कहना तो मैं टाल ही नहीं सकती।"

"...तो दोनों स्थानों पर तुम कैसे रह सकती हो बहिन ?" बिल्लू ने पूछा।

फाख्ता चुप हो गई। अन्त में सोच-सोचकर बोली, "धरती के बच्चो ! तुम मेरे ये दोनों बेटे ले जाओ। एक बेटा संधि कराने वाला है और दूसरा आपस में मेल-जोल बढ़ाने वाला। पहले तुम इन दोनों बेटों को ले जाओ और इनका कहा मानो, और यदि तुमने इनका कहा माना और इनके बताए हुए तरीके को व्यवहार में लाए तो मैं तुमसे प्रतिज्ञा करती हूं कि मैं बहुत शीघ्र तुम्हारे पास आ जाऊंगी।"

इतना कहकर फाख्ता ने अपने बेटों को इशारा किया और इशारा पाते ही वे दोनों छोटे-छोटे कबूतर अलूचे की फूलों-भरी डाल से उड़कर बच्चों के पास चले आए। एक कबूतर मोहिनी के कंधे पर बैठ गया, दूसरा उर्फी के कंधे पर ; और ज्योंही उन कबूतरों ने उनके कंधों पर बैठकर अपने पर फड़फड़ाए, हवा में एक गीत गूंजा और बच्चों को लगा जैसे वे सब उस गीत की जादू-भरी हवा में उड़ते हुए टापू से बाहर चले जा रहे हैं।

बहुत शीघ्र उन लोगों को अपनी उड़नतश्तरी मिल गई और वे सब बच्चे उन दोनों कबूतर-बच्चों को लेकर उस उड़न-तश्तरी में सवार हो गए और लाखों मील की गति से वापस धरती की ओर जाने लगे।

मगर अब इस यात्रा की विचित्र घटना यह थी कि वे लोग जिधर से गुज़र जाते थे, उधर से मीठे-मीठे गीतों की गूंज सुनाई देती थी और चारों ओर से उड़नतश्तरी पर फूलों की वर्षा हो रही थी।

और जब वे माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचे, तो उन दोनों कबूतर-बच्चों ने मिलकर गाना आरम्भ किया। यह मानवता का एक ऐसा राग था कि इसे सुनते ही धरती के लोगों के दिलों से एक-दूसरे के लिए द्वेष-भाव मिटने लगा, जैसे सैकड़ों वर्ष की गंदगी धोई जा रही हो।

ज्यों-ज्यों वह गीत ऊंचा होता गया, त्यों-त्यों समुद्र का पानी धरती से नीचे ढलता गया। फिर पहाड़ों के नीचे घाटियों और घाटियों के नीचे वादियों और वादियों के नीचे मैदान और शहर उभरने लगे। फिर खेतों में हल चलने लगे, दरियाओं में किश्तियां चलने लगीं, सड़कों पर लारियां दौड़ने लगीं। फिर जो ज़मीन जली हुई थी, वह हरियाली से भर गई और जो टहनियां सूखी थीं, उनपर फूल आ गए और सारी दुनिया की सारी फुलवारियां मानव-प्रेम करने वालों से भर गईं और इस सुन्दर धरती पर हमारे बच्चे, जुम्मी और उर्फी, नीलू और नाज़, मोहिनी और पुतली सब सुख और शांति से रहने लगे।

○ ○ ○

आशा है, यह उपन्यास आपको रुचिकर लगा होगा। इसके बारे में हम आपके बहुमूल्य विचारों का स्वागत करेंगे। राजपाल एण्ड सन्ज़ का सदैव यह प्रयास रहा है कि उत्कृष्ट प्रकाशनों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया जाए; और यह सब आपके हार्दिक सहयोग पर ही निर्भर है। यदि आप कथा-साहित्य पढ़ने में रुचि रखते हों तो हमारा उत्कृष्ट उपन्यास-साहित्य मंगवाकर पढ़िए अथवा पुस्तकों का चुनाव करते समय हमें लिखिए। हम आपकी हर सम्भव सहायता करने का प्रयास करेंगे।